30

॥ श्रीः ॥

रमल नवरत्न

और

रमल दानियाल.

पं. हरिप्रसाद भगीरथजीका

प्राचीन पुस्तकालय,

कालबादेवी रोड़—रामवाड़ी, बम्बई.

८ᐟ८.

सन १९२५.

॥ श्रीः ॥

सीतारामात्मज-परमसुखोपाध्यायकृत--
रमलनवरत्न.

रमलनवरत्नचन्द्रिका नाम भाषाटीकासहित.

और

भाषावार्तिक रमलदानियाल.

ये दोनों ग्रंथ

वेरीनिवासी द्विज शालग्रामात्मज पण्डित बस्तीरामजीसे

सरल हिन्दीभाषा करवायके

गौड़वंशोद्भव श्रीयुत हरिप्रसाद भगीरथजी

इन्होंनें

मुंबईमें

"गुजराती" छापखानेमें छपवाके प्रसिद्ध किया.

आवृत्ति ४.

संवत् १९८१. शकः १८४६.

सूचना.

भाषाटीकासहितं रमलनवरत्नम् रमलदानियालसहितं च.

विदित होवे कि–यह रमलनवरत्न ग्रंथ अति शुद्ध करके ऊपर मूल श्लोक लिखके नीचे हिन्दी सरल भाषा बनाई है. यह अपूर्व ग्रंथ जिला रोहतक, वेरी ग्रामनिवासि गौड़वंशोद्भव द्विज शालग्रामात्मज पंडित वस्तीरामजीने निजभाषामें उल्था किया है; इसका मूलभी इन्होंनेही शुद्ध किया है और जहां मूलमें कछु भ्रांति है वहां टिप्पणी बनादी है. सज्जनलोगोंको मालूम होवे कि, इसप्रकारका शुद्ध ग्रंथ अबतक नहीं बना है, इसमें अनेक प्रकारके सब चक्र तथा भाषा ऐसी सुगम बनादी है कि जिसके देखनेसे स्वल्प बुद्धिवाले जनभी प्रश्नविद्यामें निपुण होवेंगे और इसही ग्रंथके पीछे यह भाषा " रमलदानियाल" यवनग्रंथ, हिंदी भाषामें सरल करके लगा दिया है. यह ग्रंथ श्रीयुत हरिप्रसाद भगीरथजीने अपने व्ययसे बनवाया है इसलिये इसका अधिकारी अन्य कोई नहीं है.

पंडित–

बस्तीराम मुहल्लह छाजयान.

मयाऽयं ग्रन्थः बहुश्रमेण सर्वेषामल्पधियां हिताय सरलनृभाषयाऽनुवादितः। शूर्पो यथा तुषादीनपगुणान् हित्वा शुद्धान्नमेव गृह्णाति तथैवातो विद्वांसोऽपगुणं हित्वा सारं गृह्णन्तु। खलबुद्धिस्तु चालनीवदपगुणमेव ग्रहिष्यति चेन्न क्षतिर्ममेति विदुषां प्रार्थना। शुभम्भूयात्।

यह ग्रंथ दूसरी आवृत्ति छापनेके समय उक्त टीकाकारने फिरभी बहुत शुद्ध कर दिया है. कहीं २ टीकाभी बढ़ादी है.

श्रीः

अथ रमलनवरत्नकी विषयानुक्रमणिका।

अथ द्वितीयं बलाबल रत्न.

प्रश्नज्ञानके लिये तिसरा रत्न.

प्रश्नकथनं चतुर्थं रत्नम्.

रमलदानियाल अनुक्रमणिका

अथ मुष्टिप्रश्नकथनम्.

॥ इति अनुक्रमणिका समाप्ता ॥

श्रीः

अथ रमलनवरत्नम्

भाषानुवादसमलङ्कृतम् ।

लम्बोदरं विघ्नविनाशनं च नत्वा भवानीतनयं गजास्यम् ॥
यस्य प्रसादेन सुराः समस्ताः स्वे स्वे च तिष्ठन्ति पदे
सदैव ॥ १ ॥ नत्वा श्रीरमलाचार्यान् परमाद्यसुखाभिधैः ॥
उद्धृतं रमलाम्भोधेर्नवरत्नं सुशोभनम् ॥ २ ॥

अर्थ—श्रीः । जिसकी प्रसन्नतासे संपूर्ण देवता सदैव अपने २ स्थानमें स्थित हो रहे हैं तिस लंबोदर, विघ्नविनाशी, हस्तीके मुखसदृश मुखवाले, पार्वतीके पुत्र गणेशजीको नमस्कार करके ॥ १ ॥ तथा रमलके आचार्योंको नमस्कार करके परमसुख नामवाले ग्रंथकर्त्ताने रमलार्णवमेंसे यह सुंदर नवरत्न निकाला है ॥ २ ॥

श्रीकाशिराजशुभगौतमवंशमुख्यबलवण्डसिंहनृपतेरवसानसिंहः ॥
मंत्री तदन्वयभवोऽतिपराक्रमाढ्यस्तस्माच्च तस्य तनयात्
खलु लब्धवृत्तिः ॥ ३ ॥ सनाढ्योपाध्यायद्विजकुलवरे मे
जनिरभूत् पिता सीतारामो वरमतिरनूपा च जननी ॥
वसन् काश्यां तीर्थाटनकृतधिया दैवविहितादवन्त्यां संप्राप्तो
रुचिरनवरत्नान्यकरवम् ॥ ४ ॥

अर्थ—श्रीकाशिराज शुभ गौतमवंशमें मुख्य, बलवण्डसिंह राजाका अवसानसिंह नामवाला मंत्री, तिस काशिराजके ही कुलमें अत्यंत पराक्रमी भया. तिससे और तिसके पुत्रसे लब्ध भई है आजीविकाकी वृत्ति जिसकी ऐसा मैं ॥ ३ ॥ तथा सनाढ्य ब्राह्मणके उत्तम कुलमें मेरी उत्पत्ति होती भई; मेरा पिता उत्तम सीताराम भया; माता अनूपा नामवाली थी; सो मैं काशीजीमें बसता हुआ तीर्थाटनकी बुद्धि-

करके, दैवयोगसे उज्जैन नगरीमें प्राप्त होता भया; तहां रमलनवरत्नोंको करता भया ॥ ४ ॥

उष्णीषे कर्णयोः कण्ठे बाह्वोः पाण्योर्न्यसेत्क्रमात् ॥
द्वे द्वे चैकं च द्वे द्वे च शिष्याणां भूषणाय च ॥ ५ ॥

अर्थ—पगड़ीमें, कानोंमें, भुजाओंमें, हाथोंमें क्रमसे दो, दो, एक, दो, दो, ऐसे नव रत्न धारण करै; इस प्रकार शिष्योंके आभूषणके वास्ते नवरत्न बनाये हैं॥५॥

अथ रत्नसंज्ञा ।

संज्ञारत्नं च प्रथमं द्वितीयं च बलाबलम् ॥ प्रश्नोपकरणं रत्नं तृतीयं परिकीर्तितम् ॥ ६ ॥ चतुर्थं प्रश्नकथनं पञ्चमं चावधे-स्तथा ॥ षष्ठं च मुष्टिकथनं मूकप्रश्नं च सप्तमम् ॥ ७ ॥ चौरस्य नामकथनमष्टमं परिकीर्तितम् ॥ नवमं वर्षपत्रस्य साधनं समुदा-हृतम् ॥ ८ ॥ नवरत्नात्मको ग्रन्थो रमलशास्त्रेऽतिशोभनः ॥ दुर्जनाय न दातव्यो रक्षणीयः सुरत्नवत् ॥ ९ ॥ रमलशास्त्रेषु प्रधानं पाशकं तद्विधिं ब्रुवे ॥

अथ रत्नसंज्ञा ॥ प्रथम संज्ञारत्न है[१]; दूसरा बलाऽबल देखनेका रत्न है[२]; तीसरा प्रश्नोपकरण[३] प्रश्नके साधन करनेवाला है ॥ ६ ॥ चौथा प्रश्नकथन[४]; पांचवां अवधिकथन[५], छटा मुष्टिकथन[६], सातवां मूकप्रश्न कहनेका है[७] ॥ ७ ॥ आठवां रत्न चौरनामकथनका है[८], नवमा रत्न वर्षपत्र बनानेका कहा है[९] ॥ ८ ॥ यह रमलनवरत्नात्मक ग्रंथ रमलशास्त्रोंमें अत्यंत सुंदर है, दुर्ज्जनके वास्ते नहीं देना. सुंदर रत्नकी तरह रक्षित करना योग्य है ॥ ९ ॥ रमलशास्त्रोंमें पांशोंकी मुख्यता है, इसलिये तिनकी विधिको कहते हैं—

अथ पाशकनिर्माणम् ।

वेदशून्याङ्कितं तूर्ध्वं तदधः खद्वयाङ्कितम् ॥ १० ॥ पार्श्वे द्व्येकाङ्कितं त्वेवं पाशाष्टकद्वदं कुरु ॥ द्विधा कीलकयोः प्रोतं शिथिलं वेदसङ्ख्यया ॥ ११ ॥ एवं पाशयुगं कुर्यान्मी-

नार्केऽहर्निशासमे ॥ घटनं पाशकानां च ततः शून्यं च कारयेत् ॥ १२ ॥

अर्थ–अब पांशे बनानेकी विधिको कहते हैं–ऊपरको चार शून्य, नीचे दो शून्य ॥ १० ॥ पशवारोंमें दो, एक, ऐसे शून्य करै; इस प्रकार आठ दृढ़ पांशे बनावे. फिर अलग २ दो २ कीलोंमें शिथिलतासे चार २ परो देवै ॥ ११ ॥ ऐसे पांशों-का जोड़ा बनवावे. मीनकी संक्रांतिमें राति दिन बराबर हो उस दिन पांशोंको बनवावे. उसी दिन तिनमें शून्य बनवावे ॥ १२ ॥

मेषसंक्रान्तिदिवसे ताभ्यां प्रश्नं च कारयेत् ॥ पट्टिकायां शुभदिने प्रश्नार्थं पातयेत्सुधीः ॥ १३ ॥ शुक्रभौमशनिवासरे तथा तारिखे च त्रितये त्रयोदशे ॥ पञ्चमेऽपि च तथैकविं-शतौ वेदनेत्रशरनेत्रके तथा ॥ १४ ॥

अर्थ—फिर मेषकी संक्रांतिके दिन तिनसे शुभदिनमें प्रश्न करै; पंडित जन पट्टिकापर फेंकै ॥ १३ ॥ शुक्र, मंगल, शनि इन वारोंमें तीसरी[३], पांचवी[५], तेरहवीं[१३]. इकीसवीं[२१], चौवीसवीं[२४] तथा पचीसवीं तारीखके (चंद्रतारीखके) दिन ॥१४॥

दुर्दिनेन रहिते दिने तथा मेघछन्नदिवसे च वर्जयेत् ॥ सार्द्धयामनिशिवासरार्द्धके पाशकं रमलविन्न पातयेत् ॥ १५ ॥ ल्ह्यानं पाशके योज्यं स्वेष्टदेवं गुरुं स्मरन् ॥ पाशकं मन्त्रये-दादौ सप्तवारं ततः क्षिपेत् ॥ १६ ॥

अर्थ–दुर्दिन अर्थात् अंधकार आदिसे अशुभ दिन तथा मेघोंसे आच्छादित (जिस दिन घटाटोप होरहा हो,) ऐसे दिनमें पांशे नहीं डालै; (प्रश्न न करै,) डेढ़ प्रहर दिन चढ़े पीछे, वा दिन छिपेसे डेढ़प्रहर रात्रि गये पीछे रमलशास्त्रका जाननेवाला जन पांशे नहीं डालै ॥ १५ ॥ ल्ह्यान शकल पांशोंपर बनाना पीछे स्वेष्टदेव, गुरुका स्मरण करता हुआ पंडित जन पहले सातवार मंत्र पढ़के फिर पांशे डालै ॥ १६ ॥

अथ मंत्रः ॥ ॐ नमो भगवति देवि कूष्माण्डिनि सर्वकार्य-

---

१ 'सायने मेषगे रवौ' इत्यपि पाठः । २ 'सार्द्धयामपरतस्तु वासरे' इत्यपि पाठः ।

प्रसाधिनि सर्वनिमित्तप्रकाशिनि एह्येहि त्वर त्वर वरं देहि
लिहि लिहि मातङ्गिनि सत्यं ब्रूहि ब्रूहि स्वाहा ॥ १ ॥

अर्थ—मंत्रः ॥ " ॐ नमो भगवति देवि कूष्माण्डिनि सर्वकार्यप्रसाधिनि सर्वनिमित्तप्रकाशिनि एह्येहि त्वर त्वर वरं देहि लिहि लिहि मातङ्गिनि सत्यं ब्रूहि ब्रूहि स्वाहा " ॥ १ ॥ यह देवीजीकी प्रार्थनाका मंत्र है. इसका इसीप्रकार संस्कृतमें ही उच्चारण करना चाहिये ॥

पाशकौ च ततो योज्यौ प्रस्तारं कारयेत्सुधीः ॥ वक्ष्यमाणप्रकारेण तस्मात्प्रश्नं वदेद्बुधः ॥ १७ ॥ शून्यस्य तु लिखेच्छून्यं तिर्यग्रेखां तु शून्ययोः ॥ रेखयोः शून्ययोर्योगे रेखां कुर्यात् खरेखयोः ॥ १८ ॥ शून्यमेवं भवेद्योगः सर्वत्रैवं युतिं कुरु ॥ ऊर्ध्वाऽधःक्रमयोगेन पाशकद्वययोगतः ॥ १९ ॥

अर्थ—उक्त मंत्रका उच्चारण कर. पीछे पाशोंको योजन करै (डालै). फिर पंडितजन वक्ष्यमाण (इस आगे कहे हुए) प्रकारकरके प्रस्तार करै फिर तिस प्रस्तारसे बुद्धिमान् जन प्रश्नफल कहै ॥ १७ ॥ प्रस्तार बनानेकी विधि कहते हैं—प्रथम पांशे डालै तिनका रूप यह है

० ००	० ०
० ००	० ०

तहां फकत् एक० ऐसे शून्यका शून्य लिखे. दोशून्योंकी (००) तिरछी रेखा लिखे, दो रेखाओंके तथा दो शून्योंके योगमें रेखा बनावे और शून्य तथा रेखाके योगमें शून्य करै. ऊपर और नीचेके क्रमयोगकरके तथा दो पांशोंके योगसे ऐसी ही सब जगह युक्ति करै ॥ १८ ॥ १९ ॥

वामक्रमेण खण्डानि भवन्ति श्रुतिसंख्यया ॥ तिर्यक्क्रमेण च पुनः पञ्चमाद्वेदसंख्यकम् ॥ २० ॥

अर्थ—वामक्रमकरके चार संख्या प्रमाण खंड [शकल] बनावे, पीछे पांचवेंसे लेकर चारखंड तिरछे क्रमसे बनावे. अर्थात् प्रथमादि चार शकलोंके ऊपर २ की एक एक शून्य तथा रेखाको यथाक्रमसे ग्रहण कर पांचवीं शकल बनावे, फिर सबकी दूसरी २ जगह तिरछे क्रमसे लेना, इस प्रकार ६ शकलैं बनेंगी, यह तिरछा क्रम कहलाता है ॥ २० ॥

एवमष्टदलं कुर्यात्तेभ्यो दलचतुष्टयम् ।। आद्यद्वितीययोगेन नवमं शकलं भवेत् ।। २१ ।। तुर्यतृतीययोगेन दशमं शकलं कुरु ।। सुतार्योर्लाभखण्डं स्यात्सप्तमाष्टमयोर्व्ययम् ।। २२ ।।

अर्थ—ऐसे अष्टदल (आठ शकल) बनाके तिनसे अन्य चार दल बनावे. पहिले[1] और दूसरे[2] खंडसे नवमी शकल बनावे ।। २१ ।। चौथी और तीसरी शकलसे[3] दशवीं शकल बनावे, पांचवीं[4] और छँठीं शकलसे ग्यारहवीं शकल करै. सातँवीं और आठवीं शकलसे बारहवीं शकल बनावे. यहां दो २ शकलोंका जर्ब किया जायगा. दो शून्योंकी व दो रेखाओंकी रेखा बनेगी. अन्यथा शून्य बनेगा ।। २२ ।।

नन्ददिक्खण्डयोर्विश्वं रुद्रार्काभ्यां सुरेन्द्रकम् ।। विश्वेन्द्राभ्यां पञ्चदशं शकलं परिकीर्तितम् ।। २३ ।। आद्यपंचदशाभ्यां च षोडशं शकलं कुरु ।। एवं रसेन्दुखण्डानां प्रस्तारं च भवेत्किल ।। २४ ।।

अर्थ—नवमें और दशवें खंडसे तेरहवां खंड बनावे. ग्यारहवें और बारहवें खंडसें चौदहवीं शकल बनावे, तेंहरवीं और चौदहवीं शकलसे पंद्रहवीं शकल बनावे ।। २३ ।। पहली और पंदहवीं शकलसे सोलहवीं शकल बनावे. ऐसे सोलह खंडों (शकलों) का प्रस्तार बनता है ।। २४ ।।

वेदतत्त्वोपरिकृतं रम्लशास्त्रं च सूरिभिः ।। तेषां भेदाः षोडशैव न्यूनाधिक्यं न जायते ।। २५ ।। तस्माद्रम्ले षोडशैव शकलानि कृतानि वै ।। प्रस्तारे षोडश ह्येवं गृहाः प्रोक्तास्तथा बुधैः ।। २६ ।। इति पाशकनिर्माणं पाशकोत्पादनं च ।।

अर्थ—चार तत्त्व अर्थात् अग्नि[1], वायु[2], जल[3] व पृथ्वी[3] इन तत्त्वोंपर विद्वानोंने रम्लशास्त्र बनाया है. तिन चार तत्त्वोंके (एक २ शकलमें चार २ खंड होनेसे) सोलहही भेद कहे हैं; कम ज्यादा नहीं हो सकतें ।। २५ ।। इसलिये रम्लमें सोलह ही शकल बनाई गई हैं, इस प्रकारसे पंडित जनोंने प्रस्तारमें सोलह घर कहे हैं ।। २६ ।। इति श्रीरम्लचन्द्रिकानामभाषाटीकायां पाशकनिर्माणं पाशकोत्पादनं च समाप्तम् ।।

लह्यानं कब्जुद्दाखिलं ततः कब्जुलखारिजम् ॥ जमातं फरहा चैवोकलांकीशौ प्रकीर्तितौ ॥ २७ ॥ हुमरा च बयाजाख्यं नुस्रतुलखारिजं ततः ॥ नुस्रतुल्दाखिलं चैवातवेखारिज-संज्ञकम् ॥ २८ ॥

अर्थ—लह्यानं[1], ≐ कब्जुद्दाखिलं[2] ÷ कब्जुलखारिजं[3] ∸ जमातं[4] ≡ फरहां[5] ÷ उकलां[6] ÷ अंकीश[7] ≡ ॥ २७ ॥ हुमरां[8] ≐ बयाजं[9] ∸ नुस्रतुलखारिजं[10] ≐ नुस्रतुल्दाखिलं[11] ≡ अतवेखारिजं[12] ⋮ ॥ २८ ॥

नकी चातवदाखीलमिज्जतमा तरिखाभिधम् ॥ शकुनक्रमेण खण्डानि कीर्तितान्येव षोडश ॥ २९ ॥ ऊर्ध्वं शून्यं त्रिरेखाधो लह्यानं तद्विपर्ययम् ॥ अंकीशं च भवेद्रेखा शून्यं तच्च पुन-स्तथा ॥ ३० ॥

अर्थ—नकी[13] ÷ अतवेदाखिलं[14] ≡ इज्जतमां[15] ∸ तरिखां[16] ⋮ ऐसे शकुन-पंक्तिके क्रमसे ये सोलह शकलें कही हैं ॥ २९ ॥ ऊपर शून्य नीचे तीन रेखा यह लह्यान ≐ शकल है. तिससे उलटी अंकीश, ≡ और रेखा, शून्य, रेखा, शून्य ऐसी ÷ ॥ ३० ॥

कब्जुद्दाखिलकं ज्ञेयं व्यस्तं कब्जुलखारिजम् ॥ वेदरेखा जमातं स्याद्वेदशून्यं तरीखकम् ॥ ३१ ॥ शून्ये रेखा ततः शून्यं फरहा तद्विपर्यये ॥ नकीदलं चोकला वै रेखे शून्या-न्तरस्थिते ॥ ३२ ॥

अर्थ—कब्जुद्दाखिल है, इससे उलटी ∸ कब्जुलखारिज शकल है; चार रेखा-ओंकी जमात ≡ और चार शून्योंकी तरीखा ⋮ शकल होती है ॥ ३१ ॥ दो शून्य, रेखा, फिर शून्य ÷ ऐसी फरहा शकल है, इससे उलटी ÷ ऐसी नकी शकल है; दो रेखा शून्योंके बीचमें स्थित हों ÷ ऐसी उकला शकल है ॥ ३२ ॥

व्यस्तं चेज्जतमा ज्ञेया रेखा शून्यं द्विरेखके ॥ हुमरा व्यस्तरूपा सा बयाजं परिकीर्तितम् ॥ ३३ ॥ शून्ये रेखे नुस्रतुलखारिजं तद्विपर्यये ॥ नुस्रतुल्दाखिलं शून्यं त्रयं रेखान्वितं भवेत् ॥ ३४ ॥

अर्थ-इससे उलटी ⁝ ऐसी इज्जतमा जाननी; रेखा, शून्य, दो रेखा ⁝ ऐसी हुमरा है; इससे उलटी ⁝ बयाज है ॥ ३३ ॥ दो शून्य, दो रेखा ⁝ ऐसी नुस्तुतुल्खारिज है, इससे विपरीत ⁝ नुस्तुतुल्दाखिल है, तीन शून्य, एक रेखा ⁝ ऐसी ॥ ३४ ॥

अतवेखारिजं व्यस्तमतवेदाखिलं भवेत् ॥ शकलानां स्वरूपं च दर्शितं पूर्वसम्मितम् ॥ ३५ ॥ इति शकलनामानि स्वरूपं च ॥

अर्थ—अतवेखारिज है; इससे उलटी ⁝ अतवेदाखिल है; इस प्रकारसे पूर्व आचार्योंके संमतसे शकलोंका स्वरूप दिखाया है ॥ ३५ ॥ इति शकलनामानि स्वरूपं च ॥

यस्य चोर्ध्वाऽधोभागौ खरेखान्वितौ खारिजदाखिलं तद्विलोमाद्भवेत् ॥ रेखया संयुतौ तौ यदा साबितन्तद्विपर्याऽन्वितो मुन्कलीवं भवेत् ॥ ३६ ॥

अर्थ—जिसके ऊपरका और नीचेका भाग शून्य और रेखासे युक्त हो ⁝ । ⁝ । ⁝ । ⁝ । ऐसी खारिज और इससे उलटी ⁝ । ⁝ । ⁝ । ⁝ ऐसी दाखिल शकल होती हैं. दोनों भाग रेखासे ही युक्त हों ⁝ ⁝ ⁝ ⁝ ऐसी साबित और इससे विपरीत ⁝ ⁝ ⁝ ⁝ ऐसी मुन्कलीवसंज्ञक शकल कहलाती है ॥ ३६ ॥

लह्यानातवखारिजे नुस्तुत्खारिजकब्जुल्खारिजे तदाख्यम् ॥ सर्वे ते बलयुक्ता दिने पुमांसः ज्ञेयास्ते च शुभाशुभाः क्रमेण ॥ ३७ ॥ अंकीशातवदाखिले च कब्जुल्दाखिलं नुस्रुदाखिलं तदाख्यम् ॥ सर्वे ते बलयुक्ता निशाविभागे योषिदेका न सत्रयः शुभाः स्युः ॥ ३८ ॥

अर्थ-लह्यानें, अतवेखारिजें, नुस्रुत्खारिजें, कब्जुलखारिजें, ये सब चार शकल खारिज हैं और दिनमें वलवान् हैं; और पुरुषसंज्ञक हैं ये सब क्रमसे शुभ अशुभ जानना ॥ ३७ ॥ अंकीशें, अतवेदाखिलें, कब्जुल्दाखिलें, नुस्रुदाखिलें, ये सब शकल दाखिल हैं, रात्रीमें बलवान् हैं; और स्त्रीसंज्ञक हैं. एक अशुभ है और 'पिछली' तीन शुभ हैं ॥ ३८ ॥

जमातेज्जतमे हुम्रा बयाजं साबिताह्वयम् ॥ बलयुक्तं च संध्यायां क्लीबौ मध्ये त्वसच्छुभम् ॥ ३९ ॥ पुमांस्तु हुमरा स्त्री स्याद्बयाजोऽन्यौ नपुंसकौ ॥ स्वल्पवीर्यान्वितौ ज्ञेयौ हुमरा च बयाजकौ ॥ ४० ॥

अर्थ—जमातँ, इज्जतमा, हुमरां, बयाजँ, ये सावितसंज्ञक हैं. संध्यासमयमें बलवान् हैं; पहिले दो (जमात इज्जतमा ये) नपुंसक हैं, मध्यम हैं, फिर एक अशुभ है, एक शुभ है ॥ ३९ ॥ हुमरा शकल पुरुषसंज्ञक है. बयाज स्त्री है. अन्य ' जमात इज्जतमा ' ये दो नपुंसकसंज्ञक हैं. इनमें हुमारा, बयाज ये दोनों स्वल्पवीर्यवाले जानने ॥ ४० ॥

तरिखा फरहोल्का च नकी मुन्क्लीवसंज्ञकाः बलयुक्ताश्च सन्ध्यायां क्लीबा ज्ञेयौ शुभाशुभौ ॥ ४१ ॥ पुमांस्तु फरहा ज्ञेयः स्वल्पवीर्यान्वितस्तथा ॥ त्रयः क्लीबाः स्त्रीस्वभावाः क्लीबे त्वेवं विमर्शय ॥ ४२ ॥

अर्थ–तरिखां, फरहां, उल्कां, नकी, ये मुन्कलीवसंज्ञक हैं और संध्यासमयमें बलवान् है तथा नपुंसक हैं. पहिले दो शुभ और पिछले अशुभ हैं ॥ ४१ ॥ तहां फरहा पुरुषसंज्ञक है और स्वल्पवीर्यवाली है; बाकी रही तीन शकलें नपुंसकसंज्ञक हैं; तहां नपुंसकमें भी ऐसा विचारो कि, इनका स्त्रीस्वभाव है ॥ ४२ ॥

लह्यानातवखारिजौ नुस्त्रुत्कब्जुलखारिजौ ॥ आग्नेयशकलं पूर्वे बलाढयं पीतवर्णकम् ॥ ४३ ॥ हुम्रा चातवदाखिलं फरहेज्जतमा तथा ॥ वायवीयं च वारुण्यां बलाढयं रक्तवर्णकम् ॥ ४४ ॥

अर्थ—लह्यान, अतवेखारिज, नुस्त्रत्खारिज, कब्जुलखारिज, ये शकल अग्निकी हैं और पूर्वदिशामें बलवान् हैं तथा इनका पीला वर्ण है ॥ ४३ ॥ हुमरा, अतवेदाखिल, फरहा, इज्जतमा, ये वायुकी शकलें हैं तथा पश्चिमदिशामें बलाढय और रक्तवर्णवाली हैं ॥ ४४ ॥

तरिखा च बयाजाख्यं नकी नुस्त्रुच दाखिलम् ॥ आप्यं च बलसंयुक्तमुत्तरे श्वेतवर्णकम् ॥ ४५ ॥ कब्जुलदाखिलमंकी-

शमुकला च जमातकम् ॥ पार्थिवं दक्षिणाशायां बलाढ्यं श्यामवर्णकम् ॥ ४६ ॥

अर्थ—तरीखा, बयाज, नकी, व नुस्रुदाखिल, ये जलतत्त्वकी शकलें हैं और उत्तरादिशामें बलवान् हैं तथा इनका श्वेत वर्ण है ॥ ४५ ॥ कब्जुल्दाखिल, अंकीश व उकला, जमात ये पृथ्वी तत्त्वकी शकलें हैं, दक्षिण दिशामें बलवान् हैं और श्यामवर्णवाली हैं ॥ ४६ ॥

लह्याननुस्रुदाखीलौ चापमीनौ गुरोः स्मृतौ ॥ सिंहौ नुस्रुतुल्खारीजकब्जुल्दाखिलकौ रवेः ॥ ४७ ॥ जमातेज्जतमे युग्मकन्ये ज्ञेयौ बुधस्य तु ॥ बयाजं च तरीखं च कर्कौ चन्द्रस्य कीर्तितौ ॥४८॥

अर्थ—लह्यान, नुस्रुतदाखिल, ये धनु ९ तथा मीन १२ राशिकी और बृहस्पतिकी शकलें हैं और नुस्रुतुल्खारिज कब्जुल्दाखिल ये सिंहराशिकी तथा सूर्यकी शकलें कहलाती हैं ॥ ४७ ॥ जमात, इज्जतमा ये शकलें मिथुन और कन्या राशिकी तथा बुधकी हैं. बयाज, तरीख, ये कर्क राशिकी हैं और चंद्रमाकी शकलें हैं ॥४८॥

फरहातवदाखीलौ तुलोक्षाणौ भृगोः स्मृतौ ॥ हुमरा च नकी प्रोक्तौ मेषाली भूसुतस्य च ॥ ४९ उल्कांकीशौ शनेः प्रोक्तौ नक्रकुंभौ च सूरिभिः ॥ कब्जुलातवखारीजौ राहुकेत्वोर्घटैणकौ ॥ ५० ॥

अर्थ—फरहा, अतवेदाखिल, ये तुला तथा वृषराशिकी शकलें हैं और शुक्रकी हैं. हुमरा, नकी, मेष तथा वृश्चिक राशिकी और मंगलकी शकलें हैं ॥ ४९ ॥ उलका, अंकीश ये शनैश्चरकी शकलें हैं तथा मकर और कुंभ राशिकी विद्वानोंने कही हैं; कब्जुल्खारिज अतवेखारिज, ये राहु केतुकी शकलें हैं तथा कुंभ और मकर राशिकी हैं ॥ ५० ॥

चराह्वयं मुन्कलीवं साबितं च स्थिराह्वयम् ॥ द्विःस्वभावाह्वयं ज्ञेयं खारिजं दाखिलं तथा ॥ ५१॥

अर्थ—मुन्कलीवसंज्ञक सब शकलें चरसंज्ञक हैं. साबितसंज्ञक शकलें स्थिर कही हैं और खारिज तथा दाखिल शकलें द्विस्वभाव कहाती हैं [यह पूर्वोक्त सब शकलोंका स्वभावादिक आगे लिखे हुए चक्रमें स्पष्ट समझो] ॥ ५१ ॥

पीछे कहा हुआ सब भावार्थ-

शकुन पंक्ति-

लह्यान	कब्जु दाखिल	कब्जुल् खारिज	जमात	फरहा	उकला	अंकीश	हुमरा	बयाज	नुस्रुत खारिज
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
≑	∓	±	≣	÷	≑	≡	≡	≡	≐
खारिज	दा खिल	खारिज	साबित	मुन्क लीब	मुन्क लीब	दाखि ल	साबित	साबित	खारिज
द्विस्व भाव	द्विस्व भाव	द्विस्व भाव	स्थिर	चर	चर	द्विस्व भाव	स्थिर	स्थिर	द्विस्व भाव
पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	नपुंसक	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष
दिन	रात्रि	दि.	सं.	सं.	सं.	रा.	सं.	सं.	दिन
शुभ	शुभ	अशुभ	म.	शुभ	अशु.	अशु.	अशुभ	शुभ	शुभ
पू.	द.	पू.	द.	प.	द.	द.	प.	उत्तर	पूर्व
अग्नि	पृथ्वी	अ.	पृ.	वायु	पृ.	पृथ्वी	वायु	जल	अग्नि
९	५	११	३	७	१०	११	१	४	५
गुरु	सूर्य	राहु	बुध	शुक्र	श.	श.	भौम	चंद्र	सूर्य
चर	स्थिर	चर	स्थिर	चर	चर	स्थिर	स्थिर	स्थिर	चर

इस चक्रमें स्पष्ट करके लिखते हैं.

रियम्।

नुस्रुद्दाखिल	अतवेखारिज	नकी	अतवेदाखिल	इज्जतमा	तरिखा	शकलनाम
११	१२	१३	१४	१५	१६	शकलसंख्या
=⁝	⁝‗	÷	‾⁝	‾⁝‗	⁝	शकलस्वरूप
दाखिल	खारिज	मुन्कलीब	दाखिल	साबित	मुन्कलीब	खारिजादयः
द्विस्वभाव	द्विस्वभाव	चर	द्विस्वभाव	स्थिर	चर	द्विस्वभावादयः
स्त्री	पुरुष	नपुंसक	स्त्री	नपुंसक	नपुंसक	पुरुषादि सं.
रात्रि	दिन	सं.	रा.	सं.	सं.	दिनरात्रिबलम्
शुभ	अशुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम	शुभ	शुभाशुभम्
उत्तर	पूर्व	उत्तर	पश्चिम	पश्चिम	उत्तर	दिशा
जल	अग्नि.	ज.	वायु.	वा.	जल	तत्त्वानि
१२	१०	८	२	६	४	राशिसंज्ञा
गुरु	केतु	भौम	शुक्र	बुध	चंद्र	स्वामी
स्थिर	चर	चर	स्थिर	स्थिर	चर	संज्ञा

अथ शकलानां गुणवर्णादि ।

लह्यानं ब्राह्मणो गौरो धर्मासक्तश्च पण्डितः ॥
मिष्टवक्ता मिष्टभुक् च ह्रस्वग्रीवश्च नीलदृक् ॥ ५२ ॥

अर्थ--अब शकलोंके गुण और वर्ण आदिको कहते हैं—लह्यान शकल ब्राह्मण, गौर वर्ण, धर्ममें आसक्त, पंडित, मीठा बोलनेवाला, मीठा भोजन करनेवाला, छोटी ग्रीवावाला और श्याम नेत्रोंवाला है ॥ ५२ ॥

देहगृहे तपःस्थाने चोपाध्यायगृहे स्थितिः ॥ माणिक्यं च सुवर्णं च श्रेष्ठगंधश्च सुंदरः ॥ ५३ ॥ कब्जुल्दाखिलकं श्रेष्ठं क्षेत्रं गोधूमवर्णकम् ॥ मिष्टवाक्यं श्यामनेत्रं शिल्पज्ञं मध्यमोच्चकम् ॥ ५४ ॥

अर्थ—देवताके घरमें, तपस्थानमें, पाठशालाके स्थानमें स्थिति है माणिक्य, रत्न, सुवर्ण, श्रेष्ठ गंधको ग्रहण करनेवाला, सुंदर है ॥ ५३ ॥ कब्जुल्दाखिल श्रेष्ठ क्षत्री है; गेहूंसरीखे वर्णवाला है, मीठा बोलनेवाला तथा श्याम नेत्रवाला है, शिल्प चतुराईका जाननेवाला तथा मध्यम उँचाईवाला है ॥ ५४ ॥

क्रयादिके च कुशलं रथ्यादेवालये स्थितिः ॥ पण्यां स्वर्णसुवासं च माणिक्यं मिष्टभुक् सदा ॥ ५५ ॥ कब्जुल्खारिजमशुभं म्लेच्छमन्यायतत्परं ज्ञेयम् ॥ वदनं व्रणांकितं च मार्जारदृशं च दीर्घरवम् ॥ ५६ ॥

अर्थ--खरीदने बेचनेके व्यवहारमें निपुण, रथ्या (गली) और देवस्थानमें तथा दुकानमें स्थिति रखता है और सोना, सुंदरवस्त्र, माणिक्य (रत्न) इनको भोगनेवाला तथा मिष्टभुक् (मीठा भोजन करनेवाला) है ॥ ५५ ॥ कब्जुल्खारिज अशुभ है, म्लेच्छ है और अन्यायमें तत्पर जानना. व्रण (घाव)से चिह्नित शरीरवाला और बिलाईसरीखे नेत्रोंवाला तथा दीर्घ शब्द करनेवाला है ॥ ५६ ॥

वर्णं च कृष्णपीतं स्थूलरदं पिशुनप्रकृतिं च ॥ तिक्तप्रियं च वासं निंद्यस्थाने च लोहपाषाणम् ॥ ५७ ॥ जमातं गोधूम-

वर्णं शूद्रं च चित्रलेखने निरतम् ॥ गुणवत्सुवर्णकुशलं व्ययशीलं हिंसान्वितं वैद्यम् ॥ ५८ ॥

अर्थ—काला तथा पीला वर्ण, बड़े दांत हैं तथा चुगलखोर है, कडुवा प्रिय माननेवाला, निंदित स्थानमें बसनेवाला, लोह, पत्थर इनको भोगनेवाला है ॥ ५७ ॥ जमात शकल गेहूंसरीखे वर्णवाला है शूद्र है, चित्रोंके लिखनेमें रत है, गुणवान् है, सोनाके काममें निपुण, खर्चनेके स्वभाववाला, हिंसासे युक्त और वैद्य है ॥ ५८ ॥

कृष्णेक्षणं चातिशुभं दीर्घास्यं मिष्टभोजने च रतम् ॥ कुशलं संधेः करणे पठनस्थानं च हरितवर्णम् ॥ ५९ ॥ फरहाख्यशकलं च दीर्घदेहं गौराभं लिपिकुशलं च हास्यवृत्तिम् ॥ भिन्नभ्रूस्त्वसितकटाक्षमोष्ठसूक्ष्मं मुक्ताढयं स्थलसुभगं च मिष्टभोज्यम् ॥ ६० ॥

अर्थ—काले नेत्रवाला तथा अत्यंत शुभ है, बड़े मुखवाला, मीठे भोजनमें रत है; सांधि (मिलाप) करनेमें निपुण, पठनस्थानमें रहनेवाला तथा हरितवर्णवाला है ॥ ५९ ॥ फरहा शकल दीर्घ शरीरवाला, गौरवर्ण, लिखनेमें निपुण, हास्यवृत्तिवाला, कटी हुई भ्रुकुटियोंवाला, काले नेत्र, सूक्ष्म ओष्ठ, मोतियोंसे भूषित, स्थलमें प्रीतिवाला, मीठा भोजन करनेवाला है ॥ ६० ॥

उक्लाख्यं शकलं च कृष्णवर्णं दीर्घास्यं मलिनं च हीनजातिम् ॥ श्यामास्यं त्वधिकाल्पनेत्रयुक्तं क्लेशाढयं बहुकुशलं च शाकपण्ये ॥ ६१ ॥ कारागृहं च परिखां पक्षिस्थानं च सांधकारजलयुक्तम् ॥ पिशुनं धातौ वंगं पाषाणे कृष्णपाषाणम् ॥ ६२ ॥

अर्थ—उक्ला शकल काले वर्णवाला है, दीर्घ तथा मलिन मुखवाला, हीनजाति है, श्याममुख और अत्यंत छोटे नेत्रयुक्त तथा क्लेशसे युक्त है. शाककी दूकानमें (व्यवहारमें) अत्यंत निपुण है ॥ ६१ ॥ कारागृह (कैदखाना), परिखा (खाई) पक्षियोंका स्थान, अंधकार तथा जलयुक्त स्थान है, चुगली करनेवाला है, वंगधातुमें काले पाषाणमें (रुचिवाला) है ॥ ६२ ॥

अंकीशं कृष्णवर्णं कृषिकरणरतं कृष्णनेत्रं कुवेषं गेहे कृत्ये समर्थं मलिनमुखयुतं ग्राम्यवासं च दीर्घम् ॥ दास्यादौ कृत्ययुक्तं नखरदसुदृढं त्वम्लभुक् चालसाढ्यं मिथ्यावाद्यल्पनेत्रं त्वतिरवसहितं लोहपाषाणकृष्णम् ॥ ६३ ॥ हुम्राख्यं क्षत्रियं शूरं शस्त्रवैद्यं च तस्करम् ॥ हिंसायुक्तं तथा निंद्यं नापितं लोहकर्तृकम् ॥ ६४ ॥

अर्थ—अंकीश शकल कृष्णवर्ण है, खेती करनेमें निपुण, काले नेत्रवाला, कुवेष (दुर्बलवेष) वाला, घरके कामोंमें समर्थ, मलिन मुखवाला, ग्राम्य (गँवार) पुरुषोंमें वास करनेवाला तथा दीर्घ रूपवाला है. दासी आदिके कृत्यमें युक्त, दृढ नख तथा दृढ दांतोंवाला, खट्टा भोजन करनेवाला, आलस्ययुक्त, झूँठा, छोटे नेत्रोंवाला, अत्यंत शब्द करनेवाला, लोह, काला पाषाण (पत्थर) इनमें रत है ॥ ६३ ॥ हुमरा शकल क्षत्रिय है, शूर वीर है, शस्त्रका वैद्य है और चोर है, हिंसासे युक्त तथा निंदित और नापित (नाई) जाति और लोहका काम करनेवाला है ॥ ६४ ॥

कलिप्रियं पीतनेत्रं व्रणाङ्कितबृहच्छिरसम् ॥ मध्यमोच्चं तिक्तरसं वनाद्रिगह्वरे स्थितम् ॥ ६५ ॥ बयाजं शकलं गौरं ब्राह्मणं गमनान्वितम् ॥ सुखान्वितं सिद्धियुतं श्रेष्ठं देवार्चने रतम् ॥ ६६ ॥

अर्थ—कलहमें प्यार करनेवाला, पीले नेत्रवाला, व्रण (घाव) से चिह्नित बड़े शिरवाला, मध्यम ऊँचाईवाला, कडुवा, रसग्राही, गह्वर वन तथा पर्वतमें रहता है ॥ ६५ ॥ बयाज शकल गौरवर्ण है, ब्राह्मण है, सुखसिद्धिसे युक्त है, श्रेष्ठ है, देवपूजामें रत है ॥ ६६ ॥

मध्यमोच्चं वर्तुलास्यं श्यामनेत्रं वचःप्रियम् ॥ कर्पूरादिसुगंधाढ्यं मौक्तिकानां क्रयान्वितम् ॥ ६७ ॥ जलवृक्षयुतं स्थानं श्रेष्ठवस्त्रं सुशोभनम् । मिष्टान्नं दुग्धसंयुक्तं बिल्वाढ्यं दृषदन्वितम् ॥ ६८ ॥

अर्थ—मध्यम उँचाईवाला, गोल मुखवाला, श्याम नेत्रवाला, प्रिय वचन बोलनेवाला, कपूर आदि सुगंधिसे युक्त, मोतियोंके व्यवहारमें युक्त ॥ ६७ ॥ जलवृक्ष आदिसे युक्त स्थान है, सुंदर श्रेष्ठ वस्त्र है, मिष्टान्न दुग्धसे संयुक्त भोजन है और बेलपत्रोंका बीड़ा तथा पत्थर आदिकी गुफामें रहता है ॥ ६८ ॥

नुस्तुत्खारिजशकलं क्षत्रश्रेष्ठं च राज्यकार्यरतम् ॥ धर्मान्वितं च दीर्घदेहं गौरं विशालनेत्रं च ॥ ६९ ॥ स्थानं नीरसमीपे सुभगं स्वर्णस्य हारकं स्वर्णम् ॥ माणिक्यं रत्नपाण्यं वसनं श्रेष्ठं च भोक्तारम् ॥ ७० ॥

अर्थ—नुस्तुत्खारिज शकल उत्तम क्षत्री है, राज्यकार्यमें रत है, धर्मसे युक्त और दीर्घ देहवाला, गौरवर्ण है, विशाल सुंदर नेत्रवाला है ॥ ६९ ॥ जलके समीप स्थान है, सुंदर ऐश्वर्यवान् है, सोनाको हरनेवाला, स्वर्ण माणिक्य रत्न इनको बेचनेवाला, श्रेष्ठवस्त्रवाला, श्रेष्ठ भोजन करनेवाला है ॥ ७० ॥

नुस्तुद्दाखिलशकलं गौरं विप्रं तपोन्वितं दीर्घम् ॥ वृत्तास्यं तिलयुक्तं ह्रस्वं विस्तीर्णनेत्रयुतम् ॥ ७१ ॥ धातौ सौवर्णरजतं स्फटिकं सिंधूत्थभं सुवस्त्रधरम् ॥ अध्यापनपठनार्हं सरसं भोज्यं सुगंधयुक्तं च ॥ ७२ ॥

अर्थ—नुस्तुद्दाखिल शकल तपस्वी, गौर वर्ण, ब्राह्मण है, दीर्घ है, गोल मुखवाला, तिलचिह्नसे युक्त तथा ह्रस्व (छोटे) देहवाला और बड़े नेत्रवाला है ॥ ७१ ॥ धातुमें सुवर्ण तथा चांदी है, मणि है, समुद्रझागसरीखी श्वेत कांतिवाला, सुंदर वस्त्रवाला, पढ़ाने पढ़ने योग्य है,सरस भोजन और सुगंधियुक्त है ॥ ७२ ॥

अतवेखारिजशकलं म्लेच्छं दीर्घं व्रणाङ्कितं च कृशम् ॥ कृष्णं सपीतवर्णं निस्सत्वं कपिलनेत्रं च ॥ ७३ ॥ उच्चस्थले निवासं वनाद्रिकूपान्वितं सदुर्गाढ्यम् ॥ वसनं चोर्णोद्भूतं देहासक्तं च दुर्गंधम् ॥ ७४ ॥

अर्थ—अतवेखारिज शकल म्लेच्छ है, दीर्घ है, व्रणों (घावों) से चिह्नित और

कृश वपुवाला है, कृष्णस्वरूप है; पीले वस्त्रवाला, दरिद्रभाववाला और कपिल नेत्रवाला है ॥ ७३ ॥ उच्चस्थलमें निवास है, वन, पर्वत, कूवा, दुर्ग (किला कोट) आदिसे युक्त रहता है, ऊनके वस्त्रोंवाला तथा देहमें आसक्त और दुर्गंधयुक्त है ॥७४॥

नकी शकलं क्षत्रियं गौरवर्णं कृशं पीतनेत्रं भटं स्थूलकण्ठम् ॥ भटेष्वग्रगण्यं शिशोः सेवकं च स्वतंत्रे स्थितं रक्तकेशायुधाढ्यम् ॥ ७५ ॥ मांसादिभक्षणे सक्तं हरिद्वस्त्रान्वितं पटुः ॥ स्थानं जलस्य निकटे सान्धकारं प्रकीर्तितम् ॥ ७६ ॥

अर्थ—नकी शकल गौरवर्ण, क्षत्रिय है, (कृश) दुबला तथा पीले नेत्रोंवाला, शूरवीर, स्थूल कंठवाला, योद्धाओंमें अग्रणी (मुख्य) है, बालककी सेवा करनेवाला, स्वतंत्र रहनेवाला, लाल वस्त्रोंवाला तथा शस्त्रोंको धारण करनेवाला है ॥ ७५ ॥ मांस आदिके भक्षण करनेमें आसक्त तथा हरित वर्ण वस्त्रोंवाला चतुर जलके निकट अंधकारयुक्त स्थान है ॥ ७६ ॥

अतवेदाखिलं दीर्घदेहं गोधूमवर्णकम् ॥ कृशदेहं च सुमुखं भूमिन्नमुरुदीर्घकम् ॥ ७७ ॥ श्यामनेत्रं तिलयुतमुच्चवस्तुप्रियं स्थलम् ॥ वृक्षमूले जलाभं च बहुवृक्षगणैर्युतम् ॥ ७८ ॥

अर्थ—अतवेदाखिल शकल दीर्घ देहवाला है, गेहूंसरीखे वर्णवाला, कृश शरीरवाला, सुंदर मुखवाला, कर्टी, भ्रुकुटियोंवाला, बड़ी जंघोंवाला ॥ ७७ ॥ काले नेत्रवाला, तिलके चिह्नसे युक्त है; ऊंची वस्तुसे प्रिय है, स्थल वा वृक्षमूलमें निवास है; जलसरीखी कांतिवाला और बहुतसे वृक्षगणोंसे युक्त है ॥ ७८ ॥

इज्जतमा शकलं प्रोक्तं शूद्रं च नृपलेखकम् ॥ गणकं गुणसंपन्नं सुन्दरश्मश्रुलोचनम् ॥ ७९ ॥ चित्रवस्तुप्रियं स्थानं पाठागारं सचित्रकम् ॥ लाजावर्तं सप्तधातुचित्रवस्त्रं सुकोमलम् ॥ ८० ॥

अर्थ—इज्जतमा शकल शूद्र कहा है; राजाका लेखक है, ज्योतिषी है, गुणोंसे यु-

क्त और सुंदर दाढ़ीवाला है ॥ ७९ ॥ विचित्र वस्तु प्रिय है, पाठशाला स्थान है, चित्रोंसहित स्थान है, लाजावर्त्त मणि और सात साधु तथा विचित्र वस्त्रोंवाला है, सुंदर कोमल है ॥ ८० ॥

तरीखाख्यं दलं वैश्यं गौराङ्गं दीर्घदेहकम् ॥ आसक्ताङ्गं बृहन्नेत्रं सुंदरं मार्गगामिनम् ॥ ८१ ॥ सजलं पर्वतस्थानं चारं राजगृहे स्थितिः ॥ बहुमूल्ययुतं वस्तु भोजने मधुरप्रियम् ॥८२॥

॥ इति शकलानां गुणवर्णादिस्वरूपकथनम् ॥

अर्थ--तरिखा शकल गौरवर्ण है, वैश्य है, दीर्घ देहवाला है, असमर्थ (कमजोर) शरीरवाला, बड़े नेत्रवाला, सुंदर है तथा मार्गमें गमन करनेवाला है ॥ ८१ ॥ जलसहित पर्वतस्थान, चार=राजाको खबर पहुँचानेंवाला जासूस है, राजाके स्थानमें स्थिति रखता है, बहुत मूल्ययुक्त वस्तु है, भोजनमें मधुर (मीठे) को प्रिय मानता है ॥ ८२ ॥

इति श्रीवेरीनिवासि० पण्डितवसतिरामविरचितरमलनवरत्नभाषाटीकायां शकलानां गुणवर्णनं स्वरूपकथनं च समाप्तम् ।

अथ स्थानानां संज्ञा ।

आद्यं तुर्य्यं सप्तमं दिङ्मितं च स्यादवतादं केन्द्रसंज्ञं तदेव ॥ नेत्रेष्वष्टौ लाभकम्पायलाख्यं ज्ञेयं विज्ञैः पणफराख्यं तदेव ॥ ॥ ८३ ॥ तृतीयषष्ठाङ्कदिनेशतुल्यमापोक्लिमं जायलसंज्ञकं च ॥ विश्वादिकानां च चतुष्टयानां वतुदलयुतं स्यादवतादसंज्ञकम् ॥ ८४ ॥

अर्थ--अब स्थानोंकी संज्ञाको कहते हैं-पहिला, चौथा, साँतवां, दशवां, इन घरोंको अवतादसंज्ञक तथा केंद्रसंज्ञक कहते हैं. दूसरा, आठवां, ग्यारहवां, इनको मायल संज्ञक तथा पणफर भी उसीको कहते हैं ॥ ८३ ॥ तीसरा ३, छठा ६, नवमा ९, बारहवां १२, इन घरोंको आपोक्लिमसंज्ञक तथा जायलसंज्ञक भी कहते हैं. तेरहवें आदि चार (१३ । १४ । १५ । १६) इन घरोंको वतुदलयुत, अवताद संज्ञक कहते हैं अर्थात् वतुदलवताद ऐसी संज्ञा है ॥ ८४ ॥

आग्नेयं वायवं चाप्यं पार्थिवं च चतुर्थकम् ॥ चतुरावृत्तितो ज्ञेयमाद्यगेहादितत्त्वकम् ॥ ८५ ॥ अग्निर्वायुस्तथा तोयं पृथिवी च चतुष्टयम् ॥ एकैकशकले ज्ञेयमपि तत्त्वं पृथक् पृथक् ॥८६॥

अर्थ—अग्नि वायु, जल, पृथ्वी, ये चार तत्त्व पहले घरसे आदि लेके, चार आवृत्ति करनेसे सोलहवें घरतक जानने अर्थात् १६ शकलोंमें इनमेंसे १ तत्त्व प्रधान रहता है ॥ ८५ ॥ अग्नि, वायु, जल, पृथ्वी ये चारों तत्त्व एक २ शकलमें भी पृथक् पृथक् रहते हैं ॥ ८६ ॥

आद्यं लाभं सप्तमं पञ्चमं च धर्मं वित्तं खेन्दुगेहं शुभं स्यात् ॥ वह्निं तुर्यं मध्यमं संप्रदिष्टं षष्ठाष्टान्त्यं निन्दिता वै गृहाश्च ॥ ॥ ८७ ॥ विश्वाष्टार्द्धं पूर्वगेहस्य चोक्ते शक्रास्तार्द्धं स्याद्ध-नाख्यं गृहस्य ॥ साक्षी ज्ञेयौ पञ्चषष्ठौ च गेहौ तार्तीयस्य षोडशैवं सुखस्य ॥ ८८ ॥

अर्थ—आद्य १, ग्यारहवां ११, सांतवां ७, पांचवां ५, नववां ९, दूसरा २, दशवां १० ये घर शुभ हैं और तीसरा ३, चौथा ४ घर मध्यम कहलाता है; छठा ६, आठवां ८, बारहवां १२ ये घर निंदित अर्थात् अशुभ कहाते हैं ॥ ८७ ॥ तेरहवीं १३, आठवीं ८ शकल पहले घरकी साक्षी हैं. चौदहवीं १४, सातवीं ७ शकल दूसरे घरकी साक्षी हैं और पांचवां ५ तथा छठा ६ घर तीसरे घरके साक्षी हैं. चौथे ४ घरका साक्षी सोलहवां १६ घर है ॥ ८८ ॥

पुत्रस्य नन्दं दशमं रिपोश्च मंदस्य लाभं व्ययभं च मृत्योः ॥ शरेन्दुनन्दस्य रिपुः खभस्य द्यूनं च लाभस्य गजं व्ययस्य ॥ ८९ ॥ विश्वस्याद्यं शक्रगेहस्य वित्तं पञ्चेन्दोर्वै नन्दसंख्यं नृपस्य ॥ तुर्यं ज्ञेयं साक्षिगेहं गृहाणां सर्वेषां स्यात्साक्षिगेहं शरेन्दुः ॥ ९० ॥

अर्थ—पांचवें ५ घरका साक्षी नवमां घर, छठेका दशवां, सातवें ७ का ग्यारहवां ११ साक्षी है. आठवें ८ का बारहवां १२ साक्षी है; नवमें ९ का साक्षी १५ पंदरहवां है; दशवें घरका साक्षी छठा ६ घर है, ग्यारहवेंका साक्षी ७ वां है,

आठवां ८ घर बारहवें १२ का साक्षी है ॥ ८९ ॥ तेरहवें १३ का १, चौदहवें १४ का २, पंदरहवें १५ का ९, सोलहवें १६ का ४ साक्षी है और सब घरोंका साक्षी पंदरहवां १५ घर है ॥ ९० ॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
१३	१४	६	१६	९	१०	११	१२	१५	६	७	८	१	२	९	४
८	७	५	यह साक्षीखंड देखनेका कोष्ठक है.												

प्रस्तारस्य प्राक् चतुष्कं गृहाणां ज्ञेयं विज्ञैरुन्महान्तं तदेव ॥ पश्चाद्यानां वेदसंख्यागृहाणां प्राज्ञैः प्रोक्तं तनातब्राख्यसंज्ञम् ॥ ॥ ९१ ॥ नवमादिचतुष्कस्य संज्ञा मुतवल्लदा तदा ॥ विश्वादीनां चतुष्काणां जावादातं प्रकीर्तितम् ॥ ९२ ॥

अर्थ—प्रस्तारके पहले चार घरोंकी उन्महांत संज्ञा है. पांचसे आदि ५ । ६ । ७ ८। इन चार घरोंकी बनात संज्ञा है ॥ ९१ ॥ और नवमा आदि ९। १० । ११। १२ इन चार घरोंकी मुतवल्लद संज्ञा है और तेरहवां आदि १३ । १४ । १५।१६। इन चार घरोंकी जावादात संज्ञा कही है ॥ ९२ ॥

इति श्रीसनाढ्यकुलावतंसपरमसुखोपाध्यायकृते रम्लनवरत्ने संज्ञारत्नं प्रथमं समाप्तिमगमत् ॥

इति श्रीवेरीनिवासिगौड़वंशोद्भवद्विजशालग्रामात्मजपण्डितवसतिरामविरचितरमलनवरत्नचन्द्रिकाभाषाटीकायां संज्ञारत्नं प्रथमं समाप्तम् ॥ १ ॥

अथ द्वितीयं बलाबलं रत्नम् ।

शुभाशुभस्य दातारः सबलास्तत्फलप्रदाः ॥ निर्बला निष्फला ज्ञेयास्तस्माज्ज्ञेयं बलाबलम् ॥ १ ॥ अग्निवाय्वोस्तथा नीरभूम्योर्मिथः सौहृदं वैपरीत्ये मिथः शत्रुता ॥ अग्निभूम्योस्तथा नीरवाय्वोर्मिथो मध्यमं सौहृदं ज्ञेयमेवं सदा ॥ २ ॥

अर्थ—अब दूसरे बलाबल नामक रत्नको कहते हैं:-शुभ अशुभ फलके देनेवाली शकलें जो सबल (बलवान्) हों तो वैसा ही शुभ फल देनेवाली हैं; निर्बल (बलरहित) हों तो बुरा फल देती हैं. इसलिये बलाबल विचारना ही योग्य है ॥ १ ॥ अग्नि वायुकी, जल भूमिकी, आपसमें मित्रता है और इससे विपरीत हो तो आपसमें शत्रुता जाननी. अग्नि भूमिकी, जल वायुकी, मध्यम प्रीति है, ऐसा सदा जानना ॥२॥

आग्नेयादीनि खण्डानि त्वाग्नेयादिगृहेषु च ॥ गतानि सबलानि स्युर्मित्रगेहे तथैव च ॥ ३ ॥ यदा शत्रुगृहे तिष्ठेद्बलं तस्य न विद्यते ॥ मध्यमाख्ये गृहे खण्डं बलं मध्यं भवेत्तदा ॥४॥

अर्थ—अग्नि आदि तत्त्वोंके खंड अग्नि आदिकोंके अर्थात् अपने ही घरोंमें स्थित हों तो सबल (बलवंत) जानने तथा मित्रके घरमें स्थित हुए भी बलयुक्त जानने ॥ ३ ॥ जो शत्रुके घरमें स्थित हों तो उसका बल नहीं है, मध्यम घरमें शकल हो तो मध्यम बल जाने ॥ ४ ॥

एवं बलं स्वगेहस्थखण्डस्य प्रथमं ततः ॥ पङ्क्तिगेहैक्यभेदेन द्वितीयं बलमुच्यते ॥ ५ ॥ शकुनं प्रथमं गेहमब्दहाख्यं द्वितीयकम् ॥ विज़्दहाख्यं तृतीयं स्याच्चतुर्थं त्वबुजदं स्मृतम् ॥६॥

अर्थ—ऐसे स्वगेहस्थ अर्थात् प्रस्तारके घरका बलाबल देखना पहले कहा है. अब पंक्तिघरके भेदकरके दूसरा बलाबल कहते हैं ॥ ५ ॥ पहिला घर शकुन है अर्थात् पहले शकुनपंक्ति है, दूसरी अब्दहपंक्ति है; तीसरी विज़्दह पंक्ति है, चौथी अबजद पंक्ति है ॥ ६ ॥

पञ्चमं च मिजाजाख्यं षष्ठं हर्फाख्यमीरितम् ॥ सप्तमं चास्सहाख्यं च क्रम एषां च कथ्यते ॥७॥ शकुनस्य च पंक्त्यां हि कारणं नान्यदस्ति वै ॥ स्वभावेनैव तज्ज्ञेयं शकलं स्वस्य वेश्मगम् ॥ ८ ॥

अर्थ—पांचवीं मिजाज नामक पंक्ति है, छठी हर्फा पंक्ति है, सातवीं अस्सह पंक्ति कहलाती है, इस प्रकारसे इनका क्रम कहा है ॥ ७ ॥ शकुनपंक्तिमें तो कोई कारण नहीं है, वहां स्वभावसे ही शकल अपने घरमें प्राप्त हुई जाननी ॥ ८ ॥

अब्दहाख्यं द्वितीयं तु तस्य कारणमुच्यते ॥ एकैकशकले चास्ति तत्त्वानां च चतुष्टयम् ॥ ९ ॥ ऊर्ध्वादधः क्रमेणैव वह्न्यादींश्च सदैव हि ॥ कश्चित् प्रकटरूपेण गुप्तरूपेण कश्चन॥१०॥

अर्थ—दूसरी अब्दह पंक्ति है, उसका कारण कहते हैं:—एक एक शकलमें चार चार तत्त्व हैं ॥९॥ ऊपरसे नीचेको आना, इस क्रमसे अग्नि आदि तत्त्व सदा ही एक २ शकलमें रहते हैं, कोई तत्त्व प्रकटरूपकरके है, कोई गुप्तरूपसे रहता है ॥ १० ॥

प्रकटं बिन्दुरूपेण गुप्तं रेखात्मकेन च ॥ तस्मात् प्रकटतत्त्वस्य संख्या कार्या मनीषिभिः ॥ ११ ॥ अब्दहाख्ये च ये वर्णाश्चाग्न्यादिषु नियोजयेत् ॥ अकारस्यैकसंख्या स्याद्बकारस्य द्वयं स्मृतम् ॥ १२ ॥

अर्थ—बिंदुरूपकरके प्रकट तत्त्व रहता है और रेखारूपसे गुप्त (अप्रकट) तत्त्व जानना. इस लिये पंडित जनोंने प्रकट तत्त्वकी ही संख्या करनी ॥ ११ ॥ 'अबूदह' इस नाममें जो वर्ण हैं उनको अग्नि आदि तत्त्वोंविषे नियुक्त करे. जैसे अकारकी एक १ संख्या है, बकारकी २ दो संख्या है ॥ १२ ॥

दकारस्य चतुष्कं च हकारस्याष्टसंख्यकम् ॥ एवं तत्त्वक्रमेणैव यस्य यस्याङ्कसंमितिः ॥ १३ ॥ तदंकतुल्यगेहे तु शकलस्य स्थितिर्भवेत् ॥ यथा लह्यानके खण्डे केवलं वह्नितत्त्वकम् ॥ १४ ॥

अर्थ—दकारकी चार ४ संख्या है और हकारकी आठ ८ संख्या है. ऐसे तत्त्वोंके क्रमकरके जिस २ अंककी संमिति (संख्या)का जोड़ होके एक अंक आवे ॥ १३ ॥ उतनी ही संख्याके घरमें शकलकी स्थिति जाननी. जैसे लह्यान शकलमें केवल अग्नि तत्त्व ही प्रकट है, अर्थात् ऊपर ही एक बिंदु है इसलिये एक अग्नि तत्त्व तो प्रकट है अन्य गुप्त हैं ॥ १४ ॥

तस्याक्षरोऽप्यकारोऽस्ति तस्यांकश्चैक एव हि ॥ तस्मादाद्ये चाब्दहस्य लह्यानस्य स्थितिं वदेत् ॥ १५ ॥ एवं तरीखशकले वेदतत्त्वं हि दृश्यते ॥ प्रकटत्वेन तत्रास्ते वेदखं चाब्दहाख्यकम् ॥ १६ ॥

अर्थ—उसका अक्षर अकार है, उस अकारका एक ही अंक है इसलिये अब्दह पंक्तिके पहले ही घरमें लह्यान शकलकी स्थिति है ॥ १५ ॥ ऐसे ही तरीख शकलमें चारों तत्त्व प्रकट दीखते हैं, वहां अब्‌दहनामक चार शून्य प्रकटरूपकरके हैं ॥ १६ ॥

वेदखानां च संख्याङ्कमेकद्व्यब्धिगजोन्मितम् ॥ तेषां योगः पञ्चदश तस्मात् पञ्चदशे गृहे ॥ १७ ॥ तरीखस्य स्थितिर्ज्ञेया ह्यब्दहे तस्य निश्चितम् ॥ एवं क्रमेण सर्वेषां खण्डानां च स्थितिं कुरु ॥ १८ ॥

अर्थ—इन चार शून्योंकी संख्या एक १, दो २, चार ४, आठ ८, ऐसे हुई; इनके जोड़से पंदरह १५ का अंक होता है, इसलिये पंदरहवें १५ ही घरमें ॥ १७ ॥ तरीख शकलकी स्थिति जाननी. अब्‌दह पंक्तिमें उसकी स्थिति है ऐसे निश्चय देखो. इसी क्रमसे संपूर्ण खंडों (शकलों) की स्थिति करनी ॥ १८ ॥

यस्य तत्त्वं गुप्तरूपं तस्यांकं नैव लभ्यते ॥ शेषे गेहे च तत् खण्डं जमातं षोडशे यथा ॥ १९ ॥ अन्यत्प्रयोजनं चास्य वर्त्तते तस्करस्य च ॥ रूपस्य कथने संख्या सन्तानस्यापि निर्णये ॥ २० ॥

अर्थ—जिसका तत्त्व गुप्तरूप हो अर्थात् शून्य न हो उसका अंक लब्ध नहीं होता है. उस शकलको बाकी रहे घरमें स्थापन करै. जैसे कि जमात शकल सोलहवें घरमें स्थित है ॥ १९ ॥ चोरका रूप कहनेमें तथा संतानके निर्णयमें संख्या आदि इसका अन्य भी प्रयोजन है ॥ २० ॥

एवमेव क्रमेणैव बिज्दहे वर्णसंस्थितिः ॥ अग्न्यादिकेषु तत्त्वेषु-खण्डेषु सकलेषु च ॥ २१ ॥ वकारस्य द्वयं ज्ञेयं जकारस्याद्रिसंज्ञकम् ॥ दकारस्य चतुःसंख्या हकारस्याष्टकं स्मृतम् ॥ २२ ॥

अर्थ—इसी क्रमसे बिज्‌दह पंक्तिमें वर्णोंकी स्थिति है. अग्नि आदि तत्त्वोंमें संपूर्ण शकलोंमें ॥ २१ ॥ वकारकी दो २ संख्या है. जकारकी सांत ७ संख्या है, दकारकी चार ४ संख्या है. हकारकी आठ ८ संख्या है ॥ २२ ॥

प्रकटं तत्त्वसंख्यैक्यं तत्तुल्ये च गृहे स्थितिः ॥ षोडशांकाधिके लाभे षोडशं शोधयेत्ततः ॥ २३ ॥ शेषांकतुल्यं शकलं बिज्दहे तत्र बुध्यताम् ॥ तत्त्वानां त्रितयं खण्डे फरहाख्ये यथा खलु ॥ २४ ॥

अर्थ--प्रकट रूपकरके तत्त्वोंकी संख्याको एक जगह जोड़े, जितनी संख्या हो उस ही संख्याके घरमें शकलकी स्थिति जाननी. जो सोलह संख्यासे अधिक अंक आवे तो सोलहका भाग देवे ॥ २३ ॥ फिर बाकी रहे अंकके तुल्य घरमें बिज्दह पंक्तिमें उस शकलको जाने. जैसे फरहा शकलमें तीन तत्त्व हैं ॥ २४ ॥

अग्नेर्वायोश्च भूमेश्च तेषां वर्णश्च कथ्यते ॥ वकारस्य जकारस्य हकारस्येति कीर्तितम् ॥ २५ ॥ वकारस्य द्विसंख्याकं जकारस्यांद्रिसंख्यकम् ॥ हकारस्याष्टकं ज्ञेयं योगे सप्तदशं स्मृतम् ॥ २६ ॥

अर्थ—अग्नि, वायु, भूमि, ये तत्त्व हैं. अब इनके वर्णोंको कहते हैं. वकार, जकार, हकार इन तीनोंके अंक हैं ॥ २५ ॥ वकारकी दो २ संख्या, जकारकी सात ७ संख्या, हकारकी आठ ८ संख्या है. इन सबके योगमें सतरह १७ अंक हुए ॥ २६ ॥

षोडशं शोधितं तत्र शेषं स्यादेकसंख्यकम् । तस्माच्च प्रथमे गेहे फरहा विज्दहे स्थिता ॥ २७ ॥ एवं क्रमेण खण्डानां सर्वेषां विज्दहे स्थितिः ॥ अङ्काभावे जमातस्य गृहं भवति षोडशम् ॥ २८ ॥

अर्थ--वहां सोलहका भाग दिया उसमें एक अंक शेष रहा इसलिये विज्दहपंक्तिविषे प्रथम घरमें फरहा शकल स्थित है ॥ २७ ॥ ऐसे ही क्रमकरके सब खंडोंकी (शकलोंकी) स्थिति बिज्दहपंक्तिमें जाननी और अंकके अभावसे अर्थात् एक भी शून्य, कोई भी तत्त्व प्रकट नहीं होनेसे जमातका सोलहवां घर है ॥ २८ ॥

अन्यत् प्रयोजनं चास्य वर्तते कथ्यतेऽधुना ॥ कार्यावधेश्च यज्ज्ञानं तत्तदस्मादेव जायते ॥ २९ ॥ तृतीयपंक्त्यां संप्रोक्तः क्रमो रम्लानुसारतः ॥ अब्जदाख्यचतुर्थस्य प्रकारः कथ्यतेऽधुना ॥ ३० ॥

अर्थ—इसका अन्य भी प्रयोजन है सो कहते हैं-कार्यकी अवधिका जो ज्ञान है सो इसही विजूदहपंक्तिसे होता है ॥ २९ ॥ ऐसे रमलशास्त्रके अनुसार तीसरी इस पंक्तिमें क्रम कहा है. अब चौथी अब्जद पंक्तिका प्रकार कहते हैं ॥ ३० ॥

अकारस्य भवेदेकं बकारस्य द्वयं ततः ॥ जकारे ज्वलनाङ्काश्च दकारस्य चतुष्टयम् ॥ ३१ ॥ तेषां योगे दशांकाः स्युस्तदूर्ध्वं नैव लभ्यते ॥ आद्याद्दशमपर्यन्तं शकलानां क्रमं लिखेत् ॥ ३२ ॥

अर्थ—अकारका एक[1] अंक है. बकारके [2]दो अंक हैं. जकारमें तीन[3] अंक हैं. दकारके चार अंक हैं ॥ ३१ ॥ इन सबोंके योगमें दश ही अंक होते हैं, इससे अधिक नहीं लभ्य होते. तहां प्रथम घरसे दशवें घरतक शकलोंका क्रम लिखे ॥ ३२ ॥

लाभादिनृपपर्यन्तखण्डस्थानविधिं ब्रुवे ॥ निधिगेहात् पुनर्गण्यं लाभादीनां क्रमो भवेत् ॥ ३३ ॥ लह्यानस्याग्नितत्त्वं च प्रकटत्वेन दृश्यते ॥ तत्रैवाऽकारवर्णोऽस्ति तस्याङ्कश्चैक एव हि ॥३४॥

अर्थ—ग्यारहवें ११ आदि सोलहवे १६ घरतककी विधिको भी कहते हैं. नवमे घरसे फिर गिनती करे तब ग्यारहवें ११ आदि घरोंका क्रम होता है ॥ ३३ ॥ लह्यान शकलका अग्नितत्त्व प्रकट रूपसे दीखता है. वहां अकार वर्ण है. उसका एक ही अंक हुआ ॥ ३४ ॥

तस्मादाद्ये चाब्जदस्य लह्यानस्य निवेशनम् ॥ एवं द्वितीये हुमरा बयाजं च तृतीयके ॥ ३५ ॥ परं त्वत्र त्रिसंख्याङ्कं नुस्रुत्खारिजकेऽपि च ॥ बयाजं शकुने पूर्वं बयाजं हि तृतीयके ॥३६॥

---

१ 'अपि माषं मषं कुर्याच्छन्दोभङ्गं न कारयेत्' इति पिङ्गलशास्त्रोक्त्यात्र वृत्तवशाच्छकलनामानि विविधप्रकारैर्दर्शितानि.

अर्थ—इसलिये अब्जद पंक्तिके पहले घरमें लह्यान शकल रक्खी गई है. ऐसे ही दूसरे घर हुमरा और तीसरे घर बयाज शकल है ॥ ३५ ॥ यहां तीन ३ अंकसंख्या तो नुस्तुत्खारिज शकलमें भी है, परंतु शकुनपंक्तिमें पहले बयाज है, इसलिये बयाज ही यहां तीसरे घरमें है ॥ ३६ ॥

धृतं नुस्नुतखारीजं नवमाच्च तृतीयके ॥ कब्जुलखारिजकेऽङ्कीशे चतुःसंख्या भवेत्किल ॥ ३७ ॥ अङ्कीशे शुद्धभूतत्वं तुर्ये चैव तथाविधम् ॥ तस्मादङ्कीशकं तुर्ये बिन्दौ तद्भूमिसंज्ञके ॥ ३८ ॥

अर्थ—फिर इसलिये नुस्तुत्खारिज नवमे घरसे तीसरे घरमें (११ घरमें है) और कब्जुल्खारिज, अंकीश, इनमें चार ही ४ अंक संख्या होती है ॥ ३७ ॥ अंकीश शकलमें शुद्ध केवल पृथ्वीतत्त्व है, चौथा ही तत्त्व खुला हुआ है इसलिये अंकीश चौथे घरमें है, क्योंकि चौथी बिंदु पृथ्वीतत्त्वसंज्ञक है ॥ ३८ ॥

स्थापितं नवमात्तुर्ये कब्जुलखारिजकं व्यये ॥ उकलेज्जतमे पञ्चसंख्याकं दृश्यते खलु ॥ ३९ ॥ पूर्वार्द्धे शकुनस्यापि उक्लास्थानं च विद्यते । तस्मात्पञ्चमके गेहे उक्लायाः स्थापनं कृतम् ॥ ४० ॥

अर्थ—और कब्जुलखारिज शकल नवमें घरसे चौथे घर अर्थात् बारहवें १२ घरमें स्थापित की गई है. उकला तथा इज्जतमा शकलकी पांच संख्या दीखती है ॥ ३९ ॥ तहां शकुनपंक्तिमें पूर्वार्द्धमें उक्लाका स्थान किया गया है ॥ ४० ॥

इज्जतमाख्यं दलं यच्च शकुनस्योत्तरे स्थितम् ॥ तदंकं नवमादग्रे चावसानं त्रयोदशे ॥ ४१ ॥ तस्मात्त्रयोदशे गेहे इज्जतमाख्यं दलं धृतम् ॥ कब्जुद्दाखिलके षट् चातवेखारिजके तथा ॥ ४२ ॥

अर्थ—और इज्जतमा शकल शकुनपंक्तिके उत्तरार्द्ध [पिछले भागमें] है; इसलिये उसका अंक नवमेंसे आगे पांचवें अर्थात् तेरहवें १३ घरमें है ॥ ४१ ॥ इसलिये विन्दहपंक्तिके तेरहवें घरमें ही इज्जतमा शकल स्थापित की है. और कब्जुल्दाखिल तथा अतवेखारिज शकलमें बिंदुओंकी, छह ६ संख्या होती है ॥ ४२ ॥

पूर्वव्यवस्थया षष्ठे कब्जुद्दाखिलकं धृतम् ॥ अतवेखारिजं चापि शक्रगेहे प्रतिष्ठितम् ॥ ४३ ॥ सप्तसंख्या च फरहे नुस्रुद्दाखिलके तथा ॥ फरहा सप्तमे गेहे नुस्रुद्दाखिलकं तिथौ ॥ ४४ ॥

अर्थ—[तहां] पहलेकी व्यवस्थाकरके छठे घर कब्जुद्दाखिल है और अतवेखारिज शकल चौदहवें १४ घरमें स्थापित की है ॥ ४३ ॥ फरहा और नुस्रुद्दाखिल शकलमें सात ७ ही संख्या होती है, सो फरहा तो सातवें घर और नुस्रुद्दाखिल पंद्रहवें घरमें रक्खी है; क्योंकि ९ से पंद्रहवां घर ७ संख्यापर है. [यहां सब जगह नवमा घर भी गिनना चाहिये] ॥ ४४ ॥

नक्यष्टमे च नवमे चातवेदाखिलं स्मृतम् ॥ दशमे तरिखा ज्ञेया जमातं षोडशे तथा ॥ ४५ ॥ अन्यत्प्रयोजनं त्वत्र तद्वदाम्यधुना किल ॥ वस्तूनां नामकथने चाङ्कस्यानयने तथा ॥ ४६ ॥

अर्थ—आठवें घर नकी और नवमे घर अतवेदाखिल है तथा दशवें घर तरिखा शकल जाननी. जमात सोलहवें १६ घरमें है ॥ ४५ ॥ यहां और भी प्रयोजन है सो अब कहते हैं—कि वस्तुओंके नामकथनमें और अंक लानेमें भी इसका प्रयोजन आता है ॥ ४६ ॥

तुरीयस्याब्जदाख्यस्य व्यवस्थेयं कृता मया ॥ पञ्चमं च मिजाजाख्यं क्रमं वक्ष्यामि तस्य वै ॥ ४७ ॥ ग्रहक्रमं च तस्याऽस्ति उर्ध्वाधःक्रमणेन वै ॥ भूमेश्चन्द्रज्ञदैत्येज्यसूर्यारेज्याऽऽर्किणां क्रमात् ॥ ४८ ॥

अर्थ—इस प्रकारसे यह मैंने चौथी अब्जद पंक्तिकी व्यवस्था कही और पांचवीं मिजाजनामक पंक्ति है तिसके भी क्रमको कहते हैं ॥ ४७ ॥ तिस (मिजाज पंक्तिमें) ऊपर और नीचेके क्रमकरके ग्रहोंका क्रम है. भूमि (राहु, केतु), चंद्रमा, बुध, शुक्र, सूर्य, मंगल, बृहस्पति, शनि इनके क्रमकरके जानना ॥ ४८ ॥

---

१ भूमेरिति कथनेनात्र राहुकेतुग्रहणमेव ज्ञेयं न तु पृथ्व्याः । "ग्रसत्यर्कमिन्दुर्विधुं भूमिभा वा" इत्यादिवचनेन भूमिभैव राहुकेतुबिम्बः इति । अत्र पूर्वं गणनमात्रक्रमस्तु सूर्यादारभ्य 'शुक्रज्ञशीतांशु' इत्यादि ।

आकाशे मण्डलानि स्युरूर्ध्वमूर्ध्वं क्रमेण च ॥ ग्रहेष्वर्हत्वमर्कस्य तस्मात्पूर्वं रविर्धृतः ॥ ४९ ॥ ततः शुक्रज्ञशीतांशुमन्दजीवकुजाः क्रमात् ॥ भौमस्याग्रे राहुकेतू मिजाजाख्ये त्वयं विधिः ॥ ५० ॥

अर्थ—क्रमकरके ऊपर २ आकाशमें ग्रहोंके मंडल हैं, परंतु ग्रहोंमें मुख्यता (प्रधानता) सूर्यको ही है इसलिये पहले सूर्य स्थापित करना ॥ ४९ ॥ पीछे शुक्र, बुध, चंद्रमा, शनि, बृहस्पति, मंगल इस क्रमसे जानने. मंगलसे आगे राहु केतु हैं. मिजाज पंक्तिमें यह विधि है ॥ ५० ॥

द्वे द्वे खण्डे ग्रहाणां हि रव्यादीनां प्रकीर्त्तिते ॥ कब्जुदाखिलकं नुस्रुतखारिजं च रवेः स्मृतम् ॥ ५१ ॥ प्रथमं शकुने कब्जुदाखिलं हि प्रकीर्त्तितम् ॥ तस्मात् मिजाजे प्रथमे गृहे कब्जुलदाखिलम् ॥ ५२ ॥

अर्थ—सूर्य आदि ग्रहोंकी दो २ शकलें कही हैं. कब्जुद्दाखिल, नुस्रुत्खारिज, ये २ सूर्यकी शकलें हैं ॥ ५१ ॥ शकुनपंक्तिमें पहले कब्जुद्दाखिल है, इसलिये मिजाजपंक्तिमें पहले घरमें कब्जुद्दाखिल शकल है ॥ ५२ ॥

वर्त्तते शुक्रखण्डे द्वे फरहाऽतवदाखिले ॥ प्रथमं फरहा चास्ति प्रकृतेश्च विपर्ययात् ॥ ५३ ॥ नाङ्गीकृतं च तत्तस्मात्तदग्रेऽतवदाखिलम् ॥ निवेशितं च प्रकृतेः साम्यत्वात्तदनेकधा ॥ ५४ ॥

अर्थ—फरहा, अतवेदाखिल ये दो शकलें शुक्रकी हैं. शकुनपंक्तिमें पहले फरहा ही शकल है परंतु प्रकृतिके विपर्यय होनेसे ॥ ५३ ॥ यहां उसका ग्रहण न किया किंतु उससे आगे स्थित हुई अतवेदाखिल शकल अनेक प्रकारसे समान प्रकृति होनेसे (यहां दूसरे घरमें) स्थापित की गई है ॥ ५४ ॥

द्वे खण्डे च बुधस्यापि जमातेज्जतमे तयोः ॥ जमाताख्यं प्रथमकं तस्मादत्र निवेशितम् ॥५५॥ बयाजं च तरीखाख्यं शशिनः खण्डकद्वयम् ॥ बयाजं प्रथमं तस्मादत्रापि प्रथमे स्थितम् ॥ ५६ ॥

अर्थ--जमात इज्जतमा ये दो शकलें बुधकी हैं. जमात [शकुनमें] पहले है इसलिये यहां पहले [तीसरे घरमें] रक्खी है ॥ ५५ ॥ बयाज, तरिखा ये दो शकलें चंद्रमाकी हैं. [शकुनमें] पहले बयाज है इसलिये यहां भी प्रथम [चौथे] घरमें स्थित है ॥ ५६ ॥

अंकीशोकलके खण्डे रविजस्य प्रकीर्तिते ॥ शकुने पूर्वमुक्तत्वादुक्लायाः प्रथमे स्थितिः ॥५७॥ लह्यानत्नुसुद्दाखीले गुरोः खण्डे प्रकीर्तिते ॥ प्रथमं लह्यानशकलं तस्माल्लह्यानकं धृतम् ॥ ५८ ॥

अर्थ—अंकीश, उकला ये दो शकलें शनैश्वरकी कहीं हैं, सो शकुनपंक्तिमें पहले होनेसे यहां प्रथम [पांचवें घरमें] उकला शकल रक्खी गयी है ॥ ५७ ॥ लह्यान, नुस्नुदाखिल ये बृहस्पतिकी शकलें कहीं हैं. [शकुनपंक्तिमें] पहले लह्यान शकल है इसलिये [छठे घर] लह्यान रक्खी है ॥ ५८ ॥

हुमरा च नकी खण्डे भौमस्यैव प्रकीर्त्तिते ॥ हुमरा प्रथमोक्तत्वान्निविष्टात्रापि सा खलु ॥५९॥ तदग्रे राहुशकलं कब्जुलखारिजकं धृतम् ॥ एवं दलानामष्टानां स्थापनं च कृतं बुधैः ॥ एवं चापरखण्डानामष्टानां नवमाद् गृहात् ॥ ६० ॥

अर्थ—हुमरा, नकी ये दोनों शकलें बुधकी हैं. शकुनमें पहले हुमरा होनेसे यहां [सातवें घरमें] हुमरा ही बैठी है ॥ ५९ ॥ तिससे आगे कब्जुलखारिज राहुकी शकल आठवें ८ घर रक्खी है. पंडितजनोंने इस प्रकारसे आठ शकलोंका स्थान किया है. और इसी प्रकारसे नवमे घरसे अगले आठ खंडोंका [शकलोंका] [सूर्य आदि ग्रहोंके ही क्रमसे] स्थापन करना ॥ ६० ॥

मिजाजपंक्त्यां शकलं खण्डक्रममुदीरितम् ॥ मिजाजः कार्यसिद्ध्यर्थं वासरज्ञाननिर्णये ॥६१॥ हर्फाख्यं रससंख्यं च तत्स्थानस्य विधिं ब्रुवे ॥ अग्नितत्त्वं हि तत्त्वेषु मुख्यं लह्यानके स्थितम् ॥ ६२ ॥

अर्थ—यह मिजाज पंक्तिविषे शकलोंके रखनेका क्रम कहा. यह मिजाजपंक्ति कार्यकी सिद्धि तथा वारके निश्चय करनेके लिये कही है ॥ ६१ ॥ छठी हर्फा

नामक पंक्ति है तिसके स्थानोंकी विधिको कहते हैं—सब तत्त्वोंमें अग्नितत्त्व मुख्य है सो लह्यान शकलमें स्थित है ॥ ६२ ॥

तस्मादाद्ये च लह्यानं धृतमन्यत्क्रमं शृणु ॥ वर्णाम्नाये त्वकाराख्यं प्रथमं ब्रह्मणा कृतम् ॥ ६३ ॥ आकाशश्चास्ति लह्याने तस्मात्पूर्वं निवेशितम् ॥ अङ्कीशं तद्द्वितीये यत्कीर्त्तितं तद्विधिं ब्रुवे ॥ ६४ ॥

अर्थ—इसलिये पहले घरमें लह्यान रक्खी है. अन्य क्रमको भी सुनो—वर्णोंकी मर्यादामें पहले ब्रह्माजीने अकार किया है ॥ ६३ ॥ सो अकार लह्यानमें है इसलिये पहले घरमें स्थापित की है; जो कि दूसरे घरमें अंकीश रक्खी है उसकी विधिको कहते हैं ॥ ६४ ॥

लह्यानस्य विरोधीदं शकलं तत्र संस्थितम् ॥ वायोर्बिन्दुश्च हुम्रायां स्थितं वर्णं वकारकम् ॥ ६५ ॥ तस्मात्तृतीयगेहे वै हुम्राखण्डस्थितिः कृता ॥ बयाजं तद्वैपरीत्ये स्थितं गेहे चतुर्थके॥६६॥

अर्थ—यह शकल लह्यानकी विरोधी है इसलिये वहां दूसरे घरमें स्थित है. हुमरामें वायुकी विंदु और वकार स्थित है ॥ ६५ ॥ इसलिये हुमरा शकलकी स्थिति तीसरे घरमें की है, बयाज शकल उससे [हुमरासे] विपरीत है इसलिये चौथे घरमें स्थित है ॥ ६६ ॥

विरोधित्वात्तत्समीपे सर्वखण्डेष्वयं विधिः ॥ केवलेनैव तत्त्वेन चाग्निवायूद्भवेन च ॥ ६७ ॥ गृहाः खण्डद्वये जाता नीरभूम्योर्विलोमतः ॥ एवं केवलतत्त्वेभ्यः क्रमात् खण्डचतुष्टयम् ॥ ६८ ॥

अर्थ—विरोधी होनेसे उसके समीप रक्खी है. सभी खंडोंमें यह विधि जान लेनी. केवल तत्त्वसे अग्नि व वायुसे ॥ ६७ ॥ दो शकलोंविषे जल और भूमिके विरोधसे ही [चार ४] घर भये हैं, ऐसे फिर [केवल] एक २ तत्त्वसे ही चार घरोंका क्रम भया है ॥ ६८ ॥

तत्त्वद्वयाभ्यामन्यस्य खण्डस्य संस्थितिं कुरु ॥ नीरभूमी स्थिते तत्त्वे नुक्षुद्दाखिलके खलु ॥६९॥ तेन पञ्चमगेहस्थं

नुसुदाखिलखण्डकम् ॥ रिपुगेहे च तत्स्पर्द्धिनुसुत्स्वारिजकस्थितिः ॥ ७० ॥

अर्थ—और दो तत्त्वोंसे अन्य शकलकी स्थिति करो. जल और पृथ्वी तत्त्व नुसुदाखिल शकलमें स्थित है ॥ ६९ ॥ इसलिये नुसुदाखिल शकल पांचवें घरमें स्थित है और इससे विरोध रखनेवाली नुसुत्खारिज शकल छठे घरमें स्थित है ॥७०॥

वायुभूमिजलाख्यानि तत्त्वान्यातवदाखिले । अतः सप्तमगेहे वै चातवेदाखिलं धृतम् ॥ ७१ ॥ अष्टमे तद्विपर्यासं स्थितं चातवखारिजम् ॥ वह्नेर्वायोश्च भूमेश्च फरहायां त्रितत्त्वकम्॥७२॥

अर्थ—अतवेदाखिल शकलमें वायु, पृथ्वी, जल ये तत्त्व हैं इसलिये सातवें घरमें अतवेदाखिल रक्खी है ॥ ७१ ॥ आठवें घरमें उससे विपरीत रहनेवाली अतवेखारिज शकल है. फरहा शकलमें अग्नि, वायु, पृथ्वी ये तीन तत्त्व हैं ॥ ७२ ॥

तस्मान्नवमके गेहे फरहास्थापनं कृतम् । नकी च दशमे गेहे वैपरीत्येन तत्स्थितिः ॥ ७३ ॥ तत्त्वे द्वे वायुभूम्योश्च कब्जुदाखिलखण्डके ॥ तस्मादेकादशे गेहे खण्डं च कब्जुदाखिलम्॥७४॥

अर्थ--इसलिये फरहा शकल नवमे घरमें स्थापित की है, इससे विपरीत रहनेवाली नकी शकल दशवें घरमें स्थित की है ॥ ७३ ॥ कब्जुदाखिल शकलसे वायु और पृथ्वी ये दो तत्त्व हैं इसलिये कब्जुदाखिल शकल ग्यारहवें घरमें स्थित है ॥७४॥

द्वादशे तद्विपर्यासं कब्जुल्खारिजकं धृतम् ॥ जमातोकलकेज्जतमातरिखाश्च चतुष्टयम् ॥ ७५ ॥ विश्वे चतुर्दशे पञ्चदशे षोडशके धृतम् ॥ एवं च हारफाख्यायां पंक्त्यां ज्ञेयः क्रमो बुधैः ॥ ७६ ॥

अर्थ—और इससे विपरीत रहनेवाली कब्जुल्खारिज शकल बारहवें घरमें रक्खी है. जमात, उकला, इज्जतमा, तरिखा, ये चार शकल ॥ ७५ ॥ क्रमसे तेरहवें चौदहवें पंद्रहवें सोलहवें घरमें स्थापित की हैं; हरफा पंक्तिमें पंडित जनोंने ऐसा क्रम जानना ॥ ७६ ॥

परं त्वक्षररीत्यायं क्रमो म्लेच्छैः प्रकीर्तितः ॥ अस्सहाख्यस्य पङ्क्तेश्च स्थापने कारणं गृहे ॥७७॥ न दृष्टं न श्रुतं तस्मात्तत्तथैव धृतं मया ॥ कारणं सप्तपङ्क्तीनां कृतं पूर्वानुसारतः ॥ ७८ ॥

अर्थ—परंतु अक्षरोंकी रीतिसे यह क्रम म्लेच्छोंने कहा है और अस्सह नामक पंक्तिके घरमें स्थापन करने विषे कोई कारण ॥ ७७ ॥ नहीं देखा और न सुना, इसीसे मैंने वह पंक्ति उसी प्रकारसे [ज्योंकी त्यों] स्थापित की है. ऐसे सात पंक्तियोंका कारण पूर्व आचार्योंके अनुसार किया है ॥ ७८ ॥

पुनश्च सुखबोधार्थं बालानां हि क्रमं ब्रुवे ॥ शकुनस्य क्रमः पूर्वं प्रोक्तो हि विधिना खलु ॥ ७९ ॥ इदानीं कथ्यते पश्चादब्दहाख्यं यथाक्रमम् ॥ लह्यानं हुमरा नुस्रुत्खारिजं च बयाजकम् ॥ ८० ॥

अर्थ—फिर भी बालकोंको सुखपूर्वक बोध होनेके लिये स्पष्ट कहते हैं. शकुन पंक्तिका तो क्रम विधिपूर्वक पहिले ही कहा है ॥ ७९ ॥ अब फिर अब्दह पंक्तिको यथाक्रमसे कहते हैं—लह्यान १, हुमरा २, नुस्रुत्खारिज ३, बयाज ४, ॥ ८० ॥

कब्जुल्खारिजकेज्जतमे चातवेखारिजं तथा ॥ अङ्कीशं चोकला कब्जुद्दाखिलं फरहाभिधम् ॥ ८१ ॥ नुस्रुद्दाखिलनकी चातव्दाखिलं तरिखाभिधम् ॥ जमातमब्दहे पंक्त्यां क्रमेण कथितं मया ॥ ८२ ॥

अर्थ—कब्जुलखारिज ५, इज्जतमा ६, अतवेखारिज ७, अंकीश ८, उकला ९, कब्जुद्दाखिल १०, फरहा ११, ॥ ८१ ॥ नुस्रुद्दाखिल १२, नकी १३, अतवेदाखिल १४, तरिखा १५ और जमात १६, इस प्रकार क्रमकरके अब्दहपंक्तिमें ये शकलें कही हैं ॥ ८२ ॥

फरहा लह्यानकं चातव्दाखिलं च बयाजकम् ॥ तरिखा कब्जुखारीजं हुमराङ्कीशकौ तथा ॥ ८३ ॥ नुस्रुतुल्खारिजं चोक्लेज्जत्मा च नुस्रुदाखिलम् ॥ अतवेखारिजं चैव नकी कब्जुलदाखिलम् ॥ ८४ ॥

अर्थ—और फरहा १, लह्यान २, अतवेदाखिल ३, बयाज ४, तरिखा ५, कब्जुल्खारिज ६, हुमरा ७, अंकीश ८, ॥ ८३ ॥ नुस्रुत्खारिज ९, उक्का १०, इज्जतमा ११, नुस्रुदाखिल १२, अतवेखारिज १३, नकी १४, कब्जुल्दाखिल १५ ॥ ८४ ॥

जमातं विज्दहाख्यायां पंक्त्यामेवं क्रमो भवेत् ॥ लह्यान्हुम्रा बयाजाख्यमङ्कीशमुकलाभिधम् ॥ ८५ ॥ कब्जुदाखिलं फरहा नकी चातवदाखिलम् ॥ तरिखा नुस्रुखारीजं कब्जुल्खारिजकं ततः ॥ ८६ ॥

अर्थ—जमात १६ विज्दहपंक्तिमें इस प्रकारसे क्रम है. और लह्यान १, हुम्रा २, बयाज ३, अंकीश ४, उकला ५ ॥ ८५ ॥ कब्जुदाखिल ६, फरहा ७, नकी ८, अतवेदाखिल ९, तरिखा १०, नुस्रुत्खारिज ११, कब्जुल्खारिज १२ ॥ ८६ ॥

इज्जत्मातवखारीजे नुस्रुदाखिल्जमातके ॥ अब्जदाख्यस्य पङ्क्तेस्तु क्रमोऽयं गदितो मया ॥ ८७ ॥ कब्जुदाखिलं चातवदाखिलं च जमातकम् ॥ बयाजमुक्ला लह्यानं हुम्राकब्जुलखारिजम् ॥ ८८ ॥

अर्थ—इज्जतमा १३, अतवेखारिज १४, नुस्रुदाखिल १५, जमात १६, ऐसे यह क्रम मैंने अब्जदपंक्तिका कहा है ॥ ८७ ॥ और कब्जुदाखिल १, अतवेदाखिल २, जमात ३, बयाज ४, उकला ५, लह्यान ६, हुम्रा ७, कब्जुलखारिज ८, ॥ ८८ ॥

नुस्रुतुल्खारिजं फरहेज्जतमातरिखाभिधम् ॥ अङ्कीशनुस्रुदाखीले नकी चातवखारिजम् ॥ ८९ ॥ पङ्क्तेर्मिजाजसंज्ञायाः शकलानां क्रमोऽकथि ॥ लह्यानाङ्कीशकौ हुम्राबयाजौ नुस्रुदाखिलम् ॥ ९० ॥

अर्थ—नुस्रुत्खारिज ९, फरहा १०, इज्जतमा ११, तरिखा १२, अंकीश १३, नुस्रुदाखिल १४, नकी, १५ अतवेखारिज १६, ॥ ८९ ॥ ऐसे यह शकलोंका क्रम मिजाज नामक पंक्तिका कहा है और लह्यान १, अंकीश २, हुम्रा ३, बयाज ४, नुस्रुदाखिल ५, ॥ ९० ॥

नुस्नुत्खारिजकं चैवातवदाखिलखारिजौ ॥ फरहा च
नकी कब्जुद्दाखिलं खारिजं तथा ॥ ९१ ॥ जमात-
मुकलेज्जतमे तरिखाप्येवं क्रमश्च हर्फायाः ॥ लह्याना-
तवदाखिलमतवेखारिजजमातफरहाख्याः ॥ ९२ ॥

अर्थ—नुस्नुत्खारिज ६, अतवेदाखिल ७, अतवेखारिज ८, फरहा ९, नकी १० कब्जुद्दाखिल ११, कब्जुल्खारिज १२, ॥ ९१ ॥ जमात १३, उकला १४, इज्जतमा १५, तरिखा १६, ऐसे हरफानामक पंक्तिका क्रम है. और लह्यान १, अतवेदाखिल २, अतवेखारिज ३, जमात ४, फरहा ५, ॥ ९२ ॥

हुमरा नक्युक्ला नुस्नुत्खारिजदाखिलाभिधौ क्रमशः ॥
कब्जुद्दाखिलखारिजबयाजावङ्कीशानि खण्डकानि स्युः
॥ ९३ ॥ इज्जतमा तरिखा वै क्रम एवमसहाख्यायाम् ॥
एवं प्रोक्तः क्रमो वै सप्तपङ्क्तीनां पृथक् पृथक् ॥ ९४ ॥

अर्थ—हुमरा ६, नकी ७, उक्ला ८, नुस्नुत्खारिज ९, नुस्नुद्दाखिल १०, कब्जुद्दाखिल ११, कब्जुल्खारिज १२, बयाज १३, अंकीश १४, ये शकल ॥ ९३ ॥ और इज्जतमा १५, तरिखा १६, ऐसे यह क्रम अससहपंक्तिमें है. इस प्रकारसे इन सात पंक्तियोंका क्रम अलग २ कह दिया है ॥ ९४ ॥

इति सप्तपङ्क्तिस्थापनप्रकारः ।

॥ इति श्रीरमलनवरत्न-भाषाटीकायां सप्तपंक्तिस्थापनप्रकारः ॥

इससे आगे जो चक्र लिखा है उसमें इन सात पंक्तियोंविषे इस ही प्रकारसे ये सब शकलें स्पष्टरूपसे लिखी हैं—

५

अब इस चक्रमें सातो, पंक्तियोंका स्थापनप्रकार स्पष्ट करके लिखते हैं.

	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	गृहांकाः
१	·III	I·I·	·I·I	IIII	··I·	·II·	III·	I·II	II·I	··II	II··	···I	·I··	I···	I··I	····	शकुनपंक्तिः १
२	·III	I·II	··II	II·I	·I·I	I··I	···I	III·	·II·	I·I·	··I·	II··	·I··	I···	····	IIII	अ १ व २ द ४ ह ८ पंक्तिः २
३	··I·	·III	I···	II·I	····	·I·I	I·II	III·	··II	·II·	I··I	II··	···I	·I··	I·I·	IIII	वि २ ज ७ द ४ ह ८ पंक्तिः ३
४	·III	I·II	II·I	III·	·II·	I·I·	··I·	·I··	I···	····	··II	·I·I	I··I	···I	II··	IIII	अ १ व २ ज ३ द ४ पंक्तिः ४
५	I·I·	I···	IIII	II·I	·II·	·III	I·II	·I·I	··II	··I·	I··I	····	III·	II··	·I··	···I	मिजाजपंक्तिः ५
६	·III	III·	I·II	II·I	II··	··II	I···	···I	··I·	·I··	I·I·	·I·I	IIII	·II·	I··I	····	हरफापंक्तिः ६
७	·III	I···	···I	IIII	··I·	I·II	·I··	·II·	··II	II··	I·I·	·I·I	II·I	III·	I··I	····	अस्सहपंक्तिः ७

प्रयोजनं च सर्वेषां पूर्वं कथितवान् किल ॥ खण्डं प्रस्तारके यत्र गृहे च पतितं किल ॥ ९५ ॥ शकुनादिषु पंक्तिषु तद्गृहे बलवान् भवेत् ॥ द्वित्र्यादिके गृहे यत्र यदि स्यादधिकं बलम् ॥ ९६ ॥ नो! चेच्छून्यबलं ज्ञेयं बलमेवं विचारयेत् ॥ दृष्टेर्बलं तृतीयं स्यात्तत्प्रकारोऽभिधीयते ॥ ९७ ॥ पश्यन्त्यन्योन्यखण्डानि सप्तमं सप्तमं पुनः ॥ द्वादशेष्वेव गेहेषु नाग्रे दृष्टिः प्रवर्त्तते ॥ ९८ ॥

अर्थ—इन सबोंका प्रयोजन तो पहले कहचुके हैं, और जो शकल प्रस्तारमें जहां [प्रश्नके] घरमें पड़ी हो फिर शकुन आदि पंक्तिविषे जिस घरमें पड़े उसही घरमें बलवान् जाननी और जो शकल प्रस्तारमें दो तीन घरोंमें पड़ी हो वह भी बलवान् है. [यह दूसरा प्रकार है] ॥९५॥९६ ॥ नहीं तो शून्यबल अर्थात् बल नहीं है. ऐसे बल विचारै. ऐसे बलाबल देखै. तीसरा बल दृष्टिका जानना. उसका प्रकार कहते हैं ॥ ९७ ॥ सब शकल आपसमें सातवीं सातवीं शकलको देखती हैं फिर भी तिनमें यह दृष्टि बारह १२ ही घरोंमें प्रवृत्त होती है अर्थात् प्रथम घरसे बारहवीं शकलतक यह विचार है. आगे नहीं पहुँचती ॥ ९८ ॥

शुभेन स्वेन मित्रेण खण्डं यच्च निरीक्षितम् ॥ तत्खण्डं बलसंयुक्तमेवं ज्ञेयं विचक्षणैः ॥ ९९ ॥ पापेन शत्रुणा वापि दृष्टं चेन्निर्बलं तु तत् ॥ प्रश्ने हि शकलं चेत्स्याद्बलयुक्तं च कार्यकृत् ॥ १०० ॥

अर्थ—जो शकल शुभ शकलकरके अथवा अपने मित्र शकलकरके देखी जाती हो वह शकल बलसंयुक्त है, ऐसे पंडित जनोंने जनाना ॥ ९९ ॥ जो पाप शकलकरके अथवा शत्रुकरके देखा गया हो वह घर निर्बल होता है. जो यदि प्रश्नघरमें बलयुक्त शकल होवे तो वह कार्यको (सिद्ध) करती है ॥ १०० ॥

निर्बलं चेत्तदा कार्यनाशो ज्ञेयस्सदा बुधैः ॥ तस्माद्बलाबलं पूर्वं निरीक्ष्य च फलं वदेत् ॥ १०१ ॥ एवं बलविचारे च रत्नं ज्ञेयं द्वितीयकम् ॥ १०२ ॥

अर्थः—निर्बल हो तो कार्यका नाश होवे ऐसे पंडितजनोंने सदा जानना. इसी-लिये पहले बलाबलको विचार कर, फिर फलको कहे ॥ १०१ ॥ ऐसे बलाबलके विचार करनेमें यह दूसरा रत्न जानना ॥ १०२ ॥

इति श्रीसनाढ्यकुलावतंसपरमसुखोपाध्यायकृते रम्लनवरत्ने बलाबलविचारो नाम द्वितीयरत्नं समाप्तम् ॥ २ ॥

इति श्रीवेरीग्रामनिवासिगौडवंशोद्भवद्विजशालग्रामात्मजबुधवसतिराम-विरचितरमलनवरत्नचंद्रिकानामभाषाटीकायां बलाबलविचारो नाम द्वितीयं रत्नं समाप्तम् ॥ २ ॥

अथ प्रश्नोपकरणज्ञानार्थं तृतीयं रत्नं प्रारभ्यते ३।

अब प्रश्नोपकरणके ज्ञानके वास्ते तीसरे रत्नका प्रारंभ करते हैं—

विनोपकरणं सर्वकार्यसिद्धिर्न जायते ॥ अत एवोपकरणं पूर्वं वक्ष्ये च षड्विधम् ॥ १ ॥ तेषां ज्ञानं यदा नास्ति प्रश्नस्तर्हि वृथा भवेत् ॥ तेषां नामान्यहं वक्ष्ये लक्षणानि तथैव च ॥२॥

अर्थ—(उपकरण) प्रश्नसाधन सामग्रीके विना कार्यकी सिद्धि नहीं होती है इस लिये पहले छह प्रकारके उपकरणोंको कहेंगे ॥१॥ यदि उनका ज्ञान नहीं हो तो प्रश्न (बताना) वृथा है. अब मैं उनके नामोंको और लक्षणोंको कहूंगा ॥ २ ॥

मरातिबं च प्रथममन्यदिमतिजाजकम् ॥ तासीरकं तृतीयं च तकरारं चतुर्थकम् ॥ ३ ॥ इन्किलावं पंचमं च षष्ठं चैव बलाबलम् ॥ यस्य ज्ञानं भवेदेषां स च प्रश्नं ध्रुवं वदेत् ॥ ४ ॥

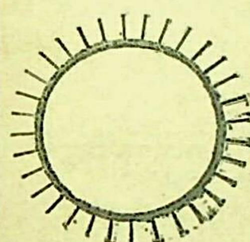
अर्थ—प्रथम १ मरातिबनामक, दूसरा २ इमतिजाजक, तीसरा ३ तासीरक नाम और चौथा ४ तकरारनामक है ॥ ३ ॥ पांचवां ५ इन्किलाव, छठा ६ बलाबल है. जिसको इनका ज्ञान है वह प्रश्नको अच्छी तरह बतावे ॥ ४ ॥

सर्वेषां मूलभूतं हि पाशकं परिकीर्तितम् ॥ तदभावे विधिं वक्ष्ये शकलोत्पादनेऽधुना ॥ ५ ॥ श्वासं नियम्य रेखां च वृत्ताकारं च कारयेत् ॥ रश्मिवत्तत्र रेखानां समुदायं बुधो लिखेत् ॥ ६ ॥

अर्थ—सब प्रश्नोंका मूलरूप पाशे कहे हैं, वे पांशे नहीं होवें तो अब उनके अभावमें शकल बनानेकी विधिको कहते हैं ॥ ५ ॥ श्वासको रोंकके [वृत्ताकार] गोल आकारसे रेखा निकाले. बुद्धिमान् किरणोंकी तरह रेखाओंका समूह लिखे ॥ ६ ॥

रेखाङ्कतुल्यं शकलं शकुनस्य क्रमेण च ॥ प्रथमं स्थापयेत्तस्मात्सप्तमं च द्वितीयकम् ॥ ७ ॥ तत्सप्तमं तृतीयं तत्सप्तमं च चतुर्थकम् ॥ तेभ्यः प्रस्तारकं कुर्यात् पूर्वोक्तेनैव वर्त्मना ॥८॥

अर्थ—पीछे रेखाओंकी गिनतीके समान शकुनपंक्तिके क्रमकरके जो संख्या हो उस ही शकलको स्थापित करै फिर उससे सातवें घरकी शकलको दूसरी बनावे, उससे सातवींको चौथी शकल बनावे ॥ ७ ॥ उससे सातवींको तीसरी बनावे, पीछे उनसे पूर्वोक्त प्रकारसे ही प्रस्तार बना लेवे ॥ ८ ॥



ऐसे एक श्वाससे रेखा बनानी यह चक्र रूप है.

षोडशाधिकरेखायां षोडशं शोधयेत्ततः ॥ शेषाङ्केनैव शकलं वेदसंख्यं च कारयेत् ॥ ९ ॥ प्रस्तारं पूर्ववत्कृत्वा पाशकासम्भवे सति ॥ पाशके विद्यमाने तु पाशकेनैव कारयेत् ॥ १० ॥

अर्थ—जो वे (वृत्ताकार) रेखा सोलहसे अधिक हो गई हों तो सोलहका भाग देवे, जो अंक बाकी रहे उसमें ही चार शकल निकाल लेवे ॥ ९ ॥ पांशे नहीं हों तो इस विधिसे पूर्वोक्त प्रकारसे प्रस्तार बनाना. जो पांशे हों तो पाशोंसे ही बनाना ॥ १० ॥

---

१ जो सोलह रेखासे अधिक रेखा होवें तो १६ का भाग देवे. जैसे–इस चक्रमें ३२ रेखा हैं तो १६ का भाग दिया तरिखा १६ वीं शकल जानो फिर शकुनपंक्तिमें इससे सातवीं देख यही क्रम जानो ।

प्रश्नार्थं पाशकं क्षिप्त्वा प्रस्तारं कारयेत्सुधीः ॥ इन्किलावं ततस्तस्य प्रस्तारस्य च कारयेत् ॥ ११ ॥ इन्किलावं विना प्रश्नतथ्यता नैव जायते ॥ तस्मादावश्यकं कुर्यादिन्किलावं सदा बुधैः ॥ १२ ॥

अर्थ—पंडितजन प्रश्नके वास्ते पांशे डालके, पीछे प्रस्तार बनावे. पीछे तिस प्रस्तारका इन्किलाव बनावे ॥ ११ ॥ इन्किलावके विना प्रश्न सत्य नहीं होता है. इसलिये पंडित जनोंने अवश्य इन्किलाव बनाना ॥ १२ ॥

सर्वेषां सम्मतं श्रेष्ठं सर्वप्रश्नस्य कारणम् ॥ इन्किलावं तु प्रथमं कथ्यतेऽतिचमत्कृतम् ॥ १३ ॥ आद्येन पञ्चमं हत्वा षष्ठेनैव द्वितीयकम् ॥ तृतीयं सप्तमेनैव चतुर्थं चाष्टमेन च ॥१४॥

अर्थ—यह (इन्किलाव) सबका संमत है और सब प्रश्नोंका कारण है अत्यंत चमत्कार करनेवाला इन्किलाव तो प्रथम ही कहते हैं ॥ १३ ॥ कि (प्रस्तारकी) प्रथम शकलसे पांचवींकी जर्ब करै, छठींसे दूसरीको, सातवींसे तीसरीको और आठवींसे चौथी शकलको हनन (जर्ब) करै ॥ १४ ॥

तदुद्भवानि खण्डानि चत्वार्यादौ लिखेत्पुनः ॥ पूर्वोक्तेनैव मार्गेण प्रस्तारं कार्येद्बुधः ॥ १५ ॥ तस्माच्च सकलान् प्रश्नान् कथयेत् प्रश्नकोविदः ॥ नान्यथा प्रश्नसिद्धिस्तु भवेज्जानन्तु पण्डिताः ॥ १६ ॥

अर्थ—तिन्होंसे उत्पन्न हुई चार शकलोंको आदिमें लिखै. पीछे पूर्वोक्त प्रकारसे बुद्धिमान् जन प्रस्तार बनावे ॥ १५ ॥ पीछे प्रश्नोंको जाननेवाला पंडित तिस प्रस्तारसे संपूर्ण प्रश्नोंको कहै. इसके विना प्रश्नोंकी सिद्धि नहीं होती है. ऐसे पंडित जन जानें ॥ १६ ॥

प्रथमं नाम षण्णां हि विपरीतेन भाषितम् ॥ इदानीमिन्किलावादिक्रमः प्रोक्तोऽर्थसिद्धये ॥ १७ ॥ इन्किलावोपकरणं प्रथमं परिकीर्तितम् ॥ बलाबलविचाराख्यं द्वितीयं परिकीर्तितम् ॥ १८ ॥

अर्थ—पहले तो छह उपकरणोंका नाम विपरीत करके कहा. अब इन्किलाव आदि क्रम प्रयोजनसिद्धिके वास्ते कहा है ॥ १७ ॥ प्रथम १ इन्किलाव उपकरण है, दूसरा बलाबलनामक उपकरण है ॥ १८ ॥

मरातिबाख्यं तृतीयं विधिं तस्य वदाम्यहम् ॥ पञ्चधा तस्य नामानि प्रोच्यंते यवनादिभिः ॥ १९ ॥ चतुर्बिन्दु रुबाई स्यात् खुमासी पञ्चबिन्दुकः ॥ षड्बिन्दुकः सुदासी च सुबाई सप्तबिन्दुकः ॥ २० ॥

अर्थ—तीसरा मरातिबनामक उपकरण है, तिसकी विधिको कहते हैं-यवन आदिकोंने तिसके नाम पांच प्रकारसे कहे हैं ॥ १९ ॥ जिस शकलमें चार शून्य हों वह रुबाई जानना, पांच बिंदुवोंवाला खुमासी और छह बिंदुवोंकी सुदासी तथा सात बिंदुवोंकी शकल सुबाईनामक जाननी ॥ २० ॥

अष्टबिंदुः समानी स्यादेवम्मरातिबाह्वयम् ॥ प्रयोजनं प्रश्नसिद्धौ ब्रुवे यवनभाषितम् ॥ २१ ॥ आद्यपञ्चमयोर्वैरं वैरं च द्व्यङ्घ्रिसम्मिते ॥ परं तु स्वल्पवैरं तल्लोके जिद्दति कथ्यते ॥२२॥

अर्थ—आठ बिंदुवोंवाला समानी जानना. ऐसे मरातिब पांच प्रकारका है. यवनोंसे कहे हुए इसके प्रयोजनको भी प्रश्नकी सिद्धिमें कहेंगे ॥ २१ ॥ पहले और पांचवें घरका वैर है, दूसरे और चौथे घरका वैर है. परंतु स्वल्प वैर है इसलिये संसारमें इसको जिद कहते हैं ॥ २२ ॥

तथापि कार्यसंसिद्धौ विघ्नकर्तृ भवेत्किल ॥ निर्वैरं तु तृतीयं स्यादेवं ज्ञेयं विचक्षणैः ॥ २३ ॥ सर्वाणि खण्डकान्यत्र प्रस्तारे जिद्दके गृहे ॥ स्थितानि विघ्नकर्तॄणि शकुनस्य क्रमेण वै ॥ २४ ॥

अर्थ—तो भी यह कार्यकी सिद्धिमें विघ्न करनेवाली कही है. तीसरा घर सबसे (निर्वैर) वैररहित है. ऐसे पंडितजनोंने जानना ॥ २३ ॥ प्रस्तारमें सब ही शकल शकुनपंक्तिके क्रमकरके जिद्द नाम घरमें स्थित हुई विघ्न करनेवाली कही है ॥ २४ ॥

---

१ चार ही बिंदु तरिखामें हैं आठ बिंदु कैसे होंगी यह शंका नहीं करनी. रेखाकी दो बिंदु होती हैं इस लिये जमात ☰ अष्ट बिंदु जाननी.

इमतिजाजं चतुर्थमुपकरणं निरूप्यते ॥ द्वाभ्यां जातं च यत्खण्डं तज्ज्ञेयमिन्तिजाजकम् ॥ २५ ॥ शुभाभ्यां यदि जातं तत्कार्यसिद्धिस्तदा भवेत् ॥ तज्जातमशुभाभ्यां चेत् कार्यसिद्धिस्तदा नहि ॥ २६ ॥

अर्थ—चौथा इमतिजाज उपकरण है जो खंड [शकल] दो शकलोंसे उत्पन्न होवे वह इमतिजाजक जाननी ॥ २५ ॥ जो वह शकल दो शुभ शकलोंसे उत्पन्न हुई हो तो कार्यकी सिद्धि होवे और अशुभोंकरके हुई हो तो कार्यसिद्धि न हो ॥२६॥

शुभाशुभाभ्यां तज्जातं स्वल्पकार्यकरं स्मृतम् ॥ तुरीयं साधनं प्रोक्तं पञ्चमं तु ततः शृणु ॥ २७ ॥ तसीराख्यं च सर्वेषां मुख्यं ज्ञेयं विचक्षणैः ॥ व्याख्यानं क्रियते तस्य तज्ज्ञानं कार्यशिद्धिकृत् ॥ २८ ॥

अर्थ—एक शुभ तथा एक अशुभ ऐसी दोनोंसे भई हों तो स्वल्प कार्य करै ऐसे यह चौथा साधन तो कहा. अब पांचवेंको सुनो ॥ २७ ॥ तसीर नामवाला साधन सबोंमें मुख्य पंडितजनोंने जानना, तिसका व्याख्यान करते हैं; इसका ज्ञान होवे तो उससे कार्य सिद्ध करता है ॥ २८ ॥

आद्यं गेहं प्रश्नकर्तुर्भवेच्च तत्सम्बन्धाच्च परेषां गृहाश्च ॥ ज्ञेयाश्चेत्थं बुद्धिभेदादनेकास्तेभ्यः कुर्यात्सर्वप्रश्नांश्च तज्ज्ञः ॥ २९ ॥ कोऽप्यागत्य प्रश्नमेवं ब्रुवाणो मत्पुत्रस्य श्यालकस्यार्थलाभः ॥ आद्यं गेहं प्रश्नकर्तुश्च तस्मात्पुत्राख्यं वै तस्य पुत्रस्य वाच्यम् ॥ ३० ॥

अर्थः—पहला घर प्रश्न करनेवालेका है तिसके संबंधसे ऐसे बुद्धिबलसे बहुत अन्योंके भी घर जानने और ज्ञानी जन तिन घरोंसे सब प्रश्नोंको कहै. जैसे– ॥२९॥ कोई आके ऐसे कहै कि मेरे पुत्रके शालेको धनका लाभ होवे या नहीं? यह प्रश्न कहो तहां पहिला घर प्रश्नकर्त्ताका है उससे पांचवां घर उसके पुत्रका है ॥ ३० ॥

तस्मात् खण्डात् सप्तमं पुत्रवध्वास्तत्तार्त्तीयं सोदरस्यापि तस्याः ॥ तद्द्रव्यस्य तद्दितीयं प्रतिष्ठमेवं चाद्यात्तद्धनस्यैव गेहम् ॥ ३१ ॥

सम्बन्धाद्वै प्रश्नगेहानि बुध्वा सर्वेषां तत्प्रोक्तरीत्या च तानि ॥ ब्रूयात्सर्वान् प्रश्नजालान्सुधीमान् वैतथ्यं स्यात् क्वापि नैवास्य चोक्तेः ॥ ३२ ॥

अर्थ—तिस शकलसे सातवां घर पुत्रकी वहूका है, तिससे तीसरा घर उस (वहूके) भाईका है तिससे दूसरा घर तिसके धनका है. ऐसे पहले ही घरसे तिस (पुत्रके शालेके) धनका घर जानना ॥ ३१ ॥ इस कही हुई रीतिसे संबंधसे ही सबोंके प्रश्नघरको जानके, बुद्धिमान् जन संपूर्ण प्रश्नजालोंको कहै तो इसकी उक्तिका (वचनकी) वैतथ्य (असत्यता) कभी न हो अर्थात् सत्य ही वचन हो ॥३२॥

एवं तसीरकं प्रोक्तं साधनं पञ्चमं मया ॥ षष्ठं वै तकराराख्यं प्रोच्यते यवनोदितम् ॥ ३३ ॥ एकस्थानस्थितं खण्डं गृहे द्वित्र्यादिके पुनः ॥ आगतं म्लेच्छभाषायां तकराराह्वयं स्मृतम् ॥ ३४ ॥

अर्थ—ऐसे मैंने पांचवां तसीरक नाम साधन भी कहा. अब यवनोंसे कहे हुए छठे तकरार नामक साधनको भी कहते हैं ॥ ३३ ॥ एक घरमें स्थित हुई शकल जो फिर (कहीं) दूसरे, तीसरे घरमें आजावे तो म्लेच्छभाषामें उसे तकरार नाम उपकरण (साधन) कहते हैं ॥ ३४ ॥

पुनरुक्तिश्च तस्यैव संज्ञा ज्ञेया स्वशास्त्रके ॥ प्रयोजनं तु तस्यैव कथ्यते यवनोदितम् ॥ ३५ ॥ प्रश्नस्य शकलं यच्च पुनः स्याद्यत्र वेश्मनि ॥ तद्वशेन फलं ज्ञेयं पूर्वोक्तेनैव वर्त्मना ॥ ३६ ॥

अर्थ—तिसकी ही पुनरुक्तिसंज्ञा अपने शास्त्रोंमे कही है. अब यवनोंमें कहे हुए तिसीके प्रयोजनको कहते हैं ॥ ३५ ॥ जो प्रश्नघरकी शकल है वह फिर कहीं जिस घरमें पड़ी हो उसीके वशसे (संबंधसे) पूर्वोक्त प्रकारके फल जानना ॥ ३६ ॥

शुभस्थाने शुभं ज्ञेयमशुभे चाशुभं वदेत् ॥ जिदस्थाने त्वशुभदमन्यत्र बहु शोभनम् ॥३७॥ विनोपकरणं ज्ञात्वा

कुर्यात्प्रश्नं तु योऽबुधः ॥ वृथा वाणी भवेत्तस्य वाच्यतां याति च ध्रुवम् ॥ ३८ ॥

अर्थ—प्रश्नघरकी शकल शुभस्थानमें शुभ और अशुभस्थानमें हो तो अशुभ जाननी, जिद्दस्थानमें पड़ी हो तो अशुभ फल देवे, अन्य जगह बहुत अच्छी है ॥ ३७ ॥ जो मूर्खजन इस प्रकारसे उपकरण (साधन) को जाने विना प्रश्न करे उसका बचन वृथा (निष्फल) होता है, निश्चय उसकी निंदा ही होती है ॥ ३८ ॥

षड्विधं साधनं शास्त्राज्ज्ञात्वा भक्तिपुरःसरम् ॥ अवश्यं प्रश्नसिद्धिः स्यान्नात्र कार्या विचारणा ॥ ३९ ॥

अर्थ—जो विद्वान् भक्तिपूर्वक छः प्रकारके इस साधनको शास्त्रसे जानके कहे उसकी प्रश्नसिद्धि अवश्य होवे इसमें कुछ विचार नहीं करना ॥ ३९ ॥

इति श्रीपरमसुखोपाध्यायकृते रमलनवरत्ने प्रश्नोपकरणं नाम तृतीयं रत्नम् ॥ ३ ॥

इति श्रीवेरीनिवासिगौडवंशोद्भवद्विजशालग्रामात्मजबुधवसतिरामविरचितरम्लचंद्रिकानामभाषाटीकायां प्रश्नोपकरणं नाम तृतीयं रत्नं समाप्तम् ॥ ३ ॥

अथ प्रश्नकथनप्रकारे चतुर्थरत्नम् ॥ ४ ॥

अब प्रश्नकथनके प्रकारविषे चौथे रत्नको कहते हैं ॥ ४ ॥

प्रश्नमूलानि प्रश्नानां गेहानि कथितानि वै ॥ पूर्वं तानि प्रवक्ष्यामि दृष्ट्वा रमलान्बहूनहम् ॥ १ ॥ तनोश्चावयवस्यापि सुखस्याप्यसुखस्य च ॥ जीवनस्यायुषश्चापि जन्मस्थानभयस्य च ॥ २ ॥

अर्थ—सब प्रश्नोंके मूलरूप घर ही कहे हैं इसलिये मैं बहुतसे रमलोंको देखके पहले तिन [घरोंको] कहता हूं ॥ १ ॥ शरीरका प्रश्न, [अवयव] अंगुली आदि अंगका, सुखका, दुःखका, जीवनका, अयुका तथा जन्मस्थानमें होनेवाला प्रश्न ॥ २ ॥

बलस्य कार्यारम्भस्य प्रयत्नस्य सुखस्य च ॥ नृपनीतेश्च शांतेश्च ज्ञेयानि प्रथमाद् गृहात् ॥ ३ ॥ धनस्य तत्सहायस्य पार्श्व-

स्थमनुजस्य च ॥ जीविकायाः सहायस्याप्यागमस्योद्य-
मस्य च ॥ ४ ॥

अर्थ—बलका कार्य आरंभ करनेका, वर्णोंके स्थानप्रयत्नका, मुखका, राजनीतिका, शांतिका ये सब प्रश्न पहले घरसे जानने ॥ ३ ॥ धनका, तिस धनकी सहाय करनेवालेका, पास बैठे हुए मनुष्यका, आजीविकाका, सहायकका, आगमनका, उद्यमका प्रश्न ॥ ४ ॥

क्रयविक्रययोर्वापि प्रश्न आढ्यवराकयोः ॥ दातृकृपणयोश्चापि
प्रश्नो वाच्यो धनालयात् ॥५॥ सहोदराणां बन्धूनां भगिन्याः
स्वप्नविद्ययोः ॥ समीपगमनस्यापि धात्रीशयनयोरपि ॥ ६ ॥

अर्थ—खरीदने बेचनेका, साहूकार तथा कंगालका प्रश्न और दाता तथा कृपणका प्रश्न धनस्थानसे कहना ॥ ५ ॥ सहोदर [भाइयों] का तथा अन्य बंधुजनोंका, बहनका, स्वप्नका, विद्याका, समीप गमनका, धायका, शय्याका प्रश्न ॥ ६ ॥

देहकम्पस्य भृत्यस्य स्वधर्माचरणस्य च ॥ देवालयादिकानां च स
वाच्यः सहजालयात् ॥७॥ क्षेत्राणां च गृहाणां च स्थितेश्चापि
पितुस्तथा ॥ भूगतस्य कृषेश्चापि तथा जनपदस्य च ॥ ८ ॥

अर्थ—देह कंपनेका, भृत्यका, अपने धर्माचरणका, देवस्थान मंदिर आदिकोंका ये सब प्रश्न तीसरे घरसे करने ॥ ७ ॥ खेतोंका, घरोंका, पिताकी स्थितिका, पृथ्वीमें दबी हुई वस्तुका, खेतीका, देशोंका, ये सब प्रश्न ॥ ८ ॥

वृक्षादीनां रोपणस्य मृतकस्य स्थलस्य च ॥ कार्याणां
परिणामस्य प्रश्नो वाच्यः सुहृद्गृहात् ॥९॥ पुत्राणां च
मुदोद्भूतप्रेषितस्यागमस्य च ॥ स्नेहस्य क्षेमपत्रस्यो-
दन्तस्य वाससस्तथा ॥ १० ॥

अर्थ—और वृक्षादिक लगानेका, मृतक जनका, स्थलका, कार्योंके परिणाम अर्थात् अन्यतरह बदल जानेका ये सब प्रश्न चौथे घरसे कहना ॥ ९ ॥ पुत्रोंका, आनंदसे प्रेरे हुएके आगमनका, स्नेहका, कुशलपत्र आनेका, लौकिक वार्त्ताका, वस्त्रका ॥ १० ॥

माङ्गल्यस्य प्रसन्नस्य विद्याकौतुकयोस्तथा ॥ शुभाशुभं च गर्भस्य शिल्पस्य सुहृदस्तथा ॥ ११ ॥ बुद्धेः शुभाशुभं वापि पितृवित्तस्य चापि यत् ॥ वस्तुनो मादकस्यापि प्रश्नो वाच्यः सुतालयात् ॥ १२ ॥

अर्थ—मंगलका, प्रसन्नताका, विद्याका, आश्चर्यका, शुभअशुभका, गर्भका, मित्रजनका, कारीगरीका ॥ ११ ॥ बुद्धिके शुभाशुभका, बापके धनका, मद करनेवाली (अफीमआदि) वस्तुका प्रश्न पांचवें स्थानसे कहना ॥ १२ ॥

रोगाणां दूषणानां च दासादीनां शुचस्तथा ॥ गर्भचेटकयोश्चापि पशूनामल्पदेहिनाम् ॥ १३ ॥ ऋणस्य याचनस्यापि चौराहृतधनस्य च ॥ सन्तोषस्य च शत्रूणां प्रश्नो वाच्योऽरिगेहतः ॥ १४ ॥

अर्थ—रोगोंका, दोषोंका, दास आदिकोंका, शोकका, गर्भका, चेटकका, छोटे शरीरवाले बकरी आदि पशुवोंका, ॥ १३ ॥ ऋण (कर्जा) का, याचना (मांगने) का, चोरोंसे हरे हुए धनका, संतोषका तथा शत्रुओंका प्रश्न छठे घरसे कहना ॥ १४ ॥

पत्नीनां चैव भर्तृणां स्वीकारस्य रिपोरपि ॥ युग्मोद्यमस्य चौरस्य वादस्यागमनस्य च ॥ १५ ॥ स्थानान्तरस्थितार्थस्य जयस्य मैथुनस्य ॥ स्वकीयपरदेशस्य स वाच्यः सप्तमालयात् ॥ १६ ॥

अर्थ—स्त्रियोंका तथा पतियोंका, वैरीके स्वीकारका तथा दो जनोंके उद्यमका, चोरका, वादका, आगमनका, ॥ १५ ॥ दूसरे स्थानमें स्थित हुए द्रव्यका, जयका अर्थात् जीतनेका, मैथुनका, अपने देशसे परदेशमें जानेका प्रश्न सातवें घरसे कहना ॥ १६ ॥

भयस्य मृत्योः शोकस्य चिन्ताया दुःस्थितेरपि ॥ ऋणदानस्य क्लेशस्य दुर्नयस्यागमस्तथा ॥ १७ ॥ मीरासेश्च तथा

नष्टधनस्य गिरिकोटयोः ॥ बद्धकोष्ठप्रवृत्तेश्चाप्यलसस्याऽष्ट-
माद्गृहात् ॥ १८ ॥

अर्थ—भयका, मृत्युका, शोकका, चिंताका, दुष्ट स्थितिका, कर्जा देनेका, क्लेशका, दुष्ट प्रकारकी नीति आनेका ॥ १७ ॥ सीर साझेका, नष्ट हुए धनका, पर्वत और कोटका, बँधे हुए कोटआदिमें प्रवृत्त होनेका तथा आलसका ये प्रश्न आठवें घरसे कहने ॥ १८ ॥

धर्मस्य व्यभिचारस्यातिदूरे गमनस्य च ॥ भाग्योदयस्य
दानस्य तथा च स्वप्नविद्ययोः ॥१९॥ स्वाभीष्टदेवसेवाया
यतित्वस्याऽऽश्रमस्य च ॥ स्थापितस्य धनस्यापि स
वाच्यो नवमाद्गृहात् ॥ २० ॥

अर्थ—धर्मका, व्यभिचारका, अत्यंत दूर गमन करनेका, भाग्योदयका, दान करनेका, स्वप्नका, विद्याका ॥ १९ ॥ अपने अभीष्ट देवकी सेवाका, यति-धर्मका, आश्रमका और स्थापित किये हुए धनका प्रश्न नवमें घरसे कहना ॥२०॥

राज्याधिकारयोः कीर्तेः श्रेष्ठत्वस्य नृपस्य च ॥ बलतन्त्रो-
द्यमस्यापि चौषधस्य गुरोरपि ॥ २१ ॥ जनन्याश्चापि
सेवाया मेघानां मन्त्रयन्त्रयोः ॥ स्वज्ञातेः स्वामिनश्चापि
वैद्यानां दशमाद्वदेत् ॥ २२ ॥

अर्थ—राज्यका अधिकारका कीर्तिका श्रेष्ठपनाका राजाका बल तंत्र उद्यम इनका औषधका गुरुका ॥ २१ ॥ माताकी सेवाका मेघोंका मंत्रयंत्रका आपनी जातिका स्वामीका वैद्योंका ये सब प्रश्न दशवें घरसे कहने ॥ २२ ॥

मित्रस्य च मनीषाया मन्त्रिणः सात्विकस्य च ॥
स्वाभीष्टलाभसिद्धेश्चाऽऽशाया भाग्योदयस्य च ॥२३॥
अमात्यस्य न्यायकर्तुरीश्वरस्य स्तुतेरपि ॥ सत्यासत्यस्य
यः प्रश्नो वाच्यश्चैकादशालयात् ॥ २४ ॥

अर्थ--मित्रकी बुद्धिका, मंत्रीका, सात्विक (सत्वगुणी) पदार्थका, अपने बांछित लाभकी सिद्धिका, आशाका, भाग्योदयका ॥ २३ ॥ राजाके दीवानका, न्याय (इन्साफ) करनेवालेका, ईश्वरकी स्तुतिका, सत्य तथा असत्यका ये सब प्रश्न ग्यारहवें घरसे कहने ॥ २४ ॥

वृषाद्युन्नतदेहानां पशूनां बन्धनस्य च ॥ शत्रोः कारागृहस्यापि ऋणमोचनकस्य च ॥ २५ ॥ बन्धनस्यास्य पुंसोऽपि मुक्तेश्चापि व्ययस्य च ॥ बाधाया मोचनस्यापि स वाच्यो द्वादशालयात् ॥२६॥

अर्थ--बैल आदि ऊंचे शरीरवाले पशुओंके बंधनका, शत्रुका, कारागृह (कैदखानें) का, कर्जा दूर होनेका ॥ २५ ॥ बेड़ी आदि बंधनमें स्थित हुए जनका, मुक्तिका, खर्चाका और बाधा पीड़ा छूटनेका प्रश्न बारहवें घरसे कहना ॥ २६ ॥

एतानि प्रश्नगेहानि ज्ञात्वा स्वस्य परस्य च ॥ अन्यान्यपि च गेहानि सम्बन्धाज्ज्ञायतां पुनः ॥ २७ ॥ एवं प्रश्नगृहं ज्ञात्वा पुनः प्रश्नं विचारयेत् ॥ सर्वेषां प्रश्नजालानां त्रयो भेदा भवन्ति हि ॥ २८ ॥

अर्थ--इन प्रश्नघरोंको जानके अपने तथा पराये प्रश्नको कहे, अन्य भी घर संबंधसे जानने चाहिये ॥ २७ ॥ ऐसे प्रश्नघरको जानके फिर प्रश्नको विचारै संपूर्ण प्रश्नजालोंके तीनही घर हैं ॥ २८ ॥

खारिजं निर्गमं प्रोक्तं दाखिलं चागमाभिधम् ॥ साबितं स्थिररूपं च भेदाः प्रश्नस्य कीर्तिताः ॥ २९ ॥ एभ्यो बहिश्च प्रश्नाश्च सन्ति स्वल्पा हि भूतले ॥ मुष्टिप्रश्नो मूकप्रश्नो वर्षपत्रस्य साधनम् ॥ ३० ॥

अर्थ--खारिज शकल निर्गम कही है और दाखिल आगमसंज्ञक है, साबित स्थिररूप है, ऐसे प्रश्नके तीन भेद कहे हैं ॥ २९ ॥ इनसे बाहिर अन्य प्रश्न पृथ्वीपर थोड़े ही हैं. मुष्टिप्रश्न, मूकप्रश्न, वर्षपत्र बनानाँ ॥३०॥

अवधेः कार्यसंसिद्ध्यै चौरस्य नामसाधनम् ॥ एतेषां पञ्चप्रश्नानामिन्किलावं न कारयेत् ॥ ३१ ॥ एवं ज्ञात्वा प्रश्नगे-

हानि पूर्वं पश्चात् ज्ञात्वा निर्गमादींश्च भेदान् ॥ स्वच्छे काले पाशकौ क्षेपणीयौ स्मृत्वा देवं स्वीयमाचार्यकं च ॥ ३२ ॥

अर्थ--कार्यसिद्धिकी अवधि और चोरका नाम बतानों इन पांच प्रश्नोंका इन्किलाब उपकरण नहीं करना ॥ ३१ ॥ इस प्रकार पहले प्रश्नके घरोंको जानेके पीछे निगर्म आदि भेदोंको जान सुंदर समयमें अपने इष्ट देवको और अपने आचार्यको स्मरण करके पाशोंको डालै ॥ ३२ ॥

ताभ्यां प्रस्तारकं कुर्यादिन्किलावं ततः परम् ॥ बलाबला-दिकं सर्वं ज्ञात्वा प्रश्नं विलोकयेत् ॥ ३३ ॥ तद्विधिं च प्रव-क्ष्यामि येन सिद्धिर्भवेत्किल ॥ पाशकोत्थाच्च प्रस्तारादि-न्किलावोद्भवात्तथा ॥ ३४ ॥

अर्थ—तिन पाशोंसे प्रस्तार बनावे; तिससे पीछे इन्किलाव बनावे और बलाबल आदि संपूर्ण विचारके फिर प्रश्नको देखै ॥ ३३ ॥ तिस प्रश्नकी विधिको कहते हैं; कि जिससे निश्चय सिद्धि होवे. पाशोंसे उत्पन्न हुए प्रस्तारसे और इन्किलावसे उत्पन्न हुए प्रस्तारसे ॥ ३४ ॥

द्वाभ्यां प्रस्तारकाभ्यां वै प्रकाराभ्यां फलं वदेत् ॥ प्रथमं पाशकोत्थाच्च प्रस्तारात्प्रश्ननिर्णये ॥३५॥ विधिं वक्ष्ये ततः पश्चादिन्किलावस्य कथ्यते ॥ प्रश्नगेहं च मुख्यं स्यान्मुक-राख्यं चतुर्दशम् ॥ ३६ ॥

अर्थ—दोनों प्रस्तारोंसे दोनों प्रकारोंसे फल कहै. पहले पाशोंसे उत्पन्न हुए प्रस्तारसे प्रश्नके निर्णयमें विधिको कहैंगे, तिसके पीछे इन्किलावकी विधि कहैंगे. प्रश्नका घर मुख्य होता है. चौदहवां घर मुकराख्य (साक्षीरूप) होता है ॥ ३५ ॥ ३६ ॥

धर्माधर्मस्य वेत्तारं ज्ञेयं पञ्चदशं गृहम् ॥ सर्वेषां प्रश्नजा-लानां ज्ञेयं स्थानत्रयं किल ॥ ३७ ॥ निर्गमं यदि प्रश्नः स्यात् खारिजं चेद्गृहत्रये ॥ तदा कार्यस्य संसिद्धिं वदेद्रमलकोविदः ॥ ३८ ॥

अर्थ—धर्म अधर्मको जाननेवाला पंद्रहवा १५ घर है. ऐसे सब ही प्रश्नजालोंके तीन घर जानने ॥ ३७ ॥ जो निर्गमप्रश्न अर्थात् छूटनेका, देनेका वा द्रव्यखर्चका प्रश्न हो और इन तीनों घरोंमें खारिज शकल हो तो रमलशास्त्रका जाननेवाला पंडित कार्यकी बहुत अच्छी सिद्धि कहै ॥ ३८ ॥

शुभं चेत्सुखरूपेण श्रमेणैवाशुभं वदेत् ॥ मरातिबादिकमपि ज्ञात्वा प्रश्नं ततो वदेत् ॥३९॥ दाखिलं चेन्न सिद्धिः स्याच्छुभे सत्यश्रमस्तथा ॥ अशुभे श्रमबाहुल्यात्कार्यसिद्धिर्न जायते ॥ ४० ॥

अर्थ—जो शुभ हो तो सुखपूर्वक काम फतेह हो और अशुभ हो तो श्रमसे हो. और मरातिबादिक संज्ञाको भी विचारके प्रश्न कहै ॥ ३९ ॥ जो ३ घरोंमें दाखिल शकल हो तो काम सिद्ध न हो, शुभ हो तो कछु परिश्रम न हो, अशुभ हो तो बहुत श्रम होनेसे भी कार्यकी सिद्धि न हो ॥ ४० ॥

साबिते कार्यसंसिद्धेराशा स्यान्नतु कार्यकृत् ॥ मुन्कलीवे चिरात्सिद्धिः पूर्णा स्याच्च शुभे सति ॥ ४१ ॥ अशुभे चिरकालेन स्वल्पकार्यस्य साधनम् ॥ एवं निर्गमप्रश्नं च संविचार्य वदेत् फलम् ॥ ४२ ॥

अर्थ—जो साबित हो तो कार्यसिद्धिकी आशा होवे परंतु सिद्धि न हो, मुन्कलीव हो तो बहुत कालमें सिद्धि हो, यदि शुभ हो तो पूर्ण सिद्धि हो जावे ॥ ४१ ॥ और अशुभ हो तो बहुत दिनोंमें स्वल्प कार्य सिद्धि हो ऐसे निर्गम प्रश्नोंको खूब विचारके फल कहै ॥ ४२ ॥

प्रश्नं स्यादागमाख्यं च दाखिलं स्याद् गृहत्रये ॥ कार्यसिद्धिस्तदा ज्ञेया शुभे शीघ्रं श्रमं विना ॥४३॥ अशुभे श्रमबाहुल्याद्विलम्बात्कार्यसिद्धिकृत् ॥ खारिजं चेन्न सिद्धिः स्यादश्रमश्च शुभे सति ॥ ४४ ॥

अर्थ—आगम प्रश्न हो तब यदि तीनों घरोंमें दाखिल शकल होवे तो कार्य

की सिद्धि जाननी, जो शुभ हो तो शीघ्र ही श्रमके विना कार्यसिद्धि जाननी ॥ ४३ ॥ अशुभ हो तो बहुतसे श्रमसे विलंबसे कार्यसिद्धि होवे; खारिज हो तो सिद्ध न हो और जो शुभ हो तो कछु श्रम भी न हो ॥ ४४ ॥

अशुभे श्रमबाहुल्यं कार्यसिद्धिर्न जायते ॥ साबिते
कार्यसिद्धिश्च शुभं चेत्स्याद्विलम्बतः ॥ ४५ ॥ अशुभे नैव
सिद्धिः स्यान्मध्यमे स्वल्पकार्यकृत् ॥ शुभाशुभे पूर्वरूपे
मुन्कलीवे न सिद्धिकृत् ॥ ४६ ॥

अर्थ—अशुभ (खारिज) हो तो बहुत श्रम भी करके कार्यसिद्धि न होवे और शुभ साबित होवे तो विलंबसे कार्यसिद्धि होवे ॥४५॥ अशुभ हो तो सिद्धि न हो, मध्यम हो तो स्वल्प कार्य होवे, जो शुभ अथवा अशुभ मुन्कलीव शकल हो तो आगम अर्थात् आमदनीका, द्रव्य (वस्तु) आने आदिका कार्य सिद्ध न होवे ॥ ४६ ॥

स्थिरप्रश्ने साबितं चेद्दाखिलं वा भवेद्यदि ॥ तदा कार्यं
स्थिरं सौख्याच्छुभे पापे च कष्टतः ॥ ४७ ॥ खारिजे
मुन्कलीवे च स्थिरकार्यस्य नाशकृत् ॥ एवं सर्वान्
प्रश्नजालान् संवदेत्प्रश्नकोविदः ॥ ४८ ॥

अर्थ—स्थिर प्रश्नमें अर्थात् मकान बनाना बगीचा लगाना इत्यादिमें साबित अथवा दाखिल शकल हो तो वह स्थिर कार्य सिद्ध हो, शुभ हो तो सुखसे और अशुभ हो तो कष्टसे (परिश्रमसे) सिद्ध हो ॥ ४७ ॥ खारिज और मुन्कलीव शकल स्थिर कार्यका नाश करनेवाली है. प्रश्न कहनेवाला पण्डित ऐसे संपूर्ण प्रश्नोंको खूब कहै ॥ ४८ ॥

त्रयो विरोधिनोऽन्योन्यं तदा च कथयेत्कथम् ॥ द्वौ
स्यातामेकरूपिणावेकः स्यात्पृथगेव हि ॥ ४९ ॥ तदा
फलं कथं वाच्यं रमले प्रश्नकोविदैः ॥ परस्परान्यरूपेषु
द्वयोश्च त्रितयेषु च ॥ ५० ॥

अर्थ—जो वे तीनों घरोंकी शकलें आपसमें विरोधिनी (विपरीत) हों तो कैसे प्रश्न कहै ? दो एकरूप हों एक पृथक्ही हो तोभी कैसे कहै ? ॥ ४९ ॥

तब रम्लवेत्ता पंडितोंने फल कैसे कहना, दो अथवा तीनों आपसमें विपरीत जुदे जुदे रूपवाली हों ॥ ५० ॥

तदा युक्तिं प्रवक्ष्यामि पूर्वशास्त्रानुरूपतः ॥ प्रश्नगेहे च यत्खण्डं तेन हन्याच्चतुर्दशम् ॥ ५१ ॥ पूर्वोक्तेनैव मार्गेण ताभ्यां जातं च खण्डकम् ॥ तेन पंचदशं हन्यादेवं यच्छकलं भवेत् ॥ ५२ ॥

अर्थ—तहां पूर्वशास्त्रोंके अनुसार युक्ति कहेंगे कि, प्रश्नघरमें जो शकल है तिसकरके चौदहवींको हनन (जर्ब) करै ॥ ५१ ॥ पूर्वोक्त प्रकारसे ही तिन दोनोंकरके जो एक शकल उत्पन्न हो तिस शकलकरके पंदरहवीं शकलको हत करै (जर्ब देवै) ॥ ५२ ॥

खारिजादिस्वरूपेण निर्गमादिफलं वदेत् ॥ पूर्वोक्तेन प्रकारेण शकलस्य स्वभावतः ॥ ५३ ॥ शुभाशुभस्वरूपेण श्रमाच्च श्रमतो वदेत् ॥ एवं प्रश्नगणं सर्वं कथयेदेकवर्त्मना ॥ ५४ ॥

अर्थ—फिर उस शकलके खारिज आदि स्वरूप विचारके तिसकरके निर्गम आदि फलको कहै. पूर्वोक्त ही प्रकारसे शकलके स्वभावसे फल कहै ॥ ५३ ॥ शुभ तथा अशुभ स्वरूपकरके श्रम अथवा बिना श्रमसे जैसा हो सो कहै. ऐसे संपूर्ण प्रश्नगणको एक ही मार्गकरके कहै ॥ ५४ ॥

एवं रीत्या सर्वप्रश्नांश्च विद्वन्निस्सन्दिग्धं ब्रूहि भोः पृच्छकाग्रे ॥ स्वान्ते रम्ले स्वीय आचार्यके च विश्वासश्चेत्प्रश्नसिद्धिस्तदा स्यात् ॥ ५५ ॥ इन्किलावोत्थप्रस्ताराद्विधिं प्रश्नस्य कीर्त्तयेत् ॥ इन्किलावोत्थप्रस्तारे तिथिगेहे सदैव हि ॥ ५६ ॥

अर्थ— हे विद्वन् ! इस रीतिसे तुम पृच्छक (पूछनेवाले)के आगे निःसंदेह होके कहो, जो अपने अंतःकरणमें और रमलविषे तथा अपने आचार्यविषे विश्वास हो तो कार्य सिद्ध होता है ॥ ५५ ॥ इन्किलावसे बनाये हुए प्रस्तारसे प्रश्नकी विधि कहै. इन्किलावसे उत्पन्न हुए प्रस्तारमें सदैव ही पंदरहवें घरमें ॥ ५६ ॥

जमातमेव भवति तेन सर्वं विलोकयेत् ॥ खारिजाभ्यां च तज्जातं खारिजे कार्यसिद्धिकृत् ॥ ५७ ॥ दाखिलाभ्यां यदि भवेद्दाखिलस्यैव सिद्धिदम् ॥ साबिताभ्यां स्थिरं कार्यं खारिजं मुन्कलीवतः ॥ ५८ ॥

अर्थ—जमात ही शकल रहती है. तिससे ही संपूर्ण हाल देखे. जो वह खारिज शकलोंसे उत्पन्न हुई हो तो खारिज कार्यकी सिद्धि करे ॥ ५७ ॥ और दाखिल शकलोंसे उत्पन्न हुई हो तो दाखिल कार्यकी सिद्धि करनेवाली है. साबित शकलोंसे उत्पन्न भई हो तो स्थिर कार्यको सिद्धि करे और मुन्कलीव शकलोंसे भई हो तो खारिज कार्यकी सिद्धि करती है ॥ ५८ ॥

शुभे च शक्रविश्वाख्ये कार्यसिद्धिस्तदा वदेत् ॥ अशुभे यदि ते खण्डे कार्याभावस्तदा खलु ॥ ५९ ॥ मध्यमे यदि ते खण्डे बलाढ्ये पूर्णकार्यकृत् ॥ निर्बले स्वल्पसिद्धिः स्यादिन्किलावोत्थमार्गतः ॥ ६० ॥

अर्थ—तेरहवें और चौदहवें घरकी शकल शुभ हो तो कार्यसिद्धि कहो. जो वे शकल अशुभ हों तो निश्चय कार्यका अभाव अर्थात् कार्यसिद्धि न होवे ॥५९॥ जो वे शकल मध्यम हों और बलयुक्त हों तो पूर्ण कार्य और निर्बल हों तो स्वल्प सिद्धि करैं, यह इन्किलावप्रस्तारके मार्गसे क्रम कहना ॥ ६० ॥

एवं प्रस्तारकाभ्यां च प्रश्नानां कथने विधिम् ॥ पाशोत्थादिन्किलावाच्च कथितं पूर्वसम्मितम् ॥ ६१ ॥ इदानीं कथयिष्यामि चमत्कृतिकरं परम् ॥ गोपितं सर्वरम्लेषु मयेदं प्रकटीकृतम् ॥ ६२ ॥

अर्थ–ऐसे दो प्रस्तारोंकरके प्रश्नकथनमें विधि कही है, एक तो पाशोंसे बनाये हुएसे और एक इन्किलावसे. ये दो पूर्वसंमित प्रकार कहे ॥ ६१ ॥ अब परम (अत्यंत) चमत्कारको सब रम्लोंविषे गुप्त किये हुएको मैं प्रकट करता हूं ॥६२॥

अतश्चोत्थाय स्वगुरुं रम्लशास्त्रस्य पारगम् ॥ हृदि ध्यात्वा जपेन्मंत्रं ततो मनसि धारयेत् ॥ ६३ ॥ आग-

मिष्यन्ति प्रश्नार्थं मनुष्याः कति संख्यकाः ॥ अद्य तेषां विचारार्थं पाशको क्षिप्यते मया ॥ ६४ ॥

अर्थ-प्रातःकाल उठके रमलशास्त्रके पारको जानेवाले अपने गुरुको चित्तमें स्मरण कर मंत्रको जपै. पीछे मनमें धारणा करै ॥६३॥ कि प्रश्नके वास्ते आज मेरे पास कितने मनुष्य आवेंगे ? तिनके विचारके वास्ते पाशे डाले जाते हैं ॥६४॥

प्रस्तारं पूर्ववत् कृत्वा तत्र प्रश्नं विलोकयेत् ॥ प्रथमादानृपं खण्डं प्रस्तारे स्वगृहे स्थितम् ॥ ६५ ॥ विज्दहस्य क्रमेणैव गेहतुल्यजनागमः ॥ यदि तत्स्वगृहे नास्ति तदा नैवागमिष्यति ॥ ६६ ॥

अर्थ—पूर्ववत् प्रस्तार बनाके तहां प्रश्न विचारै. पहलीसे सोलहवीं शकलतक अपने घरमें स्थित ॥ ६५ ॥ जो विज्दह पंक्तिके क्रमकरके हो अर्थात् जो प्रस्तारमें पहले घरमें होके विज्दहपंक्तिके भी पहले ही घरमें हो ऐसे जितने ग्रहोंकी संख्या मिलै उतने ही मनुष्य आवें. जो विज्दहके क्रमसे कोई अपने घरमें न हो तो कोई भी न आवेगा ॥ ६६ ॥

एवं पूर्वं विचार्याथ पुनरन्या विचारणा ॥ कः प्रश्नः कीदृशं तस्य कारणं भेदसंयुतम् ॥ ६७ ॥ सिद्ध्यसिद्धियुतं सर्वं पटे निश्चित्य लेखयेत् ॥ आगन्ता पूर्णपाणिर्वा ह्यथवा रिक्तपाणिकः ॥ ६८ ॥

अर्थ—ऐसे पहले विचारके फिर अन्य विचार करै कि तिसका क्या प्रश्न है ? और कैसा कारण है ? किस भेदसे संयुक्त है ? ॥ ६७ ॥ सिद्धि असिद्धिसे युक्त संपूर्णको निश्चयकरके पट्टापर लिखै. आनेवाला (पूर्णहाथ) कछु ले आवेगा अथवा खाली हाथसे आवेगा ॥ ६८ ॥

तदुद्देशं समाश्रित्य प्रस्तारं कारयेत्सुधीः ॥ आद्यं विश्वोद्भवं खण्डं शक्लाभोद्भवं तथा ॥ ६९ ॥ अनयोर्योगतः खण्डं प्रस्तारे वर्तते यदि ॥ तदा प्रष्टा पूर्णपाणी रिक्तपाणिस्ततोऽन्यथा ॥ ७० ॥

अर्थ—ऐसे उद्देशके वास्ते पण्डितजन प्रस्तार बनावे. पहिली और तेरहवीं शकलसे एक शकल बनावे और चौदहवीं तथा ग्यारहवींसे एक बनावे ॥ ६९ ॥ फिर इन दो शकलोंके योगसे एक हा बना लेवे. जो यह शकल प्रस्तारमें कहीं हो तो पूछनेवाला पूर्णहाथ–कुछ ले आवेगा. नहीं हो तो खाली हाथसे आवेगा ॥७०॥

धातुमूलादिकं द्रव्यं प्रष्टा किं चानयिष्यति ॥ पूर्वोक्तखण्डेऽग्निबिन्दौ वह्नयुत्थं द्रव्यमाविशेत् ॥ ७१ ॥ वायुबिन्दोश्च बीजोत्थं जलबिन्दोः फलादिकम्॥धराबिन्दोश्च मूलाद्यमाकरोत्थं तु वा वदेत् ॥ ७२ ॥

अर्थ—फिर विचारे कि, पूछनेवाला धातु मूल आदि क्या द्रव्य ले आवेगा तहां पूर्वोक्त इस शकलमें अग्नि तत्त्व हो तो अग्निसे पका हुआ द्रव्य ले आवेगा ॥७१॥ वायुकी बिंदु हो तो बीजसे उत्पन्न हुआ द्रव्य और जलकी बिंदुसे फल आदि, पृथ्वीकी बिंदुसे मूल (जमीकंद) अथवा खानमें उपजी हुई वस्तु कहै ॥ ७२ ॥

द्वित्र्यादिबिन्दुके मिश्रं तेनैव च वदेत्सुधीः ॥ पूर्वोक्तप्रश्नस्य विधिं वक्ष्ये शिष्यहिताय वै ॥ ७३ ॥ लोकानां रञ्जनार्थाय लिख्यतेऽतिचमत्कृतिः ॥ यस्या विज्ञानमात्रेण सर्वज्ञो भवति ध्रुवम् ॥ ७४ ॥

अर्थ—जो दो तीन बिंदु हों तो तिस ही प्रकार मिली हुई वा अनेक वस्तु कहे. अब शिष्योंके हितके वास्ते पूर्वोक्त प्रश्नकी विधिको कहैंगे ॥ ७३ ॥ लोगोंको प्रसन्न करनेके वास्ते अत्यंत चमत्कार कहते हैं. जिसके विज्ञानमात्रसे निश्चय मनुष्य सर्वज्ञ होता है ॥ ७४ ॥

सर्वेषां प्रश्नजालानां प्रकारं च चतुर्विधम् ॥ मनोऽभिप्रायं प्रथमं कारणं च द्वितीयकम् ॥७५॥ प्रश्नभेदं तृतीयं च सिद्धासिद्धं चतुर्थकम् ॥ एतेषां साधनं वक्ष्ये साधकानां सुखावहम् ॥ ७६ ॥

अथ—संपूर्ण प्रश्नजालोंके चार प्रकार होते हैं. प्रथम मनका आशय कहना १, दूसरा कारण २ ॥ ७५ ॥ तीसरा ३ प्रश्नका भेद है, चौथा ४ सिद्धि अथवा असिद्धि कहना है. अब प्रश्न बतानेवाले साधकोंको सुखकारक इनके साधनोंको कहैंगे ॥ ७६ ॥

चतुर्णामपि भेदानां प्रश्नगेहानि कथ्यते ॥ क्रमात् केन्द्रस्य खण्डानि –१–४–७–१० ≡ ≡ ≡ ≡ शकुनस्थापराणि च ॥ ७७ ॥ प्रस्तारे केन्द्रखण्डानि क्रमेण कथितानि वै ॥ तथा विश्वादि –१३–१४–१५–१६ चत्वारि प्रस्तारस्थक्रमेण वै ॥ ७८ ॥

अर्थ—इन चारों ही भेदोंके प्रश्नघरोंको कहते हैं–क्रमसे केंद्रस्थानके खंड अर्थात् १—४–७–१० शकल ≡ ≡ ≡ ≡ ये तो शकुनपंक्तिमें हैं और अन्य ॥ ७७ ॥ प्रस्तारविषे केंद्रसंज्ञक शकल क्रमकरके १–४–७–१० इन घरोंकी कही हैं तहां तेरहवीं आदि चार १३–१४–१५–१६ ये प्रस्तारक्रममें स्थित हुई शकल ॥ ७८ ॥

साक्षिभूतानि ज्ञेयानि तथा साक्ष्यपराणि च ॥ प्रस्तारे स्वस्वगेहाश्च पञ्च पञ्च ५–८–११–१४ क्रमेण च ॥ ७९ ॥ शकुनक्रमे च खण्डानि केन्द्रस्थानि चतुष्टयम् ॥ साक्षिभूतानि प्रस्तारे विश्वादीनि चतुष्टयम् ॥ ८० ॥

अर्थ—उस शकुनपंक्तिके साक्षीरूप जाननी और प्रस्तारमें अपने २ घरसे अर्थात् १–४–७–१० इस केंद्रके अपने २ घरसे पांचवीं २ शकल क्रमकरके अन्य भी साक्षी कही हैं. जैसे कि ५–८–११–१४ ये प्रस्तारके केंद्रकी साक्षी हैं ॥ ७९ ॥ शकुनक्रममें जो चार केंद्र शकल हैं उनकी साक्षी तेरहवीं १३ आदि चार शकल प्रस्तारमें हैं ॥ ८० ॥

परस्परं क्रमाद्धन्याज्जातं दलचतुष्टयम् ॥ तत्क्रमेण पृथक् स्थाप्य द्वितीयो विधिरुच्यते ॥८१॥ प्रस्तारे केन्द्रखण्डानि १–४–७–१० तथा साक्षिदलानि च ॥ ५–८–११–१४ पूर्वक्रमेण तान्यत्र परस्परहतानि च ॥ ८२ ॥

अर्थ—सो उनको क्रमकरके परस्पर हनन (जर्ब) करै तिनसे चार शकल होंगी, उनको क्रमसे अलग स्थित कर दे. और दूसरी विधि कहते हैं ॥ ८१ ॥ कि प्रस्तारमें केंद्रसंज्ञक शकल १–४–७–१० ये हैं तथा इनके साक्षी ५–८–११–१४–ये घर प्रस्तारमें ही हैं. व क्रमकरके इन्हें भी परस्पर गुण दे (जर्ब करै) ॥८२॥

तदुद्भवानि चत्वारि पृथक्स्थेन नियोजयेत् ॥ क्रमेण एभ्य-श्चत्वारि जातानि शकलानि हि ॥ ८३ ॥ तेभ्यः क्रमात्फलं वाच्यं शकुनस्य क्रमात्त्रयम् ॥ शुभाऽशुभवशेनैव सिद्ध्यसिद्धी क्रमाद्वदेत् ॥ ८४ ॥

अर्थ—इनसे उत्पन्न हुई चार शकलोंको अलग रख देवे. पीछे क्रमकरके वे पहले जो अलग चार शकल स्थित की थीं उनके साथ (नियुक्त कर) जर्बे देवे फिर क्रमसे तिनसे चार शकल उत्पन्न भई ॥ ८३ ॥ तिन शकलोंसे क्रमकरके फल कहना. शकुनपंक्तिके क्रमसे तीन भावोंका फल कहै और शुभाऽशुभके वशसे सिद्धि असिद्धिको क्रमसे कहै ॥ ८४ ॥

तत्खण्डं शकुने यत्र गेहे तस्य सहायकम् ॥ मनोऽभिप्रायं प्रथमे द्वितीये प्रश्नकारणम् ॥ ८५ ॥ तृतीये प्रश्नभेदः स्या-त्सिद्ध्यसिद्धी चतुर्थके ॥ अनेनैव प्रकारेण मूकप्रश्नं च कारयेत् ॥ ८६ ॥

अर्थ—परंतु वह चौथी शकल शकुनपंक्तिमें जौनसे घर हो वही सहायक जानना. पहले घरमें मनका अभिप्राय, दूसरेमें प्रश्नका कारण ॥ ८५ ॥ तीसरेमें प्रश्नका भेद, चौथे घरमें सिद्ध असिद्ध होना विचारै. इसी विधिसे मूकप्रश्नको कहै ॥ ८६ ॥

उदाहरणमेतेषामनुभूत्वा हि कथ्यते ॥ शिष्याणां सुख-बोधाय परोपकरणाय च ॥ ८७ ॥ आगत्य केनचित्प्रश्नः कृतोऽभिज्ञ विचार्यताम् ॥ अभिप्रायं कारणं च भेदं सिद्धिं चतुर्थकम् ॥ ८८ ॥

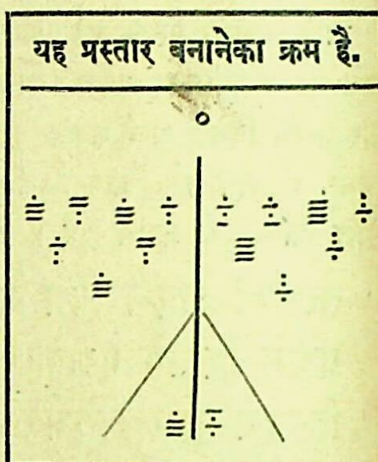
अर्थ—इनके उदाहरण आगे इसीके अनुसार शिष्योंके बोधके वास्ते और परोपकारके वास्ते कहते हैं ॥ ८७ ॥ आके किसीने प्रश्न किया कि, हे विद्वन् ! विचार करो, अभिप्राय, कारण, भेद और चौथी सिद्धि असिद्धि ॥ ८८ ॥

एकेनैव हि प्रश्नेन पृथक् चत्वारि मे वद ॥ क्षिप्त्वा पाशद्वयं तत्र कुर्यात्प्रस्तारमण्डलम् ॥ ८९ ॥ फरहा प्रथमे स्थाने जमातं

च द्वितीयके ॥ तृतीये च चतुर्थे च कब्जुलखारिजकं तथा ॥९०॥ एवं षोडशकोष्ठेषु द्रष्टव्यः शकलक्रमः ॥ चतुर्णामपि भेदानां द्वे द्वे खण्डे प्रवर्तते ॥ ९१ ॥ तथा द्वे द्वे साक्षिभूते पूर्वे च कथिते मया ॥ अभिप्रायगृहं चाद्यं लह्यानं शनुक्रमात् ॥ ९२ ॥

अर्थ—एक ही प्रश्नकरके मेरे इन चारोंको अलग २ कहो. तहां दोनों पाशे फेकके प्रस्तार बनावे ॥ ८९ ॥ पहले घरमें फरहा है, दूसरे घरमें जमात, तीसरे और चौथे घरमें कब्जुलखारिज है ॥ ९० ॥ ऐसे ही इस प्रस्तारमें सोलहो १६ घरोंमें शकलोंका क्रम देखना, चारों ही भेदोंके दो दो खंड हैं ॥ ९१ ॥ और दो २ ही साक्षीरूप शकल मैनें कही हैं. अभिप्रायका घर पहला लह्यान शकुनक्रमसे है ॥ ९२ ॥

यह प्रस्तार बनानेका क्रम है.



तस्य साक्षी विश्वखण्डं प्रस्तारे फरहाभिधम् ॥ तयोर्घाते समुत्पन्नं कब्जुदाखिलसंज्ञकम् ॥ ९३ ॥ पुनर्द्वितीयशकलं प्रस्तारे प्रथमे गृहे ॥ फरहा एवं तथा साक्षिप्रस्तारे पञ्चमे नकी ॥ ९४ ॥

अर्थ—तिसका साक्षी तेरहवां खंड १३ प्रस्तारमें फरहा है. इन दोनोंके जर्ब करनेसे कब्जुलदाखिल शकल भई ॥ ९३ ॥ फिर दूसरी प्रस्तारमें पहले घरमें फरहा शकल है तिसका साक्षी प्रस्तारमें ही पांचवें घर नकी शकल है ॥ ९४ ॥

तयोर्घाते समुत्पन्नमिज्तमा शकलं खलु ॥ कब्जुददाखिले ज्तमा जातं नुस्रुतदाखिलम् ॥ ९५ ॥ शकुनस्य क्रमे तस्य स्थितिश्चैकादशे गृहे ॥ अभिप्रायस्य तज्ज्ञेयं गृहं चैकादशाभिधम् ॥ ९६ ॥

अर्थ—इन दोनोंके जर्ब करनेसे इज्जतमा ⁝ शकल उत्पन्न हुई फिर कब्जुल्दाखिल ⁝ और इज्जतमा ⁝ शकलकरके नुसुदाखिल शकल हुई ॥ ९५ ॥ शकुनके क्रममें तिसकी स्थिति ग्यारहवें घरमें है इसलिये वह ग्यारहवां घर अभिप्रायका जानना ॥ ९६ ॥

लाभादीनां विचारो हि वर्तते त्वयि मानसे ॥ इदानीं
कारणस्यापि कथयिष्ये उदाहृतिम् ॥ ९७ ॥ कारणस्य
गृहं तुर्यं शकुनस्य जमातकम् ☰ ॥ लह्यानं तस्य
साक्षी स्यात्प्रस्तारे शक्र १४ खण्डके ॥ ९८ ॥

अर्थ—सो तेरे मनमें लाभ आदिकोंका विचार है. अब कारणके भी उदाहरणको कहते हैं ॥ ९७ ॥ कारणका घर शकुनपंक्तिका चौथा जमात ☰ है, तिसका साक्षी प्रस्तारमें चौदहवें १४ घरमें लह्यान ⁝ है ॥ ९८ ॥

तयोर्घातात्समुत्पन्नं लह्यानं ⁝ शकलं तथा ॥ पुनर्द्वितीयं प्रस्तारे
सुखे कब्जुलखारिजम् ॥ ९९ ॥ साक्षिखण्डं च प्रस्तारे लह्यानं
चाष्टमे गृहे ॥ तयोर्घातात्समुत्पन्नं बयाजं ⁝ शकलं ततः ॥१००॥

अर्थ—उनके जर्ब करनेसे लह्यान ⁝ शकल उत्पन्न हुई फिर दूसरे प्रस्तारमें चौथे घर कब्जुल्खारिज शकल है ॥ ९९ ॥ उसका साक्षी प्रस्तारमें ही आठवें घरमें लह्यान शकल है, फिर इन दोनोंके गुणने (जर्ब) करनेसे बजाय ⁝ शकल हुई ॥ १०० ॥

लह्यानाख्यबयाजाभ्यां जातं कब्जुलखारिजम् ⁝ ॥ शकुनस्य
क्रमेणैव तस्य गेहं तृतीयकम् ॥ १ ॥ भ्रात्रादीनां च तज्ज्ञेयं समीप-
गमनस्य च ॥ तस्मात्तत्कारणेनापि लाभादीनां च चिन्तनम् ॥२॥

अर्थ—पूर्वोक्त लह्यानसे और बयाजके गुणने (जर्ब) करनेसे कब्जुल्खारिज शकल हुई ⁝ शकुनपंक्तिके क्रमकरके तिसका तीसरा घर है ॥ १ ॥ वह घर भाईआदिकोंका तथा समीपगमनका है; इसलिये तिन भाइयोंके कारणकरके लाभ आदिकोंका चिंतवन है ॥ २ ॥

इदानीं प्रश्नभेदस्योदाहृतिं च वदाम्यहम् ॥ गृहं भेदस्य
शकुने नग ७ मङ्कीश ☰ संज्ञकम् ॥३॥ प्रस्तारस्य

पञ्चदशे साक्षी कब्जुलदाखिलम् ⚍ ॥ तयोर्घाते
समुत्पन्नं हुमराख्यं ⚌ दलं तथा ॥४॥

अर्थ—अब प्रश्नके भेदके उदाहरणको कहते हैं—भेदका घर शकुनपंक्तिमें सातवां ७ अंकीश ⚍ है ॥ ३ ॥ इसका साक्षी प्रस्तारमें कब्जुलदाखिल ⚍ है इन दोनोंके गुणने (जर्ब) करनेसे हुमरा ⚌ शकल उत्पन्न हुई ॥ ४ ॥

पुनर्द्वितीयं प्रस्तारे नुस्रुद्दाखिल ⚍ सप्तमम् ॥ प्रस्तारे
साक्षिखण्डं च लाभे नुस्रुददाखिलम् ॥ ५ ॥ तयोर्घा-
तात्समुत्पन्नं शकलं तु जमात ☰ कम् ॥ हुम्राजमातयो-
र्घाते जातं हुम्राख्य ⚌ खण्डकम् ॥ ६ ॥

अर्थ—फिर दूसरे प्रस्तारमें सातवें घर नुस्रुद्दाखिल ⚍ शकल है, तिसकी साक्षी ग्यारहवें घर नुस्रुद्दाखिल है ॥ ५ ॥ इन दोनोंके गुणने (जर्ब) करनेसे जमात ☰ शकल उत्पन्न हुई, फिर हुमरा और जमातके गुणने (जर्ब) करनेसे हुम्रा ⚌ शकल उत्पन्न हुई ॥ ६ ॥

शकुनस्य क्रमे गेहे त्वष्टमे संस्थितं किल ॥ तस्मान्मी-
रसकादीनां भेदस्त्वय्येव वर्तते ॥ ७ ॥ इदानीं सिद्ध्य-
सिद्ध्योश्चोदाहरणं विलिख्यते ॥ सिद्ध्यसिद्ध्योर्गृहं
त्वभ्रं १० शकुने नुस्रुतखारिजम् ॥ ८ ॥

अर्थ—यह शकल शकुनक्रममें आठवें घर स्थित है इसलिये तेरे मनमें मीर साझेका भेद है ॥ ७ ॥ अब सिद्धि असिद्धिके उदाहरणको लिखते हैं ।सिद्धि असिद्धिका घर दशवां १० शकुनपंक्तिमें नुस्रुत्खारिज है ॥ ८ ॥

लह्यानं ⚌ साक्षिभूतं च प्रस्तारे षोडशे गृहे ॥
तयोर्घातात्समुत्पन्नं खण्डं हुम्रा ⚌ भिधानकम्
॥९॥ पुनर्द्वितीयं प्रस्तारे दशमे च जमातकम् ☰ ॥
साक्षिखण्डं च लह्यानं प्रस्तारे त्विन्द्र १४ संज्ञके ॥ ११० ॥

अर्थ—तिसका साक्षी लह्यान शकल ⚌ प्रस्तारमें सोलहवें घरमें है; इन दोनोंके गुणने (जर्ब) करनेसे हुम्रा ⚌ शकल हुई ॥ ९ ॥ फिर दूसरे प्रस्तारमें दशवें घर जमात ☰ शकल है; तिसका साक्षी शकल लह्यान प्रस्तारमें चौदहवें घरमें है ॥ ११० ॥

तयोर्घातात्समुत्पन्नं खण्डं लह्यान ⩸ संज्ञकम् ॥ हुम्रालह्यानयोर्घाते जातं नुस्रुतखारिजम् ⩸ ॥ ११ ॥ अस्य खण्डस्य सौम्यत्वात्कार्यसिद्धिश्च जायते ॥ परंतु शकुने चास्य गेहमाकाश १० संज्ञकम् ॥ १२ ॥

अर्थ—इन दोनोंके गुणनेसे लह्यान ⩸ शकल हुई फिर हुम्रा और लह्यानके गुणनेसे नुस्रुतखारिज ⩸ शकल हुई ॥ ११ ॥ यह नुस्रुतखारिज शकल सौम्य है (शुभ है), कार्यसिद्धि होवेगी परंतु शकुनपांक्तिमें इसका दशवां घर है ॥ १२ ॥

तस्मान्नृपसहायेन कार्यसिद्धिर्भवेत्किल ॥ एवं चतुर्विधं ज्ञानं सर्वेषां प्रश्नके स्थितम् ॥ १३ ॥ कथितं मे सुशिष्याणां हिताय च परस्य वै ॥ दुर्जनाय न दातव्यमिदं रम्लेषु दुर्लभम् ॥ १४ ॥

अर्थ—इसलिये राजाकी सहायतासे कार्यकी सिद्धि होवे. ऐसे यह चार प्रकारका ज्ञान सबोंके प्रश्नोंमें स्थित है ॥ १३ ॥ मैंने श्रेष्ठ शिष्योंके हितके वास्ते तथा अन्यके वास्ते भी कहा है. यह दुर्जनके वास्ते नहीं देना (नहीं बताना चाहिये). क्योंकि, सब रम्लोंमें दुर्लभ है ॥ १४ ॥

ब्रूह्येवं त्वं प्रश्नजालं सुविद्वन्भेदान् युक्तानेकमार्गेण सर्वान् ॥ अत्याश्चर्ये रम्लशास्त्रेऽतिगोप्यं तस्माद्रक्ष्यं दुर्जनेभ्यः सदैव ॥ १५ ॥ एवं सामान्यतः प्रोक्तं सर्वगेहेषु निश्चितम् ॥ यद्यद्गृहे विशेषं च तत्तद्गेहेऽधुना ब्रुवे ॥ १६ ॥

अर्थ—हे विद्वन्! तुम इस प्रकारसे प्रश्न जालको कहो और इन संपूर्ण यथायोग्य भेदोंको इस एक ही मार्गकरके कहो. अत्यंत आश्चर्यवाले रम्लशास्त्रमें यह अत्यंत गुप्त है इसलिये दुर्जनोंसे सदा रक्षा करनी ॥ १५ ॥ इस प्रकार सामान्यसे संपूर्ण घरोंमें निश्चय कहा. अब जिस घरमें जो विशेष है उसी २ घरको कहते हैं ॥ १६ ॥

आद्यगेहे विशेषेण चायुषो लिख्यतेऽधुना ॥ ममायुः कति शेषं च प्रश्ने त्वेवंविधे सति ॥ १७ ॥ प्रस्तारे प्रथमे गेहे खण्डं तेन चतुर्थकम् ॥ गुणयेद्यत्समुत्पन्नं तस्माज्ज्ञेयं फलं बुधैः ॥ १८ ॥

अर्थ—अब पहले घरमें विशेष करके आयुका विचार लिखते हैं. मेरी आयु [उमर] कितनी बाकी रही है? ऐसे प्रश्न होनेपर ॥ १७ ॥ प्रस्तारमें पहले घर जो खंड है तिसकरके चौथी शकलको गुणै; फिर जो शकल उत्पन्न हो तिससे पंडितजनोंने फल विचारना चाहिये ॥ १८ ॥

दाखिले बहुरायुः स्यात्साबिते च ततोऽल्पकम् ॥ मुन्कलीवे ततोऽल्पं च खारिजे चाऽतिस्वल्पकम् ॥ १९ ॥ शुभे चत्सुख-पूर्वं च पापे दुःखेन जीवनम् ॥ तस्याङ्कं च वदिष्यामि यथोचुर्यवनाः पुरा ॥ २० ॥

अर्थ—दाखिल शकल हो तो बहुत आयु जानै, साबित हो तो तिससे थोड़ी, मुन्कलीव हो तो तिससे भी थोड़ी, खारिज हो तो बहुत ही थोड़ी जानना ॥ १९ ॥ शुभ शकल हो तो सुखपूर्वक, अशुभ हो तो दुखपूर्वक जीवना होगा. अब तिस आयुके अंक (संख्या) को भी जैसे पहले यवन कहते भये सो कहते हैं ॥ २० ॥

पूर्वोत्पन्नं च यत्खण्डं प्रस्तारे यद्गृहे स्थितम् ॥ बिज्दहस्य क्रमे तस्य यदङ्कं तत्र वर्तते ॥ २१ ॥ तदङ्कं चायुषो ज्ञेयं रम्लशास्त्रेषु गोपितम् ॥ मया प्रकाशितं ह्यत्र सर्वेषां च हिताय वै ॥ २२ ॥

अर्थ—पहले उत्पन्न हुई जो शकल (पहली चौथीसे उत्पन्न हुई) प्रस्तारमें जिस घरमें स्थित हो फिर बिज्दहपंक्तिके क्रममें तिसका जो अंक वर्त्तता है ॥ २१ ॥ वही अंक आयुका (उमरका) जानना; रम्लशास्त्रोंमें गुप्त किया हुआ यह अंक मैंने यहां सबोंके हितके वास्ते प्रकाशित किया है ॥ २२ ॥

दाखिलादिक्रमेणैव वर्षमासादिघस्रकम् ॥ दिनं चैव विजानीयादुत्पन्नशकलात्तथा ॥ २३ ॥ उत्पन्नशकलं नास्ति प्रस्तारे चेत्तदा यदि ॥ बिज्दहे स्वगृहस्याङ्कं विज्ञेयं प्रश्नकोविदैः ॥ २४ ॥

अर्थ—फिर दाखिल आदि शकलोंके क्रमकरके वर्ष महीने दिन बताने. अर्थात् दाखिल हो तो वर्ष, साबित हो तो महीने, मुन्कलीव हो तो दसा, खारिज हो तो दिन बतावे. यह सब (पहली और चौथीसे) उत्पन्न हुई शकलसे बताना ॥ २३ ॥ जो उत्पन्न हुई यह शकल प्रस्तारमें नहीं हो तो प्रश्नवेत्ता पंडित-जनोंनें बिज्दहपंक्तिके ही जिस घरमें हो उसके नीचेका अंक जानना ॥ २४ ॥

अङ्कार्थं च वदिष्यामि चक्रोद्धारं सुखाय वै ॥ बिज्दहस्य क्रमेणैव खण्डं लेख्यं च षोडशम् ॥ २५ ॥ तदधस्ताल्लिखेदूर्ध्वक्रमात्षोडशकोष्ठकम् ॥ एकादिप्रथमं कोष्ठे षोडशान्त्यं लिखेद्बुधः ॥ २६ ॥

अर्थ—अंकके लिये सुखके वास्ते चक्रोद्धार कहते हैं-बिज्दहके क्रमकरके सोलह शकल लिखै ॥ २५ ॥ उसके नीचे ऊपरके क्रमसे सोलह कोष्ठ लिखै, पहले कोष्ठमें एकसे लेके सोलहतक अंक लिखै ॥ २६ ॥

द्वितीयादिषु कोष्ठेषु क्रमं चैव वदाम्यहम् ॥ तत्तद्गृहाङ्कयोर्योगे ज्ञेयं त्वग्रिमकोष्ठके ॥ २७ ॥ तमारभ्यैकवृद्ध्या च षोडशेषु लिखेद्बुधः ॥ एवं षोडशकोष्ठेषु लेख्यान्यङ्कानि तान्यपि ॥ २८ ॥ लिख्यते चात्र शिष्याणां चक्रं सम्यग्धिताय च ॥ शेषायुषश्च विज्ञानमेवं ज्ञेयं सदा बुधैः ॥ २९ ॥

अर्थ—फिर दूसरे आदि कोष्ठोंमें क्रमको कहते हैं-अगले २ कोष्ठमें तिस २ घरका (योग) जोड, होनेसे अंक जानना ॥ २७ ॥ तिससे लेके एककी वृद्धि करके बुद्धिमान् जन सोलह कोष्ठोंमें लिखै-ऐसे सोलह कोष्ठोंमे अंक लिखने चाहिये ॥ २८ ॥ अब शिष्योंके अच्छे हितके वास्ते चक्र लिखते हैं. पंडित जनोंने ऐसे ही सदा बाकी रही आयुका (ज्ञान) विचार करना चाहिये ॥ २९ ॥

धनभावे विशेषश्च कथ्यते यवनोदितम् ॥ द्वयोः पुरुषयोर्मध्ये कस्य स्याद्बहुलं धनम् ॥ ३० ॥

अर्थ—अब धनस्थानमें यवनोंसे कहा हुआ विशेष (प्रकार) कहते हैं कि, दो जनोंके मध्यमें बहुत (ज्यादा) धन किसके है ? ॥ ३० ॥

एतद्विचारे प्रस्तारं कृत्वा प्रश्नं विलोकयेत् ॥ मुख्यस्य प्रथमं गेहं तत्सम्बन्धाद्द्वितीयकम् ॥३१॥ द्वयोर्गेहाच्च यद्गेहं द्वितीयं तद्धनस्य च ॥ दाखिलं साबितं सौम्यं यस्य गेहे धनाख्यके ॥ ३२ ॥

अर्थ—ऐसे विचारमें प्रस्तार बनाके प्रश्नको देखे, जो मुख्य हो (प्रधान हो) उसका तो प्रस्तारमें पहला घर है और उसके संबंधसे दूसरेका घर है ॥ ३१ ॥ फिर दोनोंके घरसे जो दूसरा घर है वह धनका है, जिसके धनघरमें सौम्य [शुभ] दाखिल अथवा शुभ साबित शकल हो ॥ ३२ ॥

---

१ सम्बन्धस्तु पूर्वं दर्शितः, शत्रुश्चेत् षष्ठं गृहं, भ्राता चेत् तृतीयं, पुत्रश्चेत्पञ्चमं द्रष्टव्यम्।

यह आयु देखनेका चक्र है. इसके देखनेका क्रम पूर्वोक्त भाषामें विचारोः आदिमें

	÷	≐	⁝	≕	⁝	÷	≟	⩧
१	१	२	३	४	५	६	७	८
२	२	३	४	५	६	७	८	९
३	४	५	६	७	८	९	१०	११
४	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
५	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८
६	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
७	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६
९	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
१०	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३
११	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३
१२	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४
१३	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६
१४	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९
१५	१०६	१०७	१०८	१०९	११०	१११	११२	११३
१६	१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८

१–१६ तक प्रस्तारक्रमके अंक हैं, ऊपर विज्दहपंक्तिके क्रमसे शकलें लिखी हैं।

≐	≑	⫶	⩱	⋮	÷	∓	⩶
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९
१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२
९१	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७
३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२
५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१
६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१
७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२
८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४
१००	१०१	१०२	१०३	१०४	१०५	१०६	१०७
११४	११५	११६	११७	११८	१३४	१२०	१२१
१२९	१३०	१३१	१३२	१३३	११९	१३५	१३६

तस्यैव द्रव्यं बहुलं द्वयोः साम्ये समं धनम् ॥ खारिजे त्वशुभे ज्ञेयं धनं नास्तीति निश्चितम् ॥ ३३ ॥ शुभे तु खारिजे स्वल्पं धनं तस्य विनिर्दिशेत् ॥ शुभाशुभे मुन्कलीवे ज्ञेयं स्वल्पाल्पकं धनम् ॥ ३४ ॥

अर्थ—तिसके ही विशेष (जियादः) द्रव्य जानना और जो दोनों घरोंमें एकसी शकल हो तो समान (बराबर) धन जानना और जिसके घरमें अशुभ खारिज शकल हो तो धन नहीं है ऐसा निश्चय करना ॥ ३३ ॥ शुभ खारिज हो तो उसके स्वल्प धन जानना, जो शुभ अथवा अशुभ मुन्कलीव शकल हो तो भी थोड़ा द्रव्य बतावे ॥ ३४ ॥

संख्यायाः क्रियते प्रश्नः प्रस्तारं च विलोकयेत् ॥ बिज्दहस्य स्वगेहे चेत्खण्डं वै दृश्यते यदि ॥ ३५ ॥ तस्याङ्कं कर्णमार्गेण चक्रे ग्राह्यं मनीषिभिः ॥ तदङ्कतुल्यं द्रव्यस्य प्रमाणं कथयेद्बुधः ॥ ३६ ॥

अर्थ—जो संख्याका प्रश्न किया जावे अर्थात् कितना धन है, यह पूछा जावे तहां प्रस्तार बनाके देखै, जो बिज्दहपंक्तिकी शकल अपने घरमें हो अर्थात् जौनसे घर बिज्दहपंक्तिमें हो उसी घरमें प्रस्तारमें हो ॥ ३५ ॥ उसका अंक कर्णमार्गकरके पंडित जनोंने इस चक्रमें ग्रहण करना चाहिये. फिर बुद्धिमान् जन तिस अंकके तुल्य द्रव्यका प्रमाण कहै ॥ ३६ ॥

वराटकात्स्वर्णमुद्रापर्यन्तं कथयेद्बुधः ॥ एकादिकोटिपर्यन्तं संख्या पात्रानुसारतः ॥ ३७ ॥ द्वित्र्यादि स्वगृहे चेत्स्यात्तदा तेषां च योगकृत् । तदङ्कानां च तत्संख्यां वदेद्बुद्ध्यनुसारतः ॥३८॥

अर्थ—पंडितजन कौड़ीसे लेके (स्वर्णमुद्रा) मोहरोंतक तथा एकसे लेके करोड़पर्यंत संख्या पात्रके अनुसार कहै, अर्थात् उन्मान देखके शतसहस्रादि वा पैसा रुपयाकी संख्या कहै ॥ ३७ ॥ प्रस्तारमें हो उसी घरमें बिज्दहमें हो ऐसे दो तीन शकलें पड़ी हों तो तिनके अंकोंकी संख्याका योग (जोड़) करके फिर बुद्धिके अनुसार कहै ॥ ३८ ॥

एवं संख्या च सर्वत्र विज्ञेया प्रश्नकोविदैः ॥ प्रस्तारे यदि खण्डानां विज्दहस्य गृहे यदि ॥ ३९ ॥ स्थितिर्न स्यात्तदा वाच्यः सङ्ख्याऽभावः सदा बुधैः ॥ गृहे तृतीये स्वप्नस्य फलं वक्ष्ये विशेषतः ॥ ४० ॥

अर्थ—ऐसे सब जगह प्रश्नवेत्ता पंडितजनोंने संख्या जाननी. जो प्रस्तारमें जो [शकले जिन घरोंमें हैं] वे ही तिनही घरोंमें हों विज्दहपंक्तिमें कोई एक भी ॥ ३९ ॥ न हो तो संख्याका अभाव कहना. अब तीसरे घरमें विशेषकरके सुपनाके फलको कहेंगे ॥ ४० ॥

द्व्यादीनां संख्याज्ञानार्थं शकलानां प्रथमादिगृहेष्वंकानां क्रमः ।															
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
÷	≑	⫶	≑	⋮	÷	≡	≣	≐	÷	⫶	≑	≐	÷	÷	≣
१	३	६	१०	१५	२१	२८	३६	४५	५५	६६	७८	९१	१०५	१२०	१३६

प्रस्तारस्य तृतीयं तु खण्डं च शकुनक्रमे ॥ यत्तृतीयं हतं ताभ्यामुत्पन्नं यद्भवेत्किल ॥ ४१ ॥ तेन प्रस्तारके खण्डं प्रथमं च नियोजयेत् ॥ ताभ्यां जातं शुभं खण्डं तदा जातं शुभं वदेत् ॥४२॥

अर्थ—प्रस्तारका जो तीसरा खंड है और शकुनपंक्तिका जो तीसरा खंड है तिनके गुणनेसे जो शकल उत्पन्न हो ॥ ४१ ॥ तिस शकलसे प्रस्तारकी पहिली शकलका गुणन करें; उनसे जो शुभ शकल उत्पन्न हो तो आया हुआ स्वप्न शुभ है ऐसे कहो ॥ ४२ ॥

अशुभे त्वशुभं स्वप्नं फलं मध्ये च मध्यमम् ॥ तत्खण्डवशतः स्वप्नभेदं सर्वं वदेद्बुधः ॥ ४३ ॥ अधुना तुर्यगेहस्य विशेषं तद्वदाम्यहम् ॥ काचित्स्त्री त्वां समागत्य ब्रूते प्रश्नं विचारय ॥४४॥

अर्थ--अशुभ शकल हो तो अशुभ स्वप्न कहना, मध्यम हो तो मध्यम फल कहना. तिस ही शकलके वशसे पंडित जन संपूर्ण स्वप्नभेदको कहै ॥ ४३ ॥

अब चौथे घरका विशेष फल कहते हैं कि–कोई स्त्री आके तुमसे कहै कि प्रश्न विचारो ॥ ४४ ॥

भर्तारमन्यमिच्छामि पूर्वं शुभं द्वितीयकम् ॥ रामायाः प्रथमं गेहं तद्भर्तुश्च चतुर्थकम् ॥ ४५ ॥ दशमं गन्तुकामस्य गेहं वाच्यं विचक्षणैः ॥ स्त्रियः खण्डस्य यद्योगाच्छुभं खण्डं च जायते ॥ ४६ ॥ स च ज्ञेयः शुभो भर्ता द्वयोः साम्ये बला-धिकात् ॥ एवं च पुरुषस्यापि विवाहे सप्ततुर्ययोः ॥ ४७ ॥

अर्थ––मैं अन्य पतिकी इच्छा करती हूं सो पहला अच्छा है वा दूसरा शुभ है? तहां प्रस्तारमें स्त्रीका पहला घर है और उसके पतिका चौथा घर है ॥ ४५ ॥ और जिसके पास जाया चाहती है उसका दशवां घर है. फिर जौनसेकी शकलके संग स्त्रीके घरकी शकलको गुणा करनेसे शुभ शकल आवे ॥ ४६ ॥ वही शुभ भर्ता (उत्तम पति) जानना और दोनों शकल समान हों तो बलाबल विचारै. इसी प्रकार पुरुषके विवाहमें भी सातवें तथा चौथे खंडसे प्रस्तारकी प्रथम शकलका गुणा करके सब फल कहना; तहां मुख्य स्त्रीका ७ वां घर, दूसरीका ४ था है ॥ ४७ ॥

अस्मिन भूमितले द्रव्यमस्ति नास्ति विचारय ॥ चतुर्थं रिपु-खण्डेन गुणयेदुकलाभिधम् ॥ ४८ ॥ अथवा दाखिलं खण्डं यदा द्रव्यं हि वर्तते ॥ यदि स्यान्मुन्कलीवं च तदापि वर्तते धनम् ॥ ४९ ॥ परंतु स्वल्पकं ज्ञेयमन्यथा नास्ति निश्चितम् ॥ द्रव्यमस्ति तदा कस्यां दिशि ब्रूहि विचारतः ॥ ५० ॥

अर्थ—यहां पृथ्वीतलमें द्रव्य है कि नहीं ऐसा विचार करो. तहां प्रस्तारकी चौथी शकलको छठीके साथ गुणा करै, जो उकला शकल आवे ॥ ४८ ॥ अथवा दाखिल शकल आवे तो द्रव्य है, जो मुन्कलीव आवे तो भी धन है ॥ ४९ ॥ परंतु स्वल्प है. जो इनसे अन्य शकल आवे तो नहीं है ऐसा निश्चय करै. जो द्रव्य है तो कौनसी दिशामें है ऐसे विचारके कहो ? ॥ ५० ॥

सम्भावितस्य स्थानस्य चतुर्भागं च कल्पयेत् ॥ चतुरस्रस्य मध्ये तु रेखे कार्ये प्रयत्नतः ॥५१॥ तिर्यगूर्ध्वस्वरूपेण चतुर्भागं च जायते ॥ पूर्वाभिमुखके वामे पूर्वं दक्षे च दक्षिणम् ॥ ५२ ॥

अर्थ—तहां जो द्रव्य धरनेका स्थान कल्पित कर रक्खा है उसके चार भाग कल्पित करै. फिर चौखूंटे स्थानमें यत्नसे दो रेखा करै ॥ ५१ ॥ जैसे |__| स्थान है इसमें |—|—| ये दो रेखा तिरछी और ऊपरके स्वरूपकरके निकली. अब इसके चार भाग होगये हैं. तहां पूर्वके सन्मुख वाम भागमें पूर्व दिशा जाननी और दहिनी तर्फ दक्षिण दिशा जाननी ॥ ५२ ॥

पूर्वादध उत्तरं च दक्षिणाच्चापि पश्चिमम् ॥ रमलं पातयेत्तत्र प्रस्तारं कारयेद्बुधः ॥ ५३ ॥ तुर्य-गेहस्थखण्डस्य दिशायां द्रव्यमादिशेत् ॥ एवं पुनः पुनः कुर्याद्यावत्स्याद्धस्तमात्रकम् ॥ ५४ ॥

अर्थ—पूर्वके नीचे उत्तर आर दक्षिणसे नीचे पश्चिम है फिर तहां रमल डालै पंडितजन प्रस्तार बनावे ॥ ५३ ॥ फिर चौथे घरकी शकलकी जो दिशा है तिसमें धन बतावे, ऐसे वारंवार करै. जब एक हाथमात्र भूमि रह जावे तबतक करै, अर्थात् वारंवार इसी तरह पाशे डालै प्रस्तार बनाके चौथे घरसे फल कहता रहै ॥ ५४ ॥

स्थलं तावत्प्रकर्त्तव्यमगाधं च विचारयेत् ॥ अब्दहस्य क्रमेणैव रेखाबिन्दोश्च संख्यया ॥ ५५ ॥ रेखाया द्विगुणं ग्राह्यमेवं संख्यां च कारयेत् ॥ तुर्यखण्डस्य तत्तुल्यमगाधं कथयेत्सुधीः ॥ ५६ ॥ अंगुल्या हस्तपर्यंतं स्वबुद्ध्या तं विचारयेत् ॥ एवं भूक्षिप्तद्रव्यस्य प्रकारः कथितो मया ॥ ५७ ॥

अर्थ—एक हाथ प्रमाण स्थल समझके पीछे भीत आदिमें गड़े हुएकी ऊँचाईको जानै. अब्दहके क्रमकरके रेखा और बिंदुकी संख्यासे जानै ॥ ५५ ॥ रेखाकी दूनी संख्या करनी; ऐसे संख्या करै. इस प्रकार चौथी शकल ही अब्दह-क्रमसे जो संख्या है उसके तुल्य ऊंचे नीचे अगाध बताना; अर्थात् द्रव्यस्थानकी

उँचाई निचाई जानना ॥ ५६ ॥ अंगूठासें ले हाथपर्यंत अपनी बुद्धिसे विचारै इस प्रकार मैंने भूमिमें गढ़े हुए धनका प्रकार कह दिया यह जानो ॥ ५७ ॥

अगाधचक्रमिदम् ।

चौथे घरकी शकलको इस चक्रमें देखके नीचेकी संख्या बताओ.															
· — — —	— · — ·	· — · —	— — — —	· · — ·	· — — ·	— — — ·	— · — —	— — · —	· · — —	— — · ·	· · ·	· — · ·	— · · ·	— · · —	· · · ·
२९	२०	२५	३०	१९	२१	२२	२८	२६	२७	१८	२३	१७	१६	२४	१५

इदानीं पञ्चमे गेहे प्रश्नं वक्ष्ये विशेषतः ॥ केनागत्य कृतः प्रश्नः सन्तानं मे भविष्यति ॥ ५८ ॥ तदा प्रस्तारकं कार्यं तस्मात्सर्वं विलोकयेत् ॥ आद्य १ पञ्चम ५ योर्योगात् षष्ठ ६ सप्तम ७ योस्तथा ॥५९॥

अर्थ--अब पांचवें घरमें कछु विशेष प्रश्न कहते हैं कि किसीने आके प्रश्न किया कि मेरे संतान होगी ?॥ ५८ ॥ तहां प्रस्तार करै, तिससे संपूर्ण देखै. पहले और पांचवें घरसे एक शकल बनावे फिर छठे और सातवेंके योगसे (दूसरी) शकल बनावे ॥ ५९ ॥

अनयोर्योगतः खण्डं शुभदाखिलकं भवेत् ॥ तदा सन्तानकं वाच्यं भविष्यति न संशयः ॥६०॥ अशुभे दाखिले भूत्वा शीघ्रमेव मरिष्यति ॥ साबिते मुन्कलीबे च शुभे चेच्चिरकालतः ॥ ६१ ॥

अर्थ—यदि इन दोनोंके योगसे शुभ दाखिल शकल होवे तो निश्चय संतान होगी ॥ ६० ॥ जो अशुभ दाखिल शकल हो तो संतान होके शीघ्र ही मर जावेगी. जो शुभ साबित तथा मुन्कलीब हो तो बहुत कालमें होगी ॥ ६१ ॥

अशुभे मुन्कलीबे च गर्भपातो भवेद्ध्रुवम् ॥ अन्यथा चेत्तदा न स्यात् सन्तानं तस्य निश्चितम् ॥ ६२ ॥ कति संख्यान्यपत्यानि प्रश्ने त्वेवं कृते सति ॥ आद्यसप्तमयोर्योगात्खण्डं तस्माद्विचारयेत् ॥ ६३ ॥

अर्थ—जो अशुभ मुन्कलीव हो तो गर्भपात होगा. जो इनसे अन्यथा अन्य ही कोई खारिज शकल हो तो तिसके निश्चय संतान नहीं होगी ॥ ६२ ॥ कितनी (पुत्रादिक) संतान होंगी? तहां प्रस्तार बनाके पहली और सातवीं शकलसे एक बनावे, तिससे विचारे ॥ ६३ ॥

सूर्यखण्डे च चत्वारि षट् शुक्रस्य प्रकीर्तितम् ॥ बुधे द्वयं शशी पञ्च शनेरेकं प्रकीर्तितम् ॥ ६४ ॥ गुरोस्त्रयं कुजे वेदा राहुकेत्वोश्च्युतिर्भवेत् ॥ एवं संख्यात्र कथिता पुनरग्रे च कथ्यते ॥६५॥

अर्थ—जो सूर्यकी शकल हो तो चार, शुक्रकी हो तो छह, बुधकी हो तो दो, चंद्रमाकी हो तो पांच, शनिकी हो तो एक संतान कहनी ॥ ६४ ॥ बृहस्पतिकी हो तो तीन, मंगलकी हो तो चार संतान कहनी. राहु केतुकी शकल हो तो गर्भ खंडित होगा; ऐसे यहां संख्या तो कही. अब आगे फिर कहते हैं ॥ ६५ ॥

मद्भार्यायाश्च गर्भोऽस्ति नास्ति वेति विचारय ॥ तदुद्देशं समाश्रित्य प्रस्तारं कारयेद्बुधः ॥ ६६ ॥ शकलं रचयेद्विद्वानाद्यसप्तमयोगतः ॥ दाखिले साबिते वापि जाते गर्भोऽस्ति निश्चितम् ॥६७॥

अर्थ—कि मेरी स्त्रीके गर्भ है अथवा नहीं? यह विचारो, तिसके उद्देशसे पंडितजन प्रस्तार बनाके ॥ ६६ ॥ पहली और सातवीं शकलके योगसे एक शकल बनावे, जो वह शकल दाखिल अथवा साबित हो तो निश्चय गर्भ है ॥ ६७ ॥

खारिजे नैव गर्भोऽस्ति मुन्कलीवे तथा वदेत् ॥ किंवा षष्ठाद्ययोर्योगात्पूर्वोक्तं च फलं वदेत् ॥६८॥ गर्भश्चेज्जायते पुत्रः कन्या वेति विचारयेत् ॥ सप्तमाद्यभवं खण्डं पञ्चमस्थेन योजयेत् ॥ ६९ ॥

अर्थ—जो खारिज शकल हो तो गर्भ नहीं है, मुन्कलीव हो तो भी गर्भ नहीं है. अथवा छठे और पहले घरसे एक शकल बनाके पूर्वोक्त फल कहै ॥६८॥ फिर गर्भ है तो पुत्र होगा अथवा कन्या होगी? ऐसे विचारो. तहां सातवें और पहले घरसे उत्पन्न हुई शकलको पांचवीं शकलके संग गुणा करै ॥ ६९ ॥

पुमांश्चेज्जायते पुत्रो योषित्कन्या च जायते ॥ क्लीबे च जायते कन्या क्लीबेऽन्यो विधिरुच्यते ॥ ७० ॥ उभौ पूर्वोद्भवौ खण्डौ पञ्चमं शकलं तथा ॥ त्रयं नपुंसकं चैव पुनरुक्तं च पार्थिवे ॥७१॥

अर्थ—जो यह शकल पुरुषसंज्ञक आवे तो पुत्र हो और स्त्रीसंज्ञक हो तो कन्या जन्मे. नपुंसकसंज्ञक हो तो भी कन्या हो. परंतु नपुंसक शकल हो तो अन्य भी विधि कहते हैं ॥ ७० ॥ पहले उत्पन्न हुई पहली सातवींसे तथा (पहली और) छठीसे दोनों शकल और पांचवीं शकल तीनों नपुंसक हों तथा पृथ्वीतत्त्वके घरमें पुनरुक्त हों ॥ ७१ ॥

तदा नपुंसकः पुत्रो जायते नात्र संशयः ॥ पञ्चमस्थं तु
शकलं यत्संख्ये पुनरागतम् ॥ ७२ ॥ सन्तानं तत्समं
वाच्यमग्निवाय्वोः सुतः खलु ॥ आप्ये कन्या गर्भपातः
पार्थिवे चेच्छुभं यदि ॥ ७३ ॥

अर्थ—तो नपुंसक पुत्र होवे; इसमें संदेह नहीं. प्रस्तारकी पांचवीं शकल प्रस्तारमें जौनसे घरमें पुनरुक्त होकर आ जावे ॥ ७२ ॥ इतनी ही संख्याप्रमित संतान कहनी. जो अग्नि वायुकी शकल हो तो निश्चय पुत्र हो, जो जलतत्त्वकी हो तो कन्या हो, पृथ्वीतत्व हो तो गर्भपात हो, जो शुभ पृथ्वी तत्त्वकी हो ॥ ७३ ॥

बलान्वितं तदा कन्या पृथ्व्यामेवं विचारयेत् ॥ न
चेत्तत्पुनरुक्तं स्यात्तदाऽन्यो विधिरुच्यते ॥ ७४ ॥
पञ्चमस्थस्य खण्डस्य चाब्दहे यद्गृहे स्थितिः ॥ प्रस्तारे
पञ्चमं स्थानं तस्माद्यत्संख्यकं भवेत् ॥ ७५ ॥

अर्थ—तथा बलयुक्त हो तो कन्या हो, ऐसे पृथ्वी तत्त्वविषे विचार करै. जो पुनरुक्त नहीं हो अथात् प्रस्तारमें फिर कहीं नहीं आवे तो अन्य विधि कहते हैं ॥ ७४ ॥ पांचवीं शकल अब्दहपंक्तिमें जिस घरम स्थित हो, अब्दहका घर प्रस्तारकी पांचवीं शकलसे जितनी संख्यापर हो ॥ ७५ ॥

तस्यापत्यानि तावन्ति भवेयुर्नात्र संशयः ॥ दिवाबली
भवेदाद्यं खण्डं चेद्दिवसे जनिः ॥ ७६ ॥ निशाबली
तदा रात्रौ सन्ध्यायां सन्ध्ययोर्द्वयोः ॥ नवमस्थस्य
खण्डस्य राशौ लग्नं वदेत्किल ॥ ७७ ॥

अर्थ—उसके उतनी ही संतान होवें इसमें संदेह नहीं. संतान किसवक्त जन्मेगी यह कहते हैं ॥ प्रस्तारकी पहली शकल दिनमें बलाढ्य हो तो दिनमें संतान

जन्मेगी ॥ ७६ ॥ और रात्रिमें बलाढ्य हो तो रात्रिमें और संध्याओंमें बली हो तो संधियों अर्थात् प्रातःकाल वा सायंकालमें बालक उत्पन्न होगा और नवमें घरकी शकलकी जो राशि हो उस राशिका लग्न कहो ॥ ७७ ॥

आत्मजश्चिरजीवी वा स्वल्पजीवी भविष्यति ॥ पञ्चमास्तभवं खण्डं शुभं चेच्चिरजीविनः ॥ ७८ ॥ यदि चेत्तद्भवं खण्डं प्रस्तारे शुभगेहगम् ॥ अशुभं चेदल्पजीवी मध्ये मध्यं विनिर्दिशेत् ॥ ७९ ॥

अर्थ—पुत्र दीर्घ आयुवाला होगा अथवा स्वल्प आयुवाला होगा? तहां प्रस्तारकी पांचवीं और सातवीं शकलकी एक शकल बनावे; जो वह शुभ हो तो पुत्र बहुत आयुवाला (उमरवाला) होगा ॥ ७८ ॥ जो वह शकल प्रस्तारमें शुभघरमें फिर कहीं पड़ी हो तो भी (चिरंजीवी पुत्र हो) अशुभ हो तो थोड़ी आयुवाला, मध्यम हो तो मध्यम अवस्थावाला कहना ॥ ७९ ॥

धनाढ्यो वा दरिद्रो वा सुतः स्यात्कीदृशो मम ॥ तदा तु शकलं कार्यं पञ्चमाष्टमयोगतः ॥ ८० ॥ तेन पञ्चदशं हन्यात् खण्डं सौम्यं यदा भवेत् ॥ तदा पुत्रो धनाढ्यः स्यान्मध्यमेऽल्पधनी भवेत् ॥ ८१ ॥

अर्थ—धनाढ्य अथवा दरिद्री, मेरे कैसा पुत्र होगा? तब पांचवीं और आठवीं शकलसे एक शकल बनावे ॥ ८० ॥ तिससे पंदरहवीं शकलको गुणा करै. वह शकल जो शुभ आवे तो धनाढ्य पुत्र हो, जो मध्यम आवे तो थोड़े धनवाला हो ॥ ८१ ॥

अशुभे च दरिद्री स्यात् संख्या तस्यापि पूर्ववत् ॥ एवं पञ्चमगेहे तु विशेषो मे प्रकीर्तितः ॥ ८२ ॥ गृहे षष्ठे विशेषं यत्कथयाम्यधुना किल ॥ रोगिणः प्रथमं गेहं षष्ठं रोगस्य निश्चितम् ॥ ८३ ॥

अर्थ—अशुभ हो तो दरिद्री हो, द्रव्यसंख्या इसकी पूर्ववत् अर्थात् जैसे पहले दो धनियोंमें कौनसा धनी है? इस प्रश्नको कह चुके हैं वैसे ही इसके पिताके साथ विचारे. ऐसे पांचवें घरमें मैंने विशेष कहा ॥ ८२ ॥ अब छठे घरमें कछु विशेष कहते हैं

अर्थात् रोगीके आरामके विषे प्रश्न कहते हैं—कि प्रस्तारमें पहला घर रोगीका है, छठा ६ घर रोगका है ॥ ८३ ॥

चतुर्थमौषधस्यापि वैद्यस्य दशमं स्मृतम् ॥ द्वितीयं दशमं स्थानमौषधस्यापि कुत्रचित् ॥ ८४ ॥ आरोग्यस्यैकादशं च द्वादशं दीर्घरोगकम् ॥ प्रथमादिगृहे सौम्यं शकलं च भवेद्यदि ॥ ८५ ॥

अर्थ—चौथा घर औषधका है, दशवां घर वैद्यका है, कहीं दूसरा वा दशवां घर भी औषधका कहा है ॥ ८४ ॥ ग्यारहवां घर ११ आरोग्य (आराम) होनेका है, बारहवां घर दीर्घ (बड़े) रोगका (बहुत कालके रोगका) है. पहले आदि इन घरोंमें जहां २ शुभ शकल हो ॥ ८५ ॥

तस्य तस्य शुभं वाच्यमशुभेष्वन्यथा वदेत् ॥ एवं सामान्यतः प्रोक्तं विशेषं च वदाम्यहम् ॥ ८६ ॥ रोगस्थं खारिजं सौम्यं किंवा मुन्क्लीवकं शुभम् ॥ रोगमुक्तिस्तदा शीघ्रं सुखेन कथिता बुधैः ॥ ८७ ॥

अर्थ—उसी २ घरका अच्छा हाल कहना. जो अशुभ हो तो अन्यथा अर्थात् अशुभ फल कहै; ऐसे सामान्यसे कहा. अब विशेष कहते हैं ॥ ८६ ॥ रोगस्थानमें जो शुभ खारिज अथवा शुभ मुन्कलीव शकल हो तो पंडित जनोंने सुखपूर्वक शीघ्र ही रोगसे छूटना अर्थात् आराम होना कहा है ॥ ८७ ॥

अशुभे ते यदि स्यातां कष्टाच्चैव बिलम्बतः ॥ दाखिले साबिते वापि रोगमुक्तिर्न जायते ॥ ८८ ॥ आग्नेयादीनि खण्डानि षष्ठस्थानगतानि च ॥ पित्तवातकफोद्भूतमजीर्णजनितं तथा ॥ ८९ ॥

अर्थ—जो वे दोनों अशुभ हों तो कष्टसे तथा विलंबसे आराम हो; जो उस घरमें दाखिल अथवा साबित शकल हो तो रोगमुक्ति (आराम) नहीं हो ॥ ८८ ॥ और अग्नि आदि तत्त्वोंकी जो शकलें छठे स्थानमें पड़ी हों तिनके ही क्रमसे पित्त, वात, कफ, अजीर्ण इनसे उपजी बीमारी बताना. अर्थात् अग्नितत्त्व हो तो पित्तकी बीमारी, वायुमें, वात, जलमें कफ, पृथ्वीतत्त्व हो तो अजीर्णकी बीमारी कहना ॥ ८९ ॥

अथवा पार्थिवे ज्ञेयं रुधिरास्थिविकारजम् ॥ त्वगस्थ्यन्तर्गतं वापि क्षतं ज्ञेयं सुनिश्चितम् ॥ ८९ ॥ रोगिणो मरणजीवने वदेदाद्यशत्रुवशतो १ । ६ हि यद्दलम् ॥ तद्भवेच्छनिदलं बुधस्य वा रोगिणो मरणमेव निश्चितम् ॥ ९० ॥

अर्थ—अथवा पृथ्वीतत्वमें रुधिर वा अस्थिका विकार जानना वा त्वचा अस्थि आदिमें कोई चोट आदि लगी जानना ॥ ८९ ॥ रोगीके मरने जीवनेके प्रश्न करनेविषे पहली और छठी शकलकी एक बनावे फिर वह शकल शनैश्चरकी होवे तो निश्चय रोगीका मरना होवे ॥ ९० ॥

अन्यखेटशकलं हि तद्भवेज्जीवनं भवति रोगिणो ध्रुवम् ॥ एवमाद्य १ मनुजेन ३ संगुणं खण्डकं फलमवेहि पूर्ववत् ॥ ९१ ॥ सप्तमे च गृहे चौरप्रश्नं वक्ष्ये विशेषतः ॥ हुमरा नकी च शकले स्यातां प्रस्तारके न चेत् ॥ ९२ ॥

अर्थ—जो यदि वह शकल अन्य ग्रहकी होवे तो निश्चय रोगीका जीवन होवे, ऐसेही प्रस्तारकी पहली और तिसरी शकलको गुणके एक शकल बना लेवे, पीछे पहलेकी तरह फल जानें ॥ ९१ ॥ अथ नष्ट (खोईहुई) वस्तुके लाभका प्रश्न सातवें घरमें विशेष करके चोरका प्रश्न कहेंगे जो यदि प्रस्तारमें हुमरा और नकी ये २ शकल नहीं हों तो ॥ ९२ ॥

न चौरेण हृतं द्रव्यं तद्रव्यं तस्य वेश्मनि ॥ अथवा कब्जुलखारीजमतवेखारिजं तथा ॥ ९३ ॥ प्रस्तारे नास्ति तद्रव्यं न चौरेण हृतं वदेत् ॥ अन्यथा च हृतं द्रव्यं ज्ञेयं प्रश्नार्थकोविदैः ॥ ९४ ॥

अर्थ—द्रव्य चोरनें नहीं हरा है वह द्रव्य तो उसके घरमेंही है, अथवा कब्जुल-खारिज और अतवेखारिज ॥ ९३ ॥ ये भी शकल प्रस्तारमें नहीं हों तो चोरने द्रव्य नहीं हरा है और इससे अन्यथा हो अर्थात् ये सब प्रस्तारमें हों तो जरूर द्रव्य चोरागया है ऐसे प्रश्नवेत्ताओंने जानना ॥ ९४ ॥

स्वकीयः परकीयो वा चौरः प्रश्ने कृते सति ॥ प्रस्तारे सर्वखण्डानां

रेखाबिन्दुवतां तथा ॥ ९५ ॥ रेखाणां तु द्वयं ग्राह्यं बिन्दूणामेकमेव च ॥ एवं संख्यैक्यकं कार्यं त्रिभिः शेषं च कारयेत् ॥९६॥

अर्थ—अपने जनोंमें चौर है ? अथवा अन्यजनोंमें परदेशी चोर है ? ऐसा प्रश्न किया जावे तहां प्रस्तारमें सब शकलोंकी रेखाओंकी और बिंदुओंकी संख्या करै ॥९५॥ रेखाओंकी दोदो बिंदु, और बिंदुओंकी एक २ ऐसे सब बिंदुओंको एकत्र करके तीनका ३ भाग देवे ॥ ९६ ॥

एकशेषे स्वकीयश्च द्विशेषे च समीपगः ॥ त्रिशेषे दूरदेशीयः सम्बंधाच्च परस्थितः ॥ ९७ ॥ तस्करः पुरमध्यस्थो बहिस्थो वा विचारयेत् ॥ आद्यचतुर्थयोश्चैकं सप्तमा ७ म्बरयोस्तथा ॥९८॥

अर्थ—जो यदि एक बाकी रहे तो अपने जनोंमें चोर है, दो बाकी रहें तो समीपका है, तीन बचें तो दूरदेशका है, संबंधसे बाहिर है ॥ ९७ ॥ चोर पुरमें (शहरमें) है, अथवा बाहिर चलागया ? ऐसा विचार करे तहां पहली और चौथी शकलकी एक बनावे और सातवीं तथा दशवीं शकलकी एक बनावे ॥ ९८ ॥

द्वाभ्यामेकं च कर्तव्यं तच्च दाखिल साबितम् ॥ ग्राममध्ये स्थितश्चौरः खारिजे च बहिर्गतः ॥ ९९ ॥ मुन्कलीवे च ग्रामस्थः परन्तु गमनोद्यतः ॥ स्वकीयानां समीपानां मध्ये चौरश्च को भवेत् ॥ १०० ॥

अर्थ—फिर इन दोनोंकी एक करै, जो यदि यह शकल दाखिल तथा साबित हो तो ग्रामके मध्यमें ही चोर ठहर रहा है; और खारिज हो तो ग्रामसे बाहिर गया ॥९९॥ जो यदि मुन्कलीव हो तो अभी ग्राममेंही है; परंतु जानेका उद्यम (तजवीज) कर रहा है, अपने जनोंमें तथा समीपके जनोंमें कौन चोर है ? ॥ १०० ॥

इति प्रश्ने कृते तत्र रमलं च विलोकयेत् ॥ अष्टमं द्वादशं वापि शक्रं १४ पञ्चदशं तथा ॥ १०१ ॥ एतेषां शकलानां च पूर्वस्थानेषु यानि च ॥ शून्यरेखानि तेभ्यश्च कुर्यादेकं च खण्डकम् ॥ १०२ ॥

अर्थ—ऐसा प्रश्न किया जावे तहां रमलको देखै; आठवीं ८ बारहवीं १२ चौदहवीं १४ पंदरहवीं १५ ॥ १०१ ॥ इन शकलोंमें पूर्व (पहले) २ ऊपरके स्थानेंम जितनी शून्य और रेखा हैं उन चारोंसे एक शकल बनावे अर्थात् यथाक्रमसे इन चारोंमेंसे एक २ भाग ग्रहण करके एक शकल बना लेवे ॥ १०२ ॥

प्रस्तारे यत्र पतति प्रथमादिगृहेषु च ॥ फलं तदनुसारेण तस्करस्यानुवर्ण्यते ॥ २ ॥ प्रथमे च स्वकीयश्च स्वगृहे चैव तिष्ठति ॥ द्वितीये गृहसम्बन्धी तृतीये बांधवादयः ॥ ३ ॥ सुहृद्भ्रातृभगिन्यश्चाथवा तेषां गृहे स्थितः ॥ चतुर्थे पितुरेवं च पूर्वसम्बन्धतो वदेत् ॥ ४ ॥

अर्थ—फिर वह शकल प्रस्तारमें पहले आदि जिस घरमें पड़े तिसके अनुसार चोरका फल कहते हैं ॥ २ ॥ प्रथम घरमें पड़ी हो तो अपनेही जनोंमें चोर है और अपनेही घरमें ठरह रहा है, दूसरे घरमें पडी हो तो घरका सम्बंधी है, जो तीसरे घरमें हो तो बंधु (भाई) आदिकोंमें है ॥ ३ ॥ मित्रजन,भाई, बहन इनमेंसे कोई है अथवा इनके घरमें चोर ठहर रहा है, चौथा घर पिताका है तिसकेही संबन्धसे कहै ॥ ४ ॥

स एव तस्करो ज्ञेयोऽथवा तेषां गृहे वदेत् ॥ पितुः पितामहस्यापि कृषिकारस्य वै गृहे ॥ ५ ॥ कुग्रामवासिनामेव तस्करः स्याच्चतुर्थके ॥ दूतानां प्रेमपात्राणां वेश्यानां नृत्यकारिणाम् ॥६॥

अर्थ—वही (पिता) चौर है, अथवा उनके घरमें चोर ठहर रहा है; पिता पितामह (दादा) अथवा खेती करनेवाला ॥ ५ ॥ अथवा तुच्छग्राममें रहनेवाला चोर है यह (हाल) चौथे घरमें है. और दूतजन प्रेम स्नेह करनेवाली वेश्या आदि नृत्य करनेवाले जन ॥ ६ ॥

कलावतां च गुणिनां गृहे चौरोऽस्ति पंचमे ॥ दासदासीसेवकानां षष्ठे चौरोऽस्ति निश्चितम् ॥ ७ ॥ दायादानां च नारीणां चौरः स्यात्सप्तमे गृहे ॥ इन्द्रजालकृतां वापि नृणां मार्गस्थघातिनाम् ॥ ८ ॥

अर्थ—और कारीगरी करनेवाले नट आदि तथा गुणीजन इनके घरमें चौर है ऐसा हाल पांचवें घरमें बताना. जो यदि छठे घरमें हो तो दास दासी सेवकजन इनमेंही निश्चय चोर है ॥ ७ ॥ जो सातवें घरमें हो तो हिस्सेदार तथा स्त्रियोंके घरमें चोर है और इंद्रजाल करनेवाले (बाजीगर) आदि पुरुषोंमें वा मार्गमें स्थित जनोंको नष्ट करनेवाले ॥ ८ ॥

प्रेतकर्मकृतां वापि गृहे चौरोऽष्टमे गृहे ॥ मार्गस्थानां तपस्विनां नवमे चाऽतिथिर्गृहे ॥ ९ ॥ जो राज्ञां वा श्रेष्ठपुंसां च त्वधिकारवतां ख१०भे ॥ मित्राणां चैव मन्त्रिणां चौरश्चैकादशे गृहे ॥१०॥

अर्थ—वा प्रेतकर्म करनेवालोंके घरमें चोर है ऐसे आठवें घरमें विचारना, और नवमें घरमें पड़ी हो तो मार्गमें स्थित होनेवाले तथा तपस्वी और अतिथि, अभ्यागत जनोंके घरमें [चोर] है ॥ ९ ॥ और राजाओंके घरमें तथा श्रेष्ठजनोंके वा अधिकारवालोंके, तहसीलदार आदि ओहदावालोंके घरमेंही चोर है यह दशवें घरमें पड़ी हो तो कहना. जो ग्यारहवें हो तो मित्रजन तथा मंत्री आदकोंके घरमें चोर बताना ॥१०॥

कारागृहस्थितानां च लोके जाग्रातिकारिणाम् ॥ नीचानां च गृहे चौरो विद्यते द्वादशे गृहे ॥ ११ ॥ त्रयोदशादिगेहेषु चतुर्ष्वपि गतेषु च ॥ तदाऽतिदूरे चौरस्तु गतो देशान्तरे यदि ॥ १२ ॥

अर्थ—जो बारहवें १२ घर पड़ै तो कैदमें रहनेवालोंके घरों तथा लोकमें जागरण करनेवाले सिपाही आदिकोंके घरमें अथवा नीच जनोंके घरमें चोर है ॥ ११ ॥ जो यदि तेरहवें आदि १३–१४–१५–१६–इन चार घरोंमेंसे कोईसे घरमें हो तो चोर अत्यंत दूर दूसरे देशमें चला गया है ॥ १२ ॥

तच्चेत्प्रस्तारके नास्ति तदा ज्ञेयं कथं बुधैः ॥ शकुनस्य क्रमे तस्य गेहाज्ज्ञेयं विचक्षणैः ॥ १३ ॥ दूरदेशे गतश्चौरः समीपे वा स्थितो यदि ॥ नवमे खारिजं चेत्स्यात्तदा दूरगतो भवेत् ॥ १४ ॥

अर्थ—जो यदि वह शकल प्रस्तारमें ही नहीं हो तो बुद्धिमान् जनोंने कैसे जानना यह कहते हैं कि, शकुनपंक्तिके घरके क्रमसे जानना योग्य है ॥ १३ ॥ चोर दूर

देशमें चला गया अथवा समीपमें स्थित है ? तहां प्रस्तारमें नवमें घर जो खारिज शकल हो तो दूर चला गया है ॥ १४ ॥

खारिजे च तृतीये स्यात्तदा निकटदेशगः ॥ उभये खारिजे वापि बलाधिक्यात्फलं वदेत् ॥१५॥ द्वयोश्च खारिजाभावे स्वग्रामे एव तिष्ठति ॥ कस्यां दिशि गतश्चौरः प्रस्तारे दशमे गृहे ॥ १६ ॥

अर्थ—जो यदि तीसरे घरमें खारिज शकल हो तो निकट (नजदीक) देशमेंही है. जो यदि इन दोनोंही घरोंमें खारिज हो तो बलाबल विचारके फल कहै ॥१५॥ जो यदि इन दोनों घरोंमें खारिज शकल नहीं हो तो अपनेही ग्राममें चोर ठहर रहा है. चोर कौनसी दिशामें गया है ? ऐसा प्रश्न किया जावे तहां प्रस्तारमें दशवें घरमें ॥१६॥

शकलं यद्दिशिस्थं च तद्दिशं च गतं वदेत् ॥ तस्करस्य गृहद्वारं नवमाच्छकलाद्वदेत् ॥ १७॥ कति दूरे स्थितश्चौर एवं प्रश्ने कृते सति ॥ दूरदेशे समीपे वा पूर्वोक्तशकलस्य च ॥ १८ ॥

अर्थ—जिस दिशाकी शकल हो उसी दिशामें गया चोर बताना और चोरके घरका द्वार (दरवाजा) नवेंवे घरसे कहै ॥ १७ ॥ चोर कितनी दूरपर स्थित है ॥ और दूर है अथवा समीप है ? ऐसा प्रश्न किया जावे तो पूर्वोक्त शकलका अर्थात् नवमी शकलका ॥ १८ ॥

विज्दहस्य गृहस्याङ्कतुल्यमध्वप्रमाणकम् ॥ क्षेत्रादियोजनान्तं च स्वबुद्धेः कल्पनाद्वदेत ॥ १९ ॥ चौरधनिकयोर्मध्ये कति ग्रामगृहाणि च ॥ इति प्रश्ने कृते तत्र रमलं च विलोकयेत् ॥१२०॥

अर्थ—और बिज्दहके घरके अंकका जितने घरोंका फासला है उतनाही मार्गका प्रमाण कहना. खेतसे आदि लेके योजनोंपर्यंत अपनी बुद्धिसे विचारके कहै ॥ १९ ॥ चोरके और धानिक पुरुषोंके मध्यमें कितने ग्राम और कितने घर हैं ? ऐसे प्रश्न करनेमें रमलको देखै ॥ १२० ॥

प्रस्तारे पञ्चमे षष्ठे नवमे सप्तमे तथा ॥ शकलानामब्दहेन संख्यां कुर्यात्खरंखयोः ॥ २१ ॥ तदैक्यं पञ्चमस्थस्य खण्डस्याङ्केन भाजयेत् ॥ शेषाङ्केन विजानीयाद्गृहाणि धनिचौरयोः ॥ २२ ॥

अर्थ—प्रस्तारमें पांचवें छठे नवमें सातवें घरमें जो शकल हो उनकी शून्योंकी और रेखाओंकी संख्याको अब्दहपंक्तिके क्रमसे करै (जोड़ै) यहां रेखाओंसे दूनी शून्य ग्रहण कर लेनी, अर्थात् रेखाके स्थानमें जो अब्दह क्रमसे अंक प्राप्त हो उसको दुगुना लेवे ॥ २१ ॥ फिर उस अंकको इकट्ठा करके प्रस्तारकी पांचवीं शकलके (उसी प्रकारसे बनाये हुए) अंकसे भाग देवै, फिर जितने अंक बाकी रहैं उतनेही घर धनी और चोरके अंतरमें जानने ॥ २२ ॥

ग्रामस्य गृहमध्येऽस्ति निकटे ग्रामके वदेत् ॥ दूरदेशे गतश्चौर-स्तत्र युक्तिं वदाम्यहम् ॥ २३ ॥ मही १ वह्नी ३ रसा ६ श्चाशा १० स्तिथ्यः १५ कक्षि २१ नगाक्षि २८ च ॥ षट-त्रिंशत् ३६ पञ्चवेदाश्च ४५ पञ्चबाणाश्च ५५ षटरसाः ६६ ॥२४॥

अर्थ—ग्रामकेही घरोंके मध्यमें चोर है ? अथवा ग्रामके निकट (समीप) है ? और जो यदि दूर चला गया हो तो तहां मैं युक्ति कहता हूं ॥ २३ ॥ एक १ तीन३—६—१०—१५—२१—२८—३६—४५—५५—६६ ॥ २४ ॥

नागाद्रयः ७८ कुनन्दाश्च ९१ पञ्चशून्येन्दव १०५ स्तथा ॥ नभोद्रीन्दु १२० रसत्रीन्दु १३६ विज्दहेक्रमतो मया ॥२५॥ आङ्कश्च कथिताः खा १० ष्ट ८ नगा ७ नामाङ्कसंयुतिः ॥ प्रस्तारशकलानां च कर्तव्यानेन कर्मणा ॥ २६ ॥

अर्थ—तथा अठत्तर ७८—९१—१०५—१२०—१३६—ऐसे क्रमसे (एकसे लेके एकसौ छत्तीसतक) विज्दह पंक्तिमें मैंने ॥ २५ ॥ (सोलहों घरोंके) अंक कहे हैं सो इसी क्रम करके प्रस्तारकी दशवीं आठवीं सातवीं शकलोंके अंकोंका जोड़ करना ॥ २६ ॥

प्रस्तारे पुनरेवं च तथा पञ्चाष्टखण्डयोः ॥ अंकयोगेन भक्तश्चे-च्छेषं ग्रामास्स्युरन्तरे ॥ २७॥ धनितस्करयोर्मध्ये चान्तरं ग्रामगेहयोः ॥ चौरस्य कीदृशं रूपमेवं प्रश्ने कृते सति ॥ २८ ॥

अर्थ—फिर ऐसेही प्रकारसे प्रस्तारमें जो पांचवीं और आठवीं शकल हैं उनके

अंकोंको जोड़के तिससे भाग देवै. फिर जो बाकी अंक रहें उतनेही ग्राम मध्यमें हैं अर्थात् चोरके फासलेमें उतने ग्राम हैं ॥ २७ ॥ ऐसे पूर्वोक्त प्रकारोंकरके धनी और चोरके मध्यमें ग्रामोंका तथा घरोंका अंतर (फासला) जानना. चोरका कैसा रूप है? ऐसा प्रश्न कियाजावे तो ॥ २८ ॥

सप्तमं शकलं यत्र चाऽब्दहस्य गृहे स्थितम् ॥
तत्तुल्यगेहे प्रस्तारे शकलस्य स्वरूपतः ॥२९॥ चौरस्य
सर्वभेदांश्च कथयेत्पूर्वमीरितान् ॥ ज्ञातिवर्णाकृति-
स्त्र्यादि स्वभावादी निर्दिशेत् ॥ १३० ॥

अर्थ—प्रस्तारकी सातवीं शकल अब्दह पंक्तिके जिस घरमें पड़ी हो उसी घरकी तुल्य प्रस्तारके घरमें जो शकल पड़ी हो उसके स्वरूपसे ॥ २९ ॥ चोरके संपूर्ण पहले कहेहुये भेदोंको कहै. जाति, वर्ण, स्त्री आदि स्वभाव इत्यादिक सब कहने ॥ १३० ॥

खण्डस्य सदृशं सर्वं कथयेत्प्रश्नकोविदः ॥ चौराहृतस्य द्रव्यस्य प्राप्तिश्चैव भविष्यति ॥ ३१ ॥ इति प्रश्ने कृते खण्डं धनलाभोद्भवं कुरु ॥ आद्यशक्रोद्भवं खण्डमनयोर्योगतो दलम् ॥ ३२ ॥

अर्थ—प्रश्नवेत्ता पंडितजन शकलकेही सदृश संपूर्ण हाल कहै. चोरसे हरी हुई द्रव्यकी प्राप्ति होगी क्या ? ॥ ३१ ॥ ऐसे प्रश्न करनेपर दूसरी और ग्यारहवीं शकलकी एक शकल करै तथा पहली १ और चौदहवीं १४ की एक करै फिर इन दोनोंसे एक शकल करनी ॥ ३२ ॥

दाखिलं वा बयाजं स्यात्तदा शीघ्रं हि लभ्यते ॥ अन्यथा
नैव लाभः स्यादुकलान समे १५ भवेत् ॥ ३३ ॥
अथवा शुभदाखीलं साबितं वा द्वितीयके ॥ तदा
सर्वधनप्राप्तिश्शुभेऽर्द्धे च लभ्यते ॥ ३४ ॥

अर्थ—जो दाखिल अथवा बयाज शकल होवे तो शीघ्रही मिलै. जो इससे अन्यथा हो तो लाभ न हो; यदि पंदरहवें १५ घर उकलान हो तो अर्थात् पंदरहवें घर उकला हो तो विपरीत फल हो ॥ ३३ ॥ जो यदि दूसरे घर शुभ दाखिल

वा शुभ साबित शकल हो तो संपूर्ण धनकी प्राप्ति हो जावे, जो अशुभ हो तो आधा धन मिलै ॥ ३४ ॥

मुन्कलीवे शुभेऽप्यर्द्धमशुभे खारिजे न हि ॥ द्वितीये चाष्टमे गेहे खारिजं च यदा भवेत् ॥ ३५ ॥ चौरस्यापि च गेहाच्च धनमन्यत्र गच्छति ॥ एवं चौरस्य प्रश्नं मे कथितं सप्तमे गृहे ॥ ३६ ॥

अर्थ—जो शुभ मुन्कलीव हो तोभी आधा मिलै, अशुभ खारिज हो तो कुछ नहीं मिलै. जो यदि दूसरे और आठवें घर खारिज शकल हो तो ॥ ३५ ॥ चोरकेभी घरसे धन अन्य जगह चलागया अर्थात् अब धन चोरके घरमेंभी नहीं है. ऐसे मैंने सातवें घरमें चोरका प्रश्न कहा है ॥ ३६ ॥

अनेनैव प्रकारेण स्वर्णकर्तॄन्निरीक्षयेत् ॥ देवान्निरीक्षयेत्कुत्र देशे ग्रामे गृहेषु च ॥ ३७ ॥ भौमस्य शकलाभ्यां च अस्ति नास्ति विलोकयेत् ॥ शेषं च चौरवज्ज्ञेयं सर्वं निश्चित्य संवदेत् ॥ ३८ ॥

अर्थ—इसी प्रकारसे सोना करनेवाले अर्थात् रसायन बनानेवाले जनोंको देखै और देवताओंकोभी देखै कि, कौन देशमें किस ग्राममें किन घरोंमें हैं ? ॥ ३७ ॥ मंगलकी शकलोंकरके है अथवा नहीं है ऐसा विचार करना अर्थात् सातवें पर मंगलकी शकल होवे तो है; नहीं तो नहीं है. और बाकी सब वृत्तांत चौरकी तरह जानकर निश्चय करके कहै ॥ ३८ ॥

अधुनाऽष्टमभावस्य फलं वक्ष्ये विशेषतः ॥ ऋणमुक्तिर्भवेद्वापि वृद्धिः किंवा भविष्यति ॥३९ ॥ इति प्रश्ने च प्रथमे कब्जु द्दाखिलखण्डकम् ॥ द्वितीयेऽतवदाखीलमष्टमे पुनरुक्तकम् ॥१४०॥

अर्थ—अब विशेषकरके आठवें भावके फलको कहेंगे कि कर्जा दूर हो जावेगा अथवा कर्जा बढैगा ? ॥३९॥ ऐसे प्रश्नमें प्रस्तारके पहले घरमें जो कब्जुद्दाखिल शकल हो और दूसरे घर अतवेदाखिल शकल हो तो फिर आठवें घरभी हो ॥ १४० ॥

ऋणमुक्तिस्तदा वाच्या शीघ्रमेव भविष्यति ॥ खारिजं चे-द्वितीये स्यादष्टमे शुभसंज्ञकम् ॥ ४१ ॥ किंचित्कालविलम्बेन

ऋणमुक्तिर्भवेद्ध्रुवम् ॥ आद्ये हुम्रा धनेऽङ्कीशस्तृतीये चोकला क्रमात् ॥ ऋणमुक्तिस्तदा न स्याद्वृद्धिश्चैवोत्तरोत्तरम् ॥ ४२ ॥

अर्थ—तो शीघ्रही कर्जा दूर हो जावेगा. जो यदि दूसरे तथा आठवें घर शुभसंज्ञक खारिज शकल होवे तो ॥ ४१ ॥ कछु दिनों पीछे कर्जा दूर होगा. जो पहले घर हुमरा होवे और दूसरे घर अंकीश, तीसरे घर उकला हो तो कर्जा दूर नहीं होवे. क्रमसे उत्तरोत्तर बढ़ताही जावे ॥ ४२ ॥

नवमे भवने सम्यक् विशेषं तद्वदाम्यहम् ॥ विदेशस्थो हि पुरुषो जीवितो वा मृतोऽपि वा ॥ ४३ ॥ प्रथमात्तिथि १५ पर्यंतं शून्यानां गणानां कुरु ॥ यदि दन्ता धिकं ३२ शून्यं जीवितं निश्चितं वदेत् ॥ ४४ ॥

अर्थ—अब नवमें घरका विशेष हाल कहते हैं—कि परदेशमें गया हुआ पुरुष जीवता है अथवा मरगया ? ॥ ४३ ॥ तहां पहले घरसे पंदरहवें घरतककी शून्योंकी गिनती करले, जो यदि बत्तीससे ३२ अधिक शून्य हों तो निश्चय जीवता है. यह कहै ॥४४॥

दन्तादल्पे मृतं ज्ञेयं रद ३२ तुल्येऽतिकष्टितम् ॥ परिणामे सुखं ज्ञेयमाद्ये सौम्येऽन्यथाऽन्यथा ॥ ४५ ॥ दशमाख्ये गृहे किञ्चिद्विशेषं तद्वदाम्यहम् ॥ द्वयोर्विवादिनोर्मध्ये मुख्यस्य प्रथमं गृहम् ॥ ४६ ॥

अर्थ—जो बत्तीससे कम शून्य हों तो मृत्यु जाननी-जो बत्तीसे ३२ ही हों तो अत्यंत कष्ट जानना, परंतु पहले घर शुभ शकल हो तो परिणाममें (अखिरमें) आराम (सुख) हो जायगा. जो प्रथम घर अशुभ शकल हो तो सुख नहीं होगा ॥४५॥ अब दशवें घरमें कछु विशेष हाल कहते हैं कि-दो विवादी (झगड़ा करनेवालोंमें) किसकी जीत है? तहां मुख्यका तौ पहला घर है ॥ ४६ ॥

सप्तमं च द्वितीयस्य राज्ञश्च दशमं स्मृतम् ॥ दशमप्रथमाभ्यां च योगे चेज्जायते शुभम् ॥४७॥ तदा मुख्यस्य विजयस्त्वन्यथा तु परस्य हि ॥ सप्तमाम्बरयोर्योगे ज्ञेयमेवं परस्य हि ॥ ४८ ॥

अर्थ—और दूसरेका सातवां घर है, राजाका दशवां घर कहलाता है, तहां दशवीं और प्रथम शकलकी एक शकल करनेसे शुभ शकल बने ॥ ४७ ॥ तो मुख्य-जनकी विजय होवे. इससे अन्यथा हो तो दूसरेकी जीत होवे, इसीतरह सातवीं और दशवीं शकलकी भी एक शकल करै जो शुभ हो तो दूसरेकी जीत कहै ॥ ४८ ॥

द्वयोः साम्ये द्वयोः सन्धिरथवा बलवज्जयः ॥ अथवा प्रथमे सौम्ये तदा मुख्यो जयी भवेत् ॥ ४९ ॥ सप्तमे च शुभे खण्डे प्रस्तारे त्वपरो जयी ॥ द्वयोः सौम्ये च सन्धिः स्याद्वयोः पापे पराजयः ॥ ५० ॥

अर्थ—और ये दोनों शकल समान हों तो मिलाप हो जावे अथवा जो बली शकल हो उसकी जीत होवे अथवा प्रस्तारके प्रथम घरमें शुभ शकल हो तो मुख्य जनकी जीत होवे ॥ ४९ ॥ जो सातवें घर शुभ हो तो दूसरा जीतै, जो इन दोनों घरोंमें शुभ शकल हो तो दोनोंकी जीत होवे, दोनों घरोंमें पाप (अशुभ) शकल होवे तो दोनोंकी हार होवे ॥ ५० ॥

यस्य धनगृहे खण्डं खारिजं च यदा भवेत्॥ तस्यैव धनहानिः स्याद्दाखिले लाभकृद्भवेत् ॥ ५१ ॥ सम्बन्धाद्यस्य खण्डस्य यस्य योगे शुभं भवेत् ॥ सहायात्तस्य च ज्ञेयं वादिनोर्जयनिश्चितम् ॥ ५२ ॥

अर्थ—जिसके धनघरमें खारिज शकल होवे उसकेही धनकी हानि हो जिसके धनघरमें दाखिल हो उसको लाभ हो ॥ ५१ ॥ और (प्रस्तारमें) जिस घरकी शकलके योगसे शुभ शकल बन जावे तिसहीकी सहायतासे वादी (झगड़ावालोंकी) जीत होगी ॥ ५२ ॥

मयाद्य भुक्तं नो चेद्वा किं भुक्तमिति पृच्छति ॥ दशमे पापखण्डे चेच्छत्रुगेहे भवेद्यदि ॥ ५३ ॥ तदा न भोजनं ज्ञेयं त्वन्यथा चेत्सुभोजनम् ॥ दशमे वह्निखण्डे चेद्वह्निगेहे पुनस्तथा॥५४॥

अर्थ—मैंने अभी भोजन किया है अथवा नहीं ? और क्या भोजन किया है ? ऐसे प्रश्नमें जो दशवें घर अथवा छठे घर अशुभ शकल होवे ॥ ५३ ॥ तो भोजन

नहीं किया है ऐसा जानना जो इससे अन्यथा हो तो अच्छे प्रकार भोजन कर लिया है. जो दशवें घर अग्नितत्वकी शकल फिर अग्निके घरमें पड़ी हो ॥ ५४ ॥

तदा तु केवलं भुक्तमैक्षवं शर्करादिकम् ॥ तदेव वायुगेहे च पुनरुक्तं यदा भवेत् ॥५५॥ मिष्टेन मिश्रितं गव्यं दधिदुग्धादि भोजनम् ॥ आप्ये फलादिकं चैव मिष्टान्नसहितं भुजि ॥५६॥

अर्थ—तो केवल ईखका पदार्थ गुड़ शकर, खांड़आदि भोजन किया है. जो वही शकल पुनरुक्त (दुबारा) वायुके घरमें पड़ी हो ॥ ५५ ॥ तो मीठासे मिला हुआ गौका दही दूध आदि भोजन किया है. जो यदि जलतत्वकी हो तो फल आदिका भोजन मिष्टान्नके संग किया है ॥ ५६ ॥

पार्थिवे रूक्षचूर्णं च मिष्टान्नेनैव मिश्रितम् ॥ अपूपं पिष्टमिश्रा वा भुक्ता स्यात्करपट्टिका ॥ ५७ ॥ एवं वाय्वादिशकले पुनर्वह्न्यादिके गृहे ॥ तेनैव मिश्रितं ज्ञेयं द्वित्र्यादौ तत्तथैव च ॥ ५८ ॥

अर्थ—पृथ्वीतत्वकी हो तो रूखा चूर्णआदि मीठेमें मिलाके खाया है, पूड़े अथवा मिष्टान्नयुक्त हुई रोटी खाई है ॥ ५७ ॥ ऐसे वायुआदिकी शकलोंका हाल है, जो यदि ये फिर अग्नि आदि तत्वके घरमें पड़ी हों तो तिससेही मिलेहुए फलको कहै, जो यदि दो तीन तत्वोंके घरमें गिर पड़ीं हो तो तैसेही उनके मेलका भोजन कहै ॥५८॥

न चेत्तत्पुनरुक्तं स्यात्तदा तस्मिंश्च बिन्दवः ॥ यस्य तत्त्वस्य तन्मिश्रं भोजनं च विनिर्दिशेत् ॥ ५९ ॥ यदि चेज्जतमा खस्था तदा सर्वं रसान्वितम् ॥ विचित्रं भोजनं चैव वक्तव्यं दैववेदिना ॥ ६० ॥

अर्थ—जो पुनरुक्त (फिर किसी घरमें नहीं पड़ी हो) तो उस शकलमें जिस तत्वकी बिंदु होवे उसकाही मेलका भोजन कहै ॥ ५९ ॥ जो यदि दशवें १० घर इज्जतमा शकल पड़ी हो तो दैवज्ञने संपूर्ण रसयुक्त भोजन तथा विचित्र भोजन बताना चाहिये ॥ ६० ॥

सूर्यस्य शकले खस्थे कटुकं तिलसंयुतम् ॥ व्यञ्जनं च भवेद्भोज्यं चन्द्रस्य लवणान्वितम् ॥६१॥ शाल्योदनं च भौमस्य तिक्तं चणकसंयुतम् ॥ बुधस्य मुद्गसहितं मिश्रितं मिश्रितै रसैः ॥६२॥

अर्थ—जो दशवें घर सूर्यकी शकल हो तो चर्चरा और तिलयुक्त भोजन किया है. चंद्रमाकी शकल हो तो नमकसहित शाक आदिका भोजन किया है ॥ ६१ ॥ जो यदि मंगलकी शकल हो तो चावल भात आदि और कड़वा, चनेका बेसन आदिका भोजन किया है, जो बुधकी शकल हो तो मूंगोंका मिला भोजन हुआ है, मिलेहुए रसोंका भोजन है ॥ ६२ ॥

गुरोर्गोधूमसहितं मधुरेण समन्वितम् ॥ भृगोर्यवादिसहितमम्ले-नापि समन्वितम् ॥६३॥ शनेर्माषादिकं चैव कषायरससंयुतम् ॥ राहुकेत्वोरपि तथा भोजनं कथयेद्बुधः ॥ ६४ ॥

अर्थ—बृहस्पतिकी हो तो गेहूंसे युक्त तथा मधुर रससहित भोजन कहै. शुक्रकी हो तो जव आदिका तथा खट्टे रससे युक्त हुआ भोजन कहै ॥ ६३ ॥ शनैश्वरकी हो तो उड़द आदिका भोजन तथा कसैला स्वादवाला भोजन कहै, राहु केतुकी हो तोभी ऐसाही भोजन पंडितजन कहै ॥ ६४ ॥

अथ लाभालाभप्रश्न ।

लाभालये विशेषं यत्कथ्यते तन्मयाऽधुना ॥ ममाशा पूर्णतां याति कस्माच्च तद्वदाशु मे ॥६५॥ आद्यालाभादेकखण्डं तथैव कुर्याच्छक्रादाद्यखण्डात्पुनश्च ॥ तत्खण्डाभ्यां साधयेदेकखण्डं प्रस्तारे चेत्पूर्णकामस्तदा स्यात् ॥ ६६ ॥

अर्थ—ग्यारहवें ११ घरमें जो विशेषता है सो अब कहते हैं कि, मेरी आशा किससे पूर्ण होगी यह मेरे आगे शीघ्रही कहो ? ॥ ६५ ॥ पहले और ग्यारहवें घरकी शकलसे एक खंड करै. फिर चौदहवीं और पहली शकलसे एक करै पीछे तिन दोनों शकलोंकी एक बना लेवे, जो यदि यह शकल प्रस्तारमें हो तो मनोरथ पूर्ण होवे ॥ ६६ ॥

नो चेदाशा पूर्णतां नैव याति तत्प्रस्तारे यत्र गेहे स्थितं चेत्॥ आशा ज्ञेया तस्य भावस्य नूनं सौम्या सौम्यैर्ज्ञायतां तत्तथैव॥६७॥

अर्थ—जो नहीं हो तो आशा (कामना) पूर्ण न हो और यह शकल प्रस्तारमें जिस घरमें हो उसही भावकी आशा निश्चय जाननी. शुभाशुभ विचारोंकरके वह प्रश्न (सिद्ध असिद्ध) विचारना चाहिये ॥ ६७ ॥

अथ बन्धमोक्षप्रश्न ।

द्वादशे बन्धमोक्षश्च विशेषं कथ्यतेऽधुना॥ खारिजे बन्धमुक्तिः स्याद्द्वादशे दाखिले न तु ॥ ६८ ॥

अर्थ—कैद आदिसे छूटनेका प्रश्न. अब बारहवें घरमें बंध मोक्ष अर्थात् बंधनमें पड़े हुएके छूटनेका विशेष प्रश्न कहते हैं;–जो यदि बारहवें घर खारिजशकल हो तो बंधनसे छूटना होवे और दाखिल हो तो नहीं होवे ॥ ६८ ॥

साबिते च चिरान्मुक्तिरत्यन्तभयसंयुतम् ॥ मोचनं मुन्कलीवे च पुनर्बन्धश्च सम्भवेत्॥ ६९ ॥ चतुर्थे व्यये खारिजं पञ्चचन्द्रे १५ भवेदुल्कला बन्धमुक्तिश्च न स्यात् ॥ स्थले न स्थितिः पूर्वके चान्यदेशे गमस्तस्य मृत्युर्भवेज्ज्ञेयमेवम् ॥ ७० ॥ एवं द्वादशभावेषु विशेषः कथितो मया ॥ अन्यान्यपि च सर्वाणि सामान्येनैव वर्त्मना ॥७१॥ इति श्रीसनाढ्यकुलावतंसपरमसुखोपाध्यायकृते रमलनवरत्ने प्रश्नकथनं नाम चतुर्थरत्नं समाप्तम्४

अर्थ—साबित हो तो अत्यंत भय होके बहुत दिनोंमें छूटै. मुन्कलीव हो तो छूटना होके फिर बंधन हो जावे ॥६९॥ जो यदि चौथे बारहवें घर खारिज हो और पंदरहवें घर उकला हो तो बंधनसे नहीं छूटै ॥ ७० ॥ इस प्रकारसे मैंने बारह भावोंका विशेषतापूर्वक सब हाल कहा और अन्यभी सब प्रश्नादिक साधारणतासे कहदिये हैं ॥७१॥

इति श्रीवेरीनिवासिगौडवंशोद्भवद्विजशालग्रामात्मजबुधवसतिरामविरचितरम्लनवरत्नचन्द्रिकानामभाषाटीकायांचतुर्थरत्नंसमाप्तम् ॥ ४ ॥

अथ पञ्चमं रत्नम् । तत्र प्रश्नावधेर्ज्ञानम् ।

प्रश्नगेहे च यत्खण्डं विद्दहे स्वगृहे भवेत्॥ तस्य तदा समे काले

कार्यसिद्धिर्भवेद्ध्रुवम् ॥ १ ॥ तेषामङ्कान्प्रवक्ष्यामि विज्दहस्यानुसारतः ॥ फरहाया एक १ संख्या लाह्यनस्य त्रयं ३ स्मृतम्॥२॥

अर्थ—अब पांचवें रत्नको कहते हैं. तहां प्रश्नकी अवधिका ज्ञान है, प्रश्नके घरमें जो शकल हो वह विज्दहपंक्तिमें अपने घरकी हो अर्थात् जिस प्रश्नघरमें हो उसही विज्दहके घरमें हो तो उस विज्दहपंक्तिके अंक समान समयमें कार्यकी अवधि निश्चय कहनी ॥ १ ॥ अब तिन घरोंके अंकोंको विज्दहपंक्तिके अनुसार कहते हैं-फरहा शकलकी एक संख्या है लह्यानकी तीन ३ संख्या है ॥ २ ॥

अतवेदाखिले षट्कं ६ बयाजे दश १० संख्यकम् ॥ तरिखायां पञ्चदशं १५ कब्जुलखारिजके ततः ॥ ३ ॥ एकविंशति २१ संख्या च हुम्रायां वसुनेत्रकम् ॥२८॥ रसत्रिंशक ३६ मङ्कीशे शराब्धि ४५ नुस्रुत्खारिजे ॥ ४ ॥

अर्थ--अतवेदाखिल शकलमें छह ६ अंक हैं, बयाजमें दश १० संख्या है, तरीखामें पंदरह अंक हैं. पीछे कब्जुल्खारिजमें ॥ ३ ॥ इक्कीस २१ संख्या है, हुमरामें अट्ठाईस २८ संख्या है. अंकीसमें छत्तीस संख्या, नुस्रुत्खारिजमें पैंतालीस संख्या है ॥ ४ ॥

पञ्चपञ्चाश ५५ दुल्कायामिज्जत्मा षष्टिषड् ६६ युता ॥
नुस्रुद्दाखिलकेऽष्टाद्रि ७८ चातवेखारिजे ततः ॥ ५ ॥
चन्द्रनन्द ९१ मितं नक्यां पञ्चोत्तरशतं १०५ तथा ॥
विंशोत्तरशतं १२० कब्जुद्दाखिले च जमातके ॥६॥

अर्थ—उकलामें पचपन ५५ संख्या है. इज्जतमाविषे छियासठ६६ है. नुस्रुदाखिलमें अठत्तर ७८ है. फिर अतवेखारिजमें ॥ ५ ॥ इकान्नवे ९१ है, नकीमें एकसौ पांच १०५ है. कब्जुदाखिलमें एकसौ बीस १२० है तथा जमातमें ॥ ६ ॥

षट्त्रीन्दु १३६ प्रमितां कार्यसिद्धौ संख्यां विनिर्दिशेत् ॥ तत्खण्डं पुनरुक्तं स्यात्प्रस्तारे यत्र कुत्रचित् ॥७॥ गते शोध्यं युतं गम्ये गृहाङ्कं चावधिं वदेत्॥ द्वित्र्यादिके गृहे चैव पुनरुक्तं यदा भवेत् ॥ ८ ॥

अर्थ—एकसौ छत्तीस १३६ अंककी संख्या है. ऐसे इस संख्याको कार्यकी सिद्धिके वास्ते कहै. जो यदि वही शकल प्रस्तारमें जहां कहीं पुनरुक्त अर्थात् दुवारा पड़ी हो तो ॥ ७ ॥ और गत अर्थात् प्रश्नघरसे पिछले घरमें हो तो उस घरके अंककी बाकी निकाल देवै और गम्य कहिये प्रश्नघरसे आगेके घरमें पुनरुक्त हुई हो तो तिस गृहांकको विज्दहक्रमसे लब्धांकमें युत [मिला देवै] जो यदि दो तीन घरोंमें पुनरुक्त हुई हो ॥ ८ ॥

तदा सर्वस्य गेहाङ्कं शोध्यं योज्यं च तत्स्फुटम् ॥ प्रश्नगेहस्य शकलं स्वगृहे नास्ति चेत्कथम् ॥ ९ ॥ कार्यावधेश्च विज्ञानं तदाऽन्यो विधिरुच्यते ॥ प्रश्नस्य शकलं चास्ति विज्दहे स्वगृहे यदा ॥ १० ॥

अर्थ—तो सब घरोंके अंकको [गतमें] बाकी निकाल देवै और [गम्य] हो तो मिला देवै तब ठीक अंक लब्ध होता है. जो यदि प्रश्नघरकी शकल (विज्दहमें) अपने घरमें नहीं हो तो कैसे ॥ ९ ॥ कार्यकी अवधिको जानै ? तहां अन्य विधि कहते हैं. जो यदि प्रश्नकी शकल विज्दहमें अपने घरमें नहीं होवे ॥ १० ॥

तदा चायुष्यके चक्रे पूर्वोक्ते प्रश्नखण्डकम् ॥ यत्र स्यात्तदधः प्रश्नतुल्यकोष्ठे निवेशितान् ॥ ११ ॥ अंकान् पश्येत्कार्यसिध्यवधेश्च प्रतिपादकान् ॥ तदङ्कस्यैव का संज्ञा विधिं तस्य वदाम्यहम् ॥ १२ ॥

अर्थ—तो पहले कहेहुए आयुचक्रमें जहां प्रश्नकी शकल होवे उसके नीचे प्रश्नकरके तुल्यकोष्ठमें स्थापित रक्खे हुए ॥११॥ कार्यकी अवधिको बतानेवाले अंकोंको देखै. फिर तिस लब्ध हुए अंककी क्या संज्ञा है? इसकी विधि कहते हैं ॥ १२ ॥

षोडशं शकलं पूर्वं चतुष्के चोन्महान्तके ॥ पुनरुक्तं भवेत्तच्च दिनसंख्यां वदेद्बुधः ॥ १३ ॥ पञ्चमादिचतुष्के च बनाताख्ये भवेद्यदि ॥ तदा तत्सप्तकं ज्ञेयं रमले प्रश्नकोविदैः ॥ १४ ॥

अर्थ—प्रस्तारकी सोलहवीं शकल, उन्महांतसंज्ञक पहले चार घरोंमें पुनरुक्त होके पड़ी हो तो उस लब्धांकको दिनोंकी संख्या जानै ॥ १३ ॥ जो पांचवें आदि चार

घरोंमें बनाताख्य संज्ञकोंमें पड़ी हो तो इसे (सात ७ दिन,) प्रमाणित अंकोंको जानै. यह प्रकार रमलशास्त्रमें प्रश्नवेत्ताओंने जानना ॥ १४ ॥

नवमादितृतीये च मुतवल्ले भवेत्किल ॥ तदा तत्तुल्यमासाश्च ज्ञेयाः कार्यस्य सिद्धये ॥ १५ ॥ विश्वादिकचतुष्के च जवादाताख्यसंज्ञके ॥ तदा वर्षं विजानीयादेवं ज्ञेयं विचक्षणैः ॥ १६ ॥

अर्थ—जो नवमें आदि चार मुतवल्लसंज्ञक घरोंमें हो तो तिन अंकोंके समान महीने, कार्यसिद्धिके वास्ते जानने ॥ १५ ॥ जो तेरहवें आदि चार जवादातसंज्ञक घरोंमें पड़ी हो तो वर्ष जानै. ऐसे पंडितजनोंने विचार करना ॥ १६ ॥

पुनरुक्तं च प्रस्तारे गृहे नैव प्रजायते ॥ तदा सम्भावितं वाच्यं स्वबुद्धेश्च बलादपि ॥ १७ ॥ दिनादीनां वा नियमं सर्वत्र न भवेद्ध्रुवम् ॥ पलादिकं च विज्ञेयं सम्भाव्यस्य बलादपि ॥ १८ ॥

अर्थ—जो यदि वह सोलहवीं शकल प्रस्तारके किसी घरमेंभी पुनरुक्त, अर्थात् दुबारा नहीं पड़ी हो तो अपनी बुद्धिके बलसे संभावित, जैसी भावना दीखती हो वही कहै कि ॥ १७ ॥ इन दिन आदिकोंका नियम सब जगह अचल [ध्रुव] नहीं है. किंतु संभावनाके बलसे यहां बलआदिकोंकाभी नियम जानना ॥ १८ ॥

आसन्नप्रसवादौ तु क्रमेण कथयेत्सुधीः ॥ विपलानि पलानि स्युर्घटिकाः प्रहरास्तथा ॥ १९ ॥ वदेद्बुद्ध्यनुसारेण यथासम्भावनादिकम् ॥ वृष्टिप्रश्ने तु वर्षायां क्रमोऽयं कथितो बुधैः ॥ २० ॥

अर्थ—बालक होनेका समय हो तहां तो इस क्रमकरके पंडितजन कहै कि, दिन, हसे, मास, वर्ष इनकी जगह यथाक्रमसे विपल, पल, घड़ी, प्रहर ये होते हैं ॥१९॥ इनमें संभावनाके अनुसार तथा अपनी बुद्धिके अनुसार कहै. और वर्षाऋतुमें मेघ वर्षनेके प्रश्नमें तो पंडितजनोंने यह क्रम कहा है कि-॥ २० ॥

घट्यो मुहूर्तकाश्चापि प्रहरा दिवसास्तथा ॥ वाच्याः सम्भावनां ज्ञात्वा स्वबुद्धेश्च विकल्पनात् ॥ २१ ॥ दिवसादिक्रमस्थाने विपलादि वदेद्बुधः ॥ एवं कालस्य विज्ञाने जाते तत्रापि चिन्तयेत् ॥ २२ ॥

अर्थ--घड़ी मुहूर्त अर्थात् दोघड़ीप्रमित, प्रहर, दिन, ये सब सम्भावना जानकें अपनी बुद्धिकी तर्कनासे कहने चाहिये ॥ २१ ॥ कहीं पंडितजन दिवसआदि क्रमके स्थानमें विपल आदिकोंको कहै. इस प्रकारसे समयका ज्ञान होजानेपर भी तहां चिंतवन करै कि ॥ २२ ॥

पूर्वभागे च मध्ये च त्वन्त्ये सिद्धिश्च जायते ॥ तदर्थमुन्महान्तस्य चाब्दहे वेदपङ्क्तिकम् ॥ २३ ॥ अग्निस्थाने शून्यरूपं च येषां खण्डानां तान्यब्दहस्य क्रमेण ॥ अष्टौ लेख्यं चापि वाय्वादिभागे तान्येवं वै संलिखेत्तत्क्रमेण ॥ २४ ॥

अर्थ—इस अवधिके, पूर्वभागमें अथवा मध्यमें अथवा अंतमें कार्यकी सिद्धिं होवेगी तिसके वास्ते उन्महान्त अर्थात् प्रथमघर आदि चार घरोंकी पंक्ति अब्दह (क्रमकी तरह) लिखै ॥ २३ ॥ जिन शकलोंके अग्निके स्थानमें शून्यका रूप है तिनको प्रथम पंक्तिमें अब्दहके क्रमकरके लिखै. फिर दूसरी पंक्तिमें, आठ शकलोंको वायु आदिके भागमें क्रमसे लिखै ॥ २४ ॥

एवमष्टाष्टखण्डस्य पङ्क्त्यो वेदसंख्यकाः ॥ लह्याना हुमराख्या च बयाजाऽङ्कीशकौ तथा ॥ उन्महान्ताश्च शुद्धा वै क्रमादाद्ये भवन्ति हि ॥ २५ ॥ प्रस्तारे प्रथमे गेहे जमातं च भवेद्यदि ॥ रुद्धः प्रस्तारको ज्ञेयस्तस्मात्प्रश्नं न कारयेत् ॥ २६ ॥

१	२	३	४	५	६	७	८	शकलोंके अंक.
· – – –	· · – –	· – · –	· · · –	· – – ·	· · – ·	· – · ·	· · · ·	अग्निः
– · – –	· · – –	– · · –	· · · –	– · – ·	· · – ·	– · · ·	· · · ·	वायुः
– – · –	· – · –	– · · –	· · · –	– – · ·	· – · ·	– · · ·	· · · ·	जलम्
– – – ·	· – – ·	– · – ·	· · – ·	– – · ·	· – · ·	– · · ·	· · · ·	पृथिवी

इसप्रकारसे आठ २ शकलोंकी चार पंक्तियां लिखै; तिनमें क्रमकरके पहली पंक्तियोंमें लह्यान, हुमरा, बयाज, और अंकीश, ये शुद्ध उन्महांत हैं ॥ २५ ॥ सो यह सब प्रकार इस चक्रमें समझो. जो यदि प्रस्तारमें पहले

घर जमात शकल आजावे तो रुद्ध (रुकाहुआ) प्रस्तार जानना; तिसके प्रश्न नहीं करना चाहिये ॥ २६ ॥

पुनः प्रस्तारकं कार्यं प्रश्नार्थं च विचक्षणैः ॥ तच्चेच्च तिथिगेहे १५ स्याद्रुद्धः प्रस्तारकस्तदा ॥ २७ ॥ तस्य चोद्घाटनं वक्ष्ये शून्यार्थं प्रश्नसिद्धये ॥ विना शून्यं न सिद्धिः स्यान्मूके प्रश्नस्य तद्विदाम् ॥ २८ ॥

अर्थ--तहां पंडितजनोंनें प्रश्नके वास्ते फिर प्रस्तार बनाना चाहिये और वही ☰ शकल जो पंदरहवें १५ घरमें होवे तोभी बद्ध प्रस्तार जानना चाहिये ॥ २७ ॥ अब शून्यके वास्ते तथा प्रश्नकी सिद्धिके अर्थ तिसका उद्घाटन (शून्य निकालनेका उदाहरण) कहते हैं-पंडितजनोंके शून्यविना मूकप्रश्नकी सिद्धि नहीं है ॥ २८ ॥

तत उद्घाटनं वक्ष्ये भूतादिज्ञानसिद्धये ॥ आद्यत्रयोदशाभ्यां च तुर्यशक्रोद्भवं तथा ॥ २९ ॥ सप्तमार्धदशम्यां च दशमात्षोडशात्तथा ॥ तदुद्भवानि चत्वारि तेभ्यः प्रस्तारकं कुरु ॥ ३० ॥

अर्थ—इसलिये तत्वोंके ज्ञानकी सिद्धिके वास्ते तिसका उद्घाटन (उदाहरण) कहते हैं-पहली और तेरहवींकी, चौथी और चौदहवींकी ॥ २९ ॥ सातवीं और दशवींकी, दशमी और सोलहवींकी एक २ बनाके तिनसे चार शकल बनावे. फिर तिन चारोंसे प्रस्तार बनावे ॥ ३० ॥

शून्यलाभो भवेत्तत्र तस्माच्छून्ये विचारयेत् ॥ पुनस्तत्र जमातं चेत्तदान्यो विधिरुच्यते ॥ ३१ ॥ लह्याहुम्राबयाजाख्याङ्कीशानां च चतुष्टयम् ॥ क्रमेणोद्घाटितस्याद्यैः खण्डकैर्योजयेत्सुधीः ॥ ३२ ॥

अर्थ--तहां शून्योंका लाभ होता है इसलिये वहां १५ घर दो शून्योंको विचारै. जो यदि फिरभी तहां जमात आजावे तो तिसकी अन्य विधि कहते हैं ॥ ३१ ॥ लह्यान, हुमरा, बयाज, और अंकीश, ये चार शकल क्रमसे उद्घाटित किहेहुए तिन चार खंडोंमें मिला देवै ॥ ३२ ॥

चत्वार्युत्पाद्य खण्डानि तेभ्यः प्रस्तारकं लिखेत् ॥ शून्यलाभो भवत्येव तस्माच्छून्ये विचारयेत् ॥ ३३ ॥ प्रस्तारे तिथि-

१५ खण्डे द्वितयं शून्यं लभेत यश्चापि ॥ तच्छून्यं तिथि
१५ गेहात् क्रमशश्चोत्पत्तिमार्गेण ॥ ३४ ॥

अर्थ—फिर चार शकल उत्पन्न कर तिनसे प्रस्तार बनाके लिखै. तहां शून्यका लाभ होता है इसलिये तहां दो शून्योंको विचारै ॥ ३३ ॥ प्रस्तारमें पंदरहवें घर जो दो शून्य प्राप्त हो जावें तिन शून्योंको क्रमकरके पंदरहवें घरसे उत्पत्तिमार्गकरके ऊपरको चढ़ावे ॥ ३४ ॥

चाल्यं क्रममभिधास्येन येन ज्ञानं झटिति सम्भवति ॥
तिथिगेहे यत्र शून्यं वाय्वादिके स्यात्तु तत्रैव ॥ ३५ ॥
विश्वचतुर्दशखण्डे शून्यं चेद्याति तत्स्थमेवैतत् ॥ विश्वे १३
चेद्यदि नन्दे ९ दशमे १० तत्रैव शून्यके यातः ॥ ३६ ॥

अर्थ—तहां शून्य चलानेके क्रमको कहते हैं. जिससे शीघ्रही ज्ञान होता है, पंदरहवें घर वायुआदि तत्वकी जगह जहां शून्य होवे उसी जगह ॥ ३५ ॥ तेरहवें चौदहवें कोईसे घरमें जहां शून्य चलीजावे वह वहांही स्थित जाननी; जो यदि तेरहवें घर जावेगी तो नववें अथवा दशवें घरमें तिसी तत्वकी जगह शून्य जावेगी, तिससेभी आगे चले तो प्रथम आदि चार घरोंमें जाके स्थित हो जायगी. क्योंकि वे घर इन ८–१० घरोंके उत्पादक हैं ॥ ३६ ॥

शक्रगेहे यदा याति लाभे ११ वै द्वादशेऽ १२ पि वा ॥ तत्रैव
यदि शून्यं चेत्तदा तत्रैव गच्छति ॥ ३७ ॥ लाभे ११ चेत्पञ्चमे
५ षष्ठे ६ तत्र शून्यं भवेद्यदि ॥ तत्रैव याति तच्छून्यं गृहे
वै द्वादशे यदि ॥ ३८ ॥

अर्थ—जो चौदहवें घरमें जावें तो ग्यारहवें घरमें उसही तत्वकी जगह शून्य चली जावेगी ॥ ३७ ॥ जो यदि ग्यारहवें घरमें स्थित होवे तो पांचवें तथा छठे घरमें शून्य जावेगी वहां जिस घरमें इस शून्यकी जगह शून्य होवे उसी जगह स्थित जाननी. जो यदि वह शून्य बारहवें घरमें जावें ॥ ३८ ॥

तदा च सप्तमे मृत्यौ ८ तत्रैव यदि खं लभेत् ॥ तत्रैव याति तच्छू-
न्यमेतच्छून्यस्य चालनम् ॥ ३९ ॥ एवं तिथिगृहाच्छून्यं
द्वितीयं चालयेद्बुधः ॥ प्रथमाष्टमयोर्मध्ये तच्च यत्र स्थिरं भवेत् ॥ ४० ॥

अर्थ—तो सातवें तथा आठवें घरमें उसी तत्वकी जगह जो शून्य आ जावे वह शून्य उसी जगह स्थित जाननी. इसप्रकार यह शून्य चलानेका क्रम कहा है ॥ ३९ ॥ इसी प्रकार दूसरी शून्यकोभी पंदरहवें घरसे चलावे. वह शकल पहली तथा आठवी शकलके मध्यमें किसी घरमें ठहरजावे ॥ ४० ॥

प्रश्नेष्वेतद्धि साक्ष्यस्माज्ज्ञेयं कालचतुष्टयम् ॥ भूतं भविष्यं वर्तमानमाकस्मिकचतुष्टयम् ॥ ४१ ॥ प्रश्नाङ्कस्यैव सिद्धस्य कुर्याद्भागत्रयं बुधः ॥ प्रथमं वर्तमानं च भविष्यं च द्वितीयकम् ॥४२॥

अर्थ—वही घर प्रश्नोंमें साक्षी जानना. उसी घरसे चारों काल पहिचानें भूत १, भविष्यत् २, वर्त्तमान ३, चौथा ४ आकस्मिक कहाता है. आकस्मिक कछुक स्वतः सिद्ध अचानकसे ऐसे मिलेहुएका नाम है ॥ ४१ ॥ लब्ध हुए प्रश्नांक, कार्यसिद्धिके अंकके तीन भाग बनावे; प्रथम वर्तमान, दूजा भविष्य, ॥ ४२ ॥

आकस्मिकं तृतीयं च ह्येवं ज्ञेयं विचक्षणैः ॥ एवं भागत्रयाणां च संज्ञा प्रोक्ता पुरातनैः ॥ ४३ ॥ उन्महान्ताख्यपङ्क्यां च यत्र पङ्क्यां च यद्गृहे ॥ शकलं साक्षिसंज्ञं स्यात्तद्गृहे पूर्वपङ्क्तिके ॥४४॥

अर्थ—तीसरा आकस्मिक, ऐसे पंडितजनोंने जानना. पुरातन विद्वानोंने ऐसे उन तीन भागोंकी संज्ञा कही है ॥ ४३ ॥ सो वह साक्षी शकल उन्महांत नामक पंक्तिमें जौनसी पंक्तिमें जिस घरमें होवे उसही घरमें पूर्वकी पंक्तिविषे ॥ ४४ ॥

आकस्मिकं फलं ज्ञेयं स्वपङ्क्यां पृष्ठके गृहे ॥ भूतकालस्य विज्ञानं स्वाग्रे च वर्तमानकम् ॥ ४५ ॥ स्वाधःपंक्त्यां स्वगेहे च भविष्यस्य फलं वदेत् ॥ शुभं यत्र गतं खण्डं तत्र सिद्धिर्भवेद्ध्रुवम् ॥ ४६ ॥

अर्थ—होवे तो, आकस्मिकसंज्ञक फल जानना. जो यदि अपनी पंक्तिमें पिछले घरमें होवें तो भूतकालका विचार करना; जो अपने आगे होवे तो वर्तमान काल जानना ॥ ४५ ॥ जो अपनी पंक्तिके नीचे अपनेही घरमें होवे तो भविष्यकालका फल कहै. जहां शुभ शकल होवे वह निश्चय सिद्धि होवे ॥ ४६ ॥

आद्यस्याकस्मिकं तुर्यपङ्क्तौ ज्ञेयं मनीषिभिः ॥ तुर्यपङ्क्तेर्भविष्यं यत्पङ्क्तेर्वै प्रथमाद्वदेत् ॥ ४७ ॥ पङ्क्त्यादेर्भूतकालं च शकलाद्दष्टमाद्वदेत् ॥ वर्त्तमानं त्वष्टमस्य प्रथमाच्छकलाद्वदेत्॥ ४८ ॥

अर्थ—पंडित जनोंमें पहली पंक्तिका आकस्मिक काल बतानेवाली शकल, चौथी पंक्तिविषे जाननी अर्थात् इसके पूर्वभागमें नीचेकी पंक्तिको समझे और चौथी पंक्तिका भविष्यकाल पहली पंक्तिसे कहै ॥ ४७ ॥ पंक्तिकी आदिमें भूतकाल आठवीं शकलसे कहै. आठवीं शकलका वर्तमानकाल पहली शकलसे कहै, अर्थात् इनके जिस भागमें आगे कोई शकल न हो वहां सन्मुख भागकी अंतिम पंक्तिकोही आगे समझना यह विचार करो. यह सब हाल पीछे लिखेहुए चक्रमें समझो ॥ ४८ ॥

एवं ज्ञाते कार्यसिद्धिः कस्मिन्वारे भविष्यति ॥ मिजाजे स्वगृहे चैव प्रस्तारे शकलं भवेत् ॥ ४९ ॥ तस्यैव वासरे सिद्धिर्बलाद्द्वित्र्यादिके सति ॥ नोचेत्प्रश्नगृहस्यैव शकलाद्वारनिर्णयः ॥ ५० ॥ इति श्रीसनाठयकुलावतंसपरमसुखोपाध्ययकृते रम्लनवरत्ने प्रश्नावधिकथनं नाम पञ्चमं रत्नम् ॥ ५ ॥

अर्थ—ऐसे कार्यसिद्धिका ज्ञान होनेपर किस वारमें होगी ? तहां यह कहते हैं कि-जो यदि वह प्रस्तारके घरकी शकल मिजाज पंक्तिमें अपने घरमें पड़ी हो तो उसकेही वारमें कार्यकी सिद्धि होवे. जो दो तीन घरोंमें होय तो बलवान् शकलसे फल कहै. यदि अपने घरकी होके मिजाज पंक्तिमें न पड़ी हो तो प्रश्नशकलसेही बारका निश्चय करै ॥४९॥५०॥ इति श्रीबरीग्रामनिवासिगौडवंशोद्भवद्विजशालग्रामात्मजबुधवसतिरामशास्त्रीविरचितरम्लनवरत्नचंद्रिकानामभाषाटीकायां पंचमं रत्नम् ॥ ५ ॥

अथ षष्ठरत्ने मुष्टिगुप्तवस्तुकथनम् ।

पूर्वं तु निश्चयं कृत्वा मुष्ट्यां वस्त्वस्ति नास्ति वा ॥ प्रकारं तस्य वक्ष्यामि येन ज्ञानं भवेत् किल ॥१॥ हुम्रा नकी च प्रस्तारे यदि स्यातां तदा ध्रुवम् ॥ मुष्ट्यां वस्त्वस्ति तन्मध्यादेकं चेदपि वर्त्तते ॥२॥

अर्थ—अब छठे रत्नमें मुष्टिकी गुप्तवस्तुका कथन करते हैं. मुष्टिमें वस्तु है कि नहीं पहले यह निश्चय करके फिर तिसके प्रकारको कहेंगे तिससे निश्चय ज्ञान होगा ॥ १ ॥ यदि हुमरा वा नकी शकल प्रस्तारमें होय अथवा इन दोनोंमें जो एकभी शकल हो तो निश्चय मुष्टिमें वस्तु है ॥ २ ॥

द्वयं नास्तीति प्रस्तारे शून्यं मुष्टिं वदेत्ततः ॥ अथवा ते बहुस्थाने मुष्ट्यां वस्तुकदम्बकम् ॥ ३ ॥ चतुर्थे रिपुगेहे च दाखिलं साबितं यदि ॥ तथापि मुष्ट्यां वक्तव्यं वस्त्वास्ति च मतान्तरे ॥ ४ ॥

अर्थ—जो यदि ये दोनों नहीं हों तो खाली मुष्टि कहना. जो यदि ये दोनों शकल बहुत (कई) घरोंमें पड़ी हों तो मुष्टिमें अनेक वस्तु कहना ॥ ३ ॥ जो यदि चौथे वा छठे घर दाखिल तथा साबित शकल हो तोभी मुष्टिमें वस्तु है. यह दूसरा मत है॥४॥

मनुष्याणां बहूनां च कस्य मुष्ट्यां हि वर्तते ॥ तदर्थं च मनुष्याणां स्वाग्रे पंक्तिं निवेशयेत् ॥ ५ ॥ परंतु दशसंख्यैव दशाधिक्यं भवेद्यदि ॥ दशाधिकमनुष्याणामन्यां पङ्क्तिं च कारयेत् ॥ ६ ॥

अर्थ—बहुतसे मनुष्य हैं इनमें किसकी मुष्टिमें वस्तु है ? ऐसे प्रश्न होनेपर उन मनुष्योंकी पंक्ति अपने आगे (बैठावे)॥५॥ (परंतु तहां दश १० संख्याही होती है) जो यदि दशसे अधिक होवे तो उन मनुष्योंकी दुसरी पंक्ति बना लेवे ॥ ६ ॥

तदर्थं पाशकं क्षिप्त्वा पुनः प्रस्तारमाचरेत् ॥ सप्तमे शकलं यत्स्यात्संख्यां तस्य च कारयेत् ॥७॥ अब्जदस्य मतेनैव शून्यानां च तदा बुधैः ॥ नवमे दाखिलं खण्डं साबितं वा भवेद्यदि ॥ ८ ॥

अर्थ—तिस पंक्तिके वास्ते पाशे डालके फिर प्रस्तार बनावे. फिर सातवें घर जो शकल होवे तिसकी संख्या करै ॥ ७ ॥ अब्जद पंक्तिके मतकरके पंडितजनोंने शून्योंकीही संख्या करनी चाहिये, जो यदि नवमें घर दाखिल शकल होवे अथवा साबित हो तो ॥ ८ ॥

तदा तदङ्कसंख्यां च स्वीयदक्षकराद्वदेत् ॥ यस्योपरि समाप्तिः स्यान्मुष्टिमान्स पुमान्भवेत् ॥ ९ ॥ नवमे खारिजं खण्डं मुन्कलीवं भवेद्यदि ॥तदा वामकराद्देयं तदङ्कं प्रश्नकोविदैः॥१०॥

अर्थ—तिस अंककी संख्याको अपने दहिने हाथसे गिनैं. फिर तिस क्रमसें जिस मनुष्यके ऊपर अंककी समाप्ति हो उसही पुरुषकी मुष्टिमें वस्तु है ॥ ९ ॥ जो नववें घर खारिज शकल हो अथवा मुन्कलीव हो तो तिस अंककी संख्या अपने बाँयें हाथसे गिननी ॥ १० ॥

कस्यां मुष्ट्यां धृतं वस्तु प्रश्न एवं कृते सति ॥ दाखिलं साबितं षष्ठे नवमे पञ्चमे दले ॥११॥ तदा तु दक्षिणे हस्ते वदेन्मुष्टिगतं वस्तु ॥ खारिजे मुन्कलीवे च वाममुष्ट्यां च निश्चितम् ॥ १२॥

अर्थ—कौनसी मुष्टिमें वस्तु धारण की है ? ऐसे प्रश्न करनेमें जो छठे, पांचवें नववें, घर दाखिल अथवा साबित शकल हो तो ॥ ११ ॥ दहिने हाथकी मूठीमें द्रव्य कहनी. जो खारिज अथवा मुन्कलीव हो तो बाँयें हाथकी मुष्टिमें निश्चय द्रव्य कहनी ॥ १२ ॥

विरोधे तत्र चान्योन्यं बलयुक्ताद्वदेत्तदा ॥ अथवा पञ्चषष्ठाभ्यां खण्डाभ्यां शकलं कुरु ॥ १३ ॥ तद्वशेन वदेन्मुष्टिं वामां दक्षां यथाक्रमम् ॥पुनश्च वस्तुकथने प्रकारं च ब्रवीम्यहम् ॥ १४॥

अर्थ—जो अन्योन्य विरोधी शकल हों तो बलवाली शकलसे फल कहै. अथवा पांचवीं और छठी शकलकी एक शकल कहै ॥ १३ ॥ फिर तिस शकलसे क्रमकरके बायीं अथवा दहिनी मुष्टिको कहै. फिर भी वस्तुकथनमें एक प्रकार कहते हैं कि— ॥ १४ ॥

कठिनत्वं मृदुत्वं च प्रथमाच्छकलाद्वदेत् ॥ द्वितीयशकलाद्वर्णं स्वरूपं ॥ तृतीयतः ॥ १५ ॥ दीर्घवृत्तादिकं स्थानं चतुर्थशकलाद्वदेत् ॥ मौल्यं च पञ्चमात् षष्ठाद्गुरुत्वादींश्च चिन्तयेत् ॥ १६ ॥

अर्थ—पहली शकलसे करड़ापन और कोमलपना कहै; दूसरी शकलसे

वर्ण कहै और तीसरी शकलसे स्वरूप कहै ॥ १५ ॥ दीर्घपना, गुलाई, व स्थान, ये चौथी शकलसे कहै ॥ पांचवींसे मोल, छठीसे तोल, भारीपन आदि कहै ॥ १६ ॥

पोषणस्य निमित्तं च योगायोगं च सप्तमे ॥ सङ्ख्यां च सप्तमस्यैव पुनरुक्तिवशाद्वदेत् ॥ १७ ॥ अष्टमात्तस्य द्रव्यस्य शत्रुत्वं च वदेत्सुधीः ॥ नंदात्पूर्णं खण्डितं च दशमात्स्वादु एव च ॥ १८ ॥

अर्थ—पोषणका निमित्त तथा योगायोग मिली हुई है या विना मिलि है? यह सब सातवीं शकलसे कहै. और जहां सातवीं शकल पुनरुक्त हुई हो उसके बलसे संख्या कहै ॥ १७ ॥ आठवीं शकलसे पंडितजन तिस द्रव्यके शत्रुपनाको विचारै. नवमी शकलसे पूर्ण है अथवा खंडित है यह कहै. दशमी शकलसे स्वाद विचारै ॥ १८ ॥

निर्माणादींश्च लाभाच्च धातुमूलादिकं व्ययात् ॥ अष्टमादपि विज्ञेयं धातुमूलादिकं तथा ॥ १९ ॥ यद्वदेद्येन खण्डेन तस्मात्खण्डाच्च सप्तमम् ॥ निरीक्ष्य तत्पदार्थं वा वदेत्सम्भावनाबलात् ॥ २० ॥

अर्थ—ग्यारहवीं शकलसे निर्माण (रचना) आदिक बात विचारै. बारहवें घरसे धातुमूल आदिक विचारै ॥ १९ ॥ और जिस शकलसे जो वृत्तांत कहै तिस शकलसे सातवीं शकलको देखके उसके प्रभावसे संभावना (बुद्धि) के बलसे उस पदार्थको कहै ॥ २० ॥

द्वयोश्चैव पदार्थस्य विरुद्धत्वे त्वसम्भवे ॥ खण्डाभ्यां तद्वयाभ्यां च कुर्यात्तस्य फलं वदेत् ॥ २१ ॥ विशेषं खण्डयोगेन कथ्यते पूर्वसम्मतम् ॥ वह्निखण्डं द्वितीये स्याद्वर्णं कांतियुतं वदेत् ॥ २२ ॥

अर्थ—जो यदि उन दोनों शकलोंकरके पदार्थका विरोधभाव होनेमें असंभव कुच्छे निश्चय नहीं होवे तो उन दोनों शकलोंकी एक शकल करै और तिस शकलका फल कहै ॥ २१ ॥ अब शकलके योगसे कच्छु विशेष हाल पूर्व आचार्योंका (संमत माना हुआ) कहते हैं. जो यदि दूसरे घर अग्निकी शकल आवे तो कांतिसंयुक्त वर्ण (रूप) बताना ॥ २२ ॥

प्रथमे जलखण्डं स्यात्तूलभृत्कन्दुकादिकम् ॥ मुष्ट्यां वदेद्वायवं च सदृशं दृढसूत्रवत् ॥ २३ ॥ बयाजं च तृतीयं स्यादन्तः शून्यं तदा वदेत् ॥ सरन्ध्रं वस्तु वक्तव्यं तरीखं त्रि ३ नवे ९ स्थितम् २४

अर्थ--जो प्रथम घर जलतत्व हो तो रुईका भराहुआ गेंदआदि है. जो यदि वायुतत्व हो तो मुष्टिमें सदृश (शकलके रूपसमान) दृढ सूत बताना ॥ २३ ॥ तीसरे घर बयाज शकल हो तो वस्तुके मध्यमें शून्य है और तीसरे तथा नवमें घर तरीखा शकल हो तो छिद्रवाली वस्तु कहनी ॥ २४ ॥

अथवोत्कीर्णचित्राढ्यं सूक्ष्मचिह्नमथापि वा ॥ फरहा नकी च तत्रस्थे त्रिकोणं छिद्रसंयुतम् ॥ २५ ॥ तृतीये प्रथमे चोक्ला वस्त्रवल्कलवेष्टितम् ॥ २६ ॥

अर्थ-अथवा अनेक प्रकारके चित्रोंसे युक्त वा सूक्ष्म चिन्होंसे युक्त कहना. जो यदि तहां फरहा वा नकी स्थित हो तो त्रिकोण (तिकूंटी) छिद्रवाली वस्तु कहनी ॥२५॥ तीसरे और पांचवें घर उकला शकल हो तो वस्त्र वा वक्कल आदिसे लपेटी हुई वस्तु है ॥ २६ ॥

नवमे वायुखण्डं च वस्तु लोमान्वितं वदेत् ॥ इन्द्र १४ खण्डे यदोक्ला चेदग्निदग्धं वहेत्तदा ॥२७॥ एवं मुष्ट्यां हि वस्तूनां प्रकारः कथितो मया ॥ कथयामि च तस्यार्थे खण्डानां लक्षणानि च ॥ २८ ॥

अर्थ--नवमें घर वायुकी शकल हो तो वह वस्तु रोम (बाल) आदिकोंसे युक्त है. जो यदि चौदहवें घर उकला हो तो अग्निसे जलीहुई वस्तु कहे ॥ २७ ॥ ऐसे मुष्टिविषे वस्तुओंका प्रकार मैंने कहदिया. अब तिस मुष्टिकी वस्तुके वास्ते शकलोंके लक्षण कहते हैं ॥ २८ ॥

लह्यानुस्नुदाखिलं चातवेदाखिलं तथा ॥ बयाजेज्जतमा फर्हा मृदुखण्डानि सन्ति हि ॥ २९ ॥ नकी चातवखारीजं जमातं हुमराभिधम् ॥ नुस्रुतुल्खारिजं कब्जुदाखिलं च कठोरकम् ॥ ३० ॥

अर्थ—लह्यान, नुस्रुदाखिल, अथवा अतवेदाखिल, बयाज, इज्जतमा, फरहा ये मृदुखंड अर्थात् कोमल शकल हैं ॥ २९ ॥ नकी, अतवेखारिज, जमात, हुमरा नुस्रुतखारिज, कब्जुदाखिल, ये कठोर शकल है, अर्थात् ये शकल हो तो मुष्टिमें करडी वस्तु कहनी ॥ ३० ॥

अङ्कीशं चोकला कब्जुल्खारिजं च तरीखकम् ॥ मिश्रितं शकलं ज्ञेयं कोमलं च कठोरकम् ॥ ३१ ॥ पीतं रक्तं स्यात्तु लह्यानखण्डं पीतश्यामं चातवेखारिजं स्यात् ॥ श्वेतश्यामं कब्जुलेदाखिलं च श्वेतं कृष्णं कब्जुलेखारिजं स्यात् ॥ ३२ ॥

अर्थ—अंकीश, उकला, कब्जुलखारिज, तरीख, ये मिश्रित शकल हैं. कोमल और कठोरभी हैं ॥ ३१ ॥ लह्यान शकल पीला तथा लाल है; अतवेखारिज पीत और श्याम है; कब्जुलदाखिल श्वेत श्याम है; कब्जुलखारिज श्वेत कृष्ण है ॥ ३२ ॥

अङ्कीशं कृष्णवर्णं स्यादुकला श्यामवर्णिका ॥ बयाजं श्वेतवर्णं स्याद्गोधूमाभं जमातकम् ॥ ३३ ॥ हुमरा रक्तवर्णं च पीतं नुस्रुत्खारिजम् ॥ इज्जतमा हरितं प्रोक्तं श्यामं नुस्रुद्दाखिलम् ॥३४॥

अर्थ—अंकीश शकलका काला वर्ण है. उकला श्यामवर्ण है; बयाज श्वेतवर्ण है; जमात गहूंसरीखे वर्णवाला है ॥ ३३ ॥ हुमराका लाल वर्ण है; नुस्रुत्खारिज पीला है; इज्जतमा हरा है; नुस्रुदाखिल श्याम है ॥ ३४ ॥

पीतश्वेतं श्यामयुतं फरहाख्यं दलं भवेत् ॥ श्वेतं च हरितश्यामं चातब्दाखिलसंज्ञकम् ॥ ३५ ॥ पीतं च हरितश्यामं नकीखण्डं प्रकीर्तितम् ॥ हरितं च तथा श्वेतं श्यामं च तरिखाभिधम् ॥३६॥

अर्थ--फरहा शकल पीला, श्वेत श्याम इन वर्णोंसे युक्त है. अतवेदाखिल शकल श्वेत, हरा, श्याम इन वर्णोवाला है ॥ ३५ ॥ नकी शकल पीला, हरा अरु श्याम है. तरीख शकल हरा, श्वेत श्याम, है ॥ ३६ ॥

दीर्घं च १ वर्तुलं २ दीर्घं ३ चतुरस्रं सदीर्घकम् ४ ॥ वर्तुलं ५ वर्तुलं ६ व्यस्रं ७ वर्तुलं ८ दीर्घविस्तरम् ॥ ३७ ॥ दीर्घं १० विस्तीर्णदीर्घं ११ च दीर्घं १२ विस्तीर्णदीर्घकम् १३ ॥ वर्तुलं १४ वर्तुलं १५ दीर्घविस्तीर्णे १६ लह्यमादितः ॥ ३८ ॥

अर्थ--दिर्घ अर्थात् लंबा १, वर्तुल अर्थात् गोल २, दीर्घ ३, चतुरस्र अर्थात् चौकुंठा दीर्घ (लंबाई सहित) ४, वर्तुल (गोल) ५, वर्तुल ६, व्यस्र अर्थात् कोनरहित ७, वर्तुल ८, दीर्घविस्तर ९, ॥ ३७ ॥ दीर्घ १०, विस्तीर्ण दीर्घ ११,

दीर्घ १२, विस्तीर्ण दीर्घ १३, वर्तुल १४, वर्तुल १५, और दीर्घ विस्तीर्ण १६ ऐसे इस क्रमसे लह्यान आदि सोलह शकल जाननी ॥ ३८ ॥

लह्यानुस्नुत्खारिजं च तथा चातवखारिजम् ॥ नगरारण्ययोर्वासं तरिखा कृषिवर्त्मनि ॥३९॥ स्वर्णरौप्यापणस्थं च कब्जुद्दाखिल् जमातकम् ॥ अंकीशं चित्रहट्टायामिज्जतमा च स्मृता बुधैः ॥४०॥

अर्थ—लह्यान, नुस्नुत्खारिज, अतवेखारिज, ये शकल हों तो नगर तथा वनमें रहनेवाली वस्तु कहै; तरीखा शकल हो तो खेतमें वा मार्गमें होनेवाली कहै ॥ ३९ ॥ कब्जुदाखिल और जमात तथा अंकीश हो तो सोना चांदीकी दुकान (सराफाकी) दुकानमें रहनेवाली कहै और विचित्र दुकानोंमें रहनेवाली इज्जतमा शकल पंडितजनोंनें कही है ॥ ४० ॥

वनग्रामे नकी चातवदाखिलं वनवृक्षके ॥ आरामे पाठशालायां नुस्नुदाखिलसंज्ञकम् ॥ ४१ ॥ क्षेत्रारामप्रवाहेषु बयाजं वनपर्वते॥ कब्जुल्खारिजकं नृत्यारामे च फरहा स्मृता ॥ ४२ ॥

अर्थ—नकी शकल वनग्राम (बाहरगाम) में रहती है और अतवेदाखिल वनके वृक्षमें जाननी. नुस्नुदाखिल शकल बगीचामें व पाठशालामें रहती है ॥ ४१ ॥ बयाज शकल खेत आराम अर्थात् बगीचा, नदीका वेग इन स्थानोंमें जाननी. कब्जुलखारिज शकल वनमें वा पर्वतमें जाननी. फरहा शकल नृत्यस्थान और बागबगीचेमें जाननी॥४२॥

अन्धकारान्वितं स्थानमुकलायाः प्रकीर्तितम् ॥ हिंसागारं शस्त्रवैद्यस्थानं च हुमरहयके ॥ ४३ ॥ लह्यानुस्नत्खारिजं च नुस्नुदाखिलकं तथा ॥अतिमौल्ययुतं ज्ञेयं मध्यमौल्यं बयाजकम् ॥४४॥

अर्थ—उकला शकलका स्थान अंधकारसे युक्त जानना, हुमरा शकल शस्त्रस्थान वा वैद्यस्थानमें जाननी ॥ ४३ ॥ लह्यान, नुस्नत्खारिज नुस्नुदाखिल ये शकल अत्यंत मौल्यकी वस्तु हैं. बयाज शकल मध्यम मोलकी है ॥ ४४ ॥

उकला तरिखा कब्जुद्दाखिलं च समौल्यकम् ॥ नकी चातवखारीजं कब्जुल्खारिज्जमातके ॥ ४५ ॥ अङ्कीशं मौल्यहीनं

च फरहा हुमरा तथा ॥ इज्जत्मातवदाखीले स्वल्पमौल्ये प्रकीर्तिते ॥ ४६ ॥

अर्थ—उकला, तरिखा, कब्जुद्दाखिल, ये शकलें मौल्यसहित हैं. नकी, अतवेखारिज, कब्जुलखारिज, जमात, ॥ ४५ ॥ और अंकीश ये शकलैं मौल्यहीन हैं. फरहा, हुमरा, इज्जतमा, व अतवेदाखिल ये स्वल्प मौल्यवाली शकलें हैं ॥ ४६ ॥

अग्निवाय्वोश्च खण्डानि स्वल्पभारयुतानि च ॥ जलभूम्योश्च खण्डानि गुरुत्वानि विनिर्दिशेत् ॥ ४७ ॥ लह्यानुस्नुतखारीजं कब्जुल्लखारिजकं तथा ॥ अतवेखारिजं हेतुः पोषणे चान्यपुष्टके ॥ ४८ ॥

अर्थ—और अग्नि व वायुतत्त्वकी शकल स्वल्प तालेवाली (हलकी) है. जलभूमिकी शकल भारी कही है ॥ ४७ ॥ लह्यान, नुस्रुतखारिज, कब्जुल्खारिज, अतवेखारिज ये शकलें पोषणमें व अन्योंके पुष्ट करनेमें हेतु हैं ॥ ४८ ॥

लह्यानं फरहोक्ले च हुमरा नुस्नुत्खारिजम् ॥ अतवे द्वौ नकीज्जत्मावेकान्ये च युताः स्मृताः ॥ ४९ ॥ खारिजाणामग्निशत्रुः पाषाणं चे जमातके ॥ अङ्कीशं चोकले कब्जुद्दाखिले च रिपुः स्मृतम् ॥ ५० ॥

अर्थ—लह्यान, फरहा, उकला, हुमरा, नुस्नुतखारिज, अतवेदाखिल, अतवेखारिज-इज्जतमा, ये शकलें एक २ हैं; अन्ययुत हैं. अर्थात् अन्य शकल हो तो मिलीहुई वस्तु कहनी ॥ ४९ ॥ खारिज शकलोंका अग्नि शत्रु है; जमात हो तो मुष्टिकी वस्तुका पत्थ, रसे वैर है; अंकीश, उकला, कब्जुदाखिल, इनकाभी पाषाण (पत्थर) शत्रु है ॥ ५० ॥

फरहा हुमरेज्जत्मा चातवेदाखिले रिपुः ॥ आधारः शेषखण्डानां जलं शत्रुः प्रकीर्तितम् ॥ ५१ ॥ उकलेज्जतमा द्वे द्वे कब्जुल्द-नुस्नुज्जमातकम् ॥ एतानि पूर्णखडानि खण्डितान्यपराणि च ॥ ५२ ॥

अर्थ—फरहा, हुमरा, इज्जतमा, व अतवेदाखिल इन शकलोंका शत्रु पृथ्वी है. अन्य सब शकलोंका शत्रु जल है ॥ ५१ ॥ उकला, इज्जतमा कब्जुल्दाखिल, कब्जुल्खारिज, नुस्नुतखारिज, नुस्नुदाखिल, व जमात, ये पूर्ण शकलैं हैं. अन्य शकलैं खंडित हैं ॥ ५२ ॥

लह्यान्कब्जुलखारीजं नुस्रुतखारिजकं तथा ॥ अतवेखारिजाणां च कटुतीक्ष्णरसाः स्मृताः॥५३॥ हुमरा फरहा चैवेज्जतमातवदाखिलम्॥ मिष्टान्नं च बयाजाख्यं क्षारं तिक्तं तरीखकम् ॥ ५४ ॥

अर्थ—लह्यान, कब्जुलखारिज, नुस्रुत्खारिज व अतवेखारिज, इन शकलोंका रस चर्चरा तीखा है ॥ ५३ ॥ हुमरा, फरहा, इज्जतमा, व अतवेदाखिल ये शकल मिष्टान्न स्वादवाली हैं. बयाज क्षाररस है, तरिखा तिक्त (कडुवे) रसवाली है ॥ ५४ ॥

जमातमुकलाख्यं च कब्जद्दाखिलकं तथा ॥ मिष्टान्नं च रसं क्षारं मिष्टं नुस्रुतदाखिलम् ॥ ५५ ॥ असत् क्षारं नकी खण्डं कथितं यवनोत्तमैः ॥ अङ्कीशं च निकृष्टाम्लं रसं च परिकीर्तितम् ॥ ५६ ॥

अर्थ—जमात, उकला, कब्जुदाखिल ये मिष्टान्न स्वादवाली हैं. नुस्रुदाखिल मिष्ट क्षार स्वादवाली है ॥ ५५ ॥ नकी शकल असत् और क्षार स्वादवाली यवनाचार्योंने कही है; अंकीश बुरा खट्टा रस कहाती है ॥ ५६ ॥

लह्यान्कब्जुलखारीजं नुस्रुतखारिजकं तथा ॥ अतवेखारिजं तुर्निर्माणस्य प्रकीर्त्तितम् ॥ ५७ ॥ कब्जुदाखिल्लजमाते च त्वङ्कीशं भूमिशिल्पकम् ॥ शेषाणि खण्डकान्यत्र शिल्पस्य कारणं स्मृतम् ॥ ५८ ॥

अर्थ—लह्यान, कब्जुल्खारिज, नुस्रुत्खारिज व अतवेखारिज ये शकलैं निर्माण हेतु कहाती हैं; अर्थात् जिससे कछु रचना होसक्ती हो ऐसी वस्तु कहै ॥ ५७ ॥ कब्जुदाखिल, जमात, अंकीश, पृथ्वीकी शिल्पता कहनी. अन्य सब शकलैं यहां शिल्पमात्रके कारण हैं ॥ ५८ ॥

धातुं मूलं च धातुं च मूलं जीवं च मूलकम् ॥ मूलं जीवं च मूलं च धातुमूलं च धातुकम् ॥ ५९ ॥ मूलं जीवं तथा जीवं मूलं चैव क्रमेण वै ॥ लह्यादिशकलानां च प्रोक्तं पूर्वानुसारतः ॥६०॥

अर्थ—धातु १ मूल २ धातु ३ मूल ४ जीव ५ मूल ६ मूल ७ जीव ८ मूल ९ धातु १० मूल ११ धातु १२ ॥५९॥ मूल १३ जीव १४ जीव १५ मूल १६ ऐसे ये सोलह शकल लह्यान आदि क्रमकरके पूर्व आचार्योंके मतके अनुसार कहीं हैं ॥ ६० ॥

१ 'नामैकदेशेन सर्वनाम गृह्यते' यथा भीम इत्युच्चार्यमाणे भीमसेनस्य बोधो जायते तथैव लह्यादि इत्यनेन लह्यानादि ज्ञेयम्। लह्यानादि पाठे छन्दोभङ्गः ॥

मुष्टिकी वस्तु

इसमें पूर्वोक्त सब श्लोकोंका

ल.	क.दा.	क.खा	ज.	फ.	उ.	अं.	हु.	ब.	नु. खा.
मृदु	कठिन	कठिन मृदु	कठिन	मृदु	कठिन मृदु	कठिन मृदु	कठिन	मृदु	कठिन
पीत रक्त	श्वेत श्याम	श्वेत कृष्ण	श्वेत	श्याम पीत श्वेत	श्याम	कृष्ण	रक्त	श्वेत	पीत
दीर्घ	वर्तुल	दीर्घ	चतुरस्र दीर्घ	वर्तुल	वर्तुल	कोण-रहित	वर्तुल	विस्तीर्ण दीर्घ	दीर्घ
नगर वन	स्वर्णरौप्यापण	पर्वत वन	स्वर्णरौप्यापण	आराम नृत्याराम	स्थान सांधकार	स्वर्णरौप्यापण	हिंसाशस्त्रवैद्य स्थान	क्षेत्राराम प्रवाह	नगरवन
अतिमौल्य	मौल्य सहित	मौल्य हीन	मौल्य हीन	अल्प मौल्य	मौल्य सहित	निर्मौल्य	अल्प मौल्य	मध्य मौल्य	अति-मौल्य
लघु	गुरु	लघु	गुरु	लघु	गुरु	लघु	गुरु	लघु	गुरु
एक	युत	युत	युत	एक	एक	युत	एक	युत	एक
अग्नि	पाषाण	अग्नि	पाषाण	आधार	पाषाण	पाषाण	आधार	जल	अग्नि
खंडित	पूर्ण	खंडित	पूर्ण	खंडित	पूर्ण	खंडित	खंडित	खंडित	पूर्ण
तीक्ष्ण कटु	मिष्टान्न	तीक्ष्ण कटु	मिष्टान्न	मिष्टान्न	मिष्टान्न	निकृष्टाम्ल	मिष्टान्न	क्षार	तीक्ष्ण कटु
निर्माण	भूशिल्प	निर्माण	भूशिल्प	शिल्प	शिल्पहेतु	भूशिल्प	शिल्पहेतु	शिल्पहेतु	निर्माण
धातु	मूल	धातु	मूल	जीव	मूल	मूल	जीव	मूल	धातु

बतानेका चक्र-

भाव स्पष्ट समझना ।

≑ नु. द्वा.	⋮̲ अ. खा.	÷ न.	⊤⋮ अ. दा.	⊤⋮̲ इ.	⋮ न.	शकल- नाम
मृदु	कठिन	कठिन	मृदु	मृदु	कठिन मृदु	१ रूप
श्याम	पीतश्याम	पीतश्याम हरित	श्वेत हरित श्याम	हरित	हरित श्वेत श्याम	२ वर्ण
विस्तीर्ण दीर्घ	दीर्घ	विस्तीर्ण दीर्घ	वर्तुल	वर्तुल	विस्तीर्ण दीर्घ	३ आकृति
आराम पाठागार	नगर वन	वनग्राम	वनक्षेत्र	चित्रापण	कृषिमार्ग	४ स्थान
अति मौल्य	मौल्यहीन	मौल्यहीन	स्वल्प मौल्य	अल्पमौल्य	मौल्य सहित	५ मूल्य
लघु	गुरु	लघु	लघु	गुरु	गुरु	६ तोल
युत	एक	एक	एक	एक	युत	७ योग
जल	अग्नि	जल	आधार	आधार	जल	८ शत्रुता
पूर्ण	खंडित	खंडित	खंडित	पूर्ण	खंडित	९ खंडिता
क्षार मिष्ट	तीक्ष्ण कटु	असत् क्षार	मिष्टान्न	मिष्टान्न	तिक्त	१० स्वाद
शिल्पहेतु	निर्माण	शिल्प हेतु	शिल्पहेतु	शिल्पहेतु	शिल्पहेतु	११ लक्षण
मूल	धातु	मूल	जीव	जीव	मूल	१२ धात

एवं प्रोक्तं मुष्टिप्रश्नस्य सम्यक् ज्ञानं भेदैः पूर्वशास्त्रानुसारात् ॥
दैवज्ञानां चातिसन्मानहेतुर्लोकानां वै रञ्जनार्थं निरुक्तम् ॥ ६१ ॥

अर्थ—इसप्रकारसे मुष्टिप्रश्नका सम्यक् (अच्छीप्रकार) ज्ञान, पूर्वशास्त्रोंके अनुसार सब भेदोंकरके कहा यह दैवज्ञ (ज्योतिषियों) का अति सन्मानहेतु है और लोगोंके मन प्रसन्न होनेके वास्ते कहा है ॥ ६१ ॥

इति श्रीसनाढ्यकुलावतंसपरमसुखोपाध्यायकृते रम्लनवरत्ने मुष्टिप्रश्नकथनं नाम षष्ठं रत्नं समाप्तम् ॥ ६ ॥

इति श्रीवेरीनिवासिगौड़वंशोद्भवद्विजशालग्रामात्मजबुधवसतिरामविरचितरम्लनवरत्नचंद्रिकानामभाषाटीकायां मुष्टिप्रश्नकथनं नाम षष्ठं रत्नम् ॥ ६ ॥

अथ सप्तमं रत्नम् । मूकप्रश्नकथनम् ॥

आद्यत्रयोदशाभ्यां च खण्डमन्यच्च कारयेत् ॥ प्रस्तारे यदि तच्चेत्स्यात्स्वार्थे प्रश्नकृतं वदेत् ॥ १ ॥ प्रस्तारे यद्गृहे खण्डं प्रश्नस्तस्य गृहस्य च ॥ नोचेत्प्रस्तारके खण्डं परार्थे च कृतं वदेत् ॥ २ ॥

अर्थ—अथ सातवां रत्न । तहां मूकप्रश्नको कहते हैं-पहली और तेरहवीं शकलकरके एक अन्य शकल बनावे; जो यदि वह शकल प्रस्तारमें हो तो स्वार्थ (अपने वास्ते) प्रश्न किया है यह कहै ॥ १ ॥ प्रस्तारमें जिस घरमें हो उसी घरका प्रश्न है. जो यदि वह शकल प्रस्तारमें न हो तो अन्यके वास्ते प्रश्न किया है यह कहै ॥ २ ॥

शकुने तस्य यद्गेहं प्रश्नं तस्य वदेत्किल ॥ मूकप्रश्नप्रकारोऽयं प्रथमः परिकीर्तितः ॥ ३ ॥ अधुनाऽन्यप्रकारस्य विधिं वक्ष्ये समासतः ॥ षोडशान्तं गृहादाद्याद्गणयेच्छून्यशशिकम् ॥ ४ ॥

अर्थ—शकुनपंक्तिमें तिसका जो घर हो उसी घरका प्रश्न कहै. यह मूकप्रश्नमें प्रथम पहिला प्रकार कहा है ॥ ३ ॥ अब अन्य दूसरे प्रकारकी विधिको संक्षेपमात्रहीसे कहते हैं. पहले घरसे लेके सोलहवें घरतककी शकलोंकी शून्योंकी गिनती करै ॥ ४ ॥

षोडशेन हृते शेषे गेहे स्यान्मूकप्रश्नके॥ त्रयोदशे च शक्रे च पञ्चचन्द्रे च षोडशे ॥ ५ ॥ आद्यद्वित्रिचतुर्थे च गेहे प्रश्नस्य संस्थितिः ॥ मूकप्रश्ने द्वितीयोऽयं प्रकारः समुदाहृतः ॥ ६ ॥

अर्थ—फिर सोळहका भाग देवे पीछे जो अंक बाकी रहे उसी घरका प्रश्न जानना। जो यदि तेहरवें १३ चौदहवें १४ पंदरहवेंमें १५ सोळहवें ॥ १६ ॥ ५ ॥ कोई अंक बचे तो क्रमसे पहिला १ दूसरा २ तीसरा ३ चौथा ४ इन घरोंमें प्रश्नकी स्थिति जाननी, अर्थात् इन घरोंका प्रश्न जानना। ऐसे यह दूसरा प्रकार कहा है ॥ ६ ॥

अन्यन्मतान्तरं वक्ष्ये मूकप्रश्ने तृतीयकम् ॥ पञ्चेन्दु १५ विश्व १३ नन्दे ९न्दु १ खण्डाद्भूभागतः क्रमात् ॥७॥ अग्न्यादिकेषु तत्वेषु चतुर्ष्वपि निवेशयेत् ॥ भवेच्छकलमेकं वै त्वनेनैव क्रमेण च ॥ ८ ॥

अर्थ—अब मूकप्रश्नमें अन्य तीसरा मत कहते हैं—कि पंदरह १५ तेरह १३ नव ९ और एक १ इन घरोंकी शकलोंके पृथ्वीभागके क्रमसे ॥ ७ ॥ अग्नि आदि चार तत्वों-विषे स्थापित करै अर्थात् इन चार शकलोंके नीचेके भागसे यथाक्रम एक एक भाग धारण करै, तब इस क्रमसे एक शकल होती है ॥ ८ ॥

आद्यद्वित्रितुरीयस्थशकलादग्निभागतः ॥ द्वितीयं शकलं ज्ञेयं पञ्च ५ र्त्व ६ द्रि ७ वसु ८ गृहात् ॥ ९ ॥ जलभागात्तृतीयं तु क्रमेण त्रितयं लिखेत् ॥ अष्टा ८ ऽर्क १२ खण्डयोर्वायुं जलमिन्द्र १४ स्थखण्डकात् ॥ १० ॥

अर्थ—फिर पहिली, दूसरी, तीसरी, व चौथी शकलके अग्निभागसे दूसरी शकल उत्पन्न करै. और पांचवीं, छठी, सातवीं, आठवीं, शकलसे ॥ ९ ॥ जळतत्वके भागको ग्रहण करके क्रमसे तीसरी शकल बनावे और आठवीं, बारहवीं शकलका वायुभाग चौदहवीं शकलके जळभागको ग्रहण कर ॥ १० ॥

---

१ भावास्तु द्वादशैव–षोडशे न त्हते चेत् त्रयोदशे शक्रे पञ्चचन्द्रे षोडशे अंके लब्धे सति कस्य गृहस्य प्रश्न इत्यपेक्षायामाद्येति ।

वह्निभागं षोडशस्य क्रमादग्न्यादिके न्यसेत् ॥ एवं तुरीयखण्डं च तृतीयाग्रे लिखेद्बुधः ॥ ११ ॥ चतुर्भ्यो द्वे समुत्पाद्य द्वाभ्यामेकं च कारयेत् ॥ तत्खण्डं यत्र गेहे स्यात्प्रश्नं तत्र वदेद्बुधः ॥ १२ ॥

अर्थ—सोलहवीं शकलके अग्निभागको ग्रहण कर, क्रमसे अग्नि आदि भागमें अर्थात् ऊपरके क्रमसे स्थापित करै; ऐसे चौथी शकलको बनाके पंडितजन तीसरी शकलके आगे लिखै ॥ ११ ॥ इन चार शकलोंसे दो बनाके फिर दोनोंसे एक बनावें वह शकल प्रस्तारमें जिस घरमें होय उसी घरका प्रश्न कहै ॥ १२ ॥

विश्वादिकेषु खण्डेषु पूर्ववत्प्रथमादितः ॥ मूकप्रश्ने तृतीयोऽयं प्रकारः समुदाहृतः ॥ १३ ॥ अन्यप्रकारं वक्ष्यामि मूकप्रश्ने चतुर्थकम् ॥ नवाशारुद्रसूर्याणां ९ । १० । ११ । १२ । खण्डानां वह्निभागतः ॥ १४ ॥

अर्थ—जो यदि तेरहवें आदि चार घरोंमें पड़े तो पहलेकी तरह प्रथम आदि चार घरोंमें प्रश्न समझै. ऐसे यह मूकप्रश्नमें तीसरा प्रकार कहा है ॥ १३ ॥ अब मूकप्रश्नविषे अन्य (चौथा) प्रकार कहते हैं कि–नव, दश, ग्यारह, बारह इन शकलोंके अग्निभागसे ॥ १४ ॥

पूर्णक्रमेण शकलं कारयेद्दैवचिन्तकः ॥ ततोऽब्दहे यत्र गेहे प्रश्नं तत्र वदेद्बुधः ॥ १५ ॥ सर्वेषां श्रेष्ठरूपं यत्पञ्चमः कथ्यतेऽधुना ॥ युग्मशून्ययुतं खण्डं तुला १५ गेहे सदैव हि ॥ १६ ॥

अर्थ—पूर्व क्रमकरके अर्थात् जैसे तीसरे प्रकारमें चार शकल बनाके एक शकल बनाई है इसीतरह दैवज्ञ (ज्योतिषी) जन एक शकल बनावे. पीछे वह शकल अब्दपंक्तिमें जिस घरमें होय उसी घरका प्रश्न कहना ॥ १५ ॥ अब सबोंमें जो उत्तम है तिस पांचवें प्रकारको कहते हैं कि–पंदरहवें घरमें सदा दो शून्योवाली शकल रहती है ॥ १६ ॥

वेदरेखा वेदशून्यं कदाचित्तिथिगेहके ॥ ऊनशून्यं भवेन्नैव चे-
त्स्यात्तत्र भ्रमेण हि ॥१७॥ तिथिगेहे जमातं चेदुद्घाटनमथाचरेत् ॥
पूर्वोक्तेनैव मार्गेण शून्यलाभस्य कारणात् ॥ १८ ॥

अर्थ—पंदरहवें घरमें चार रेखा और चार शून्य तो कभी हो जाती हैं, न्यून शून्य तो तहां कभी नहीं होतीं; यदि हो गई तो भूल जाननी ॥ १७ ॥ जो पंदरहवें घर जमात ☰ शकल हो तो उस प्रकारका उद्घाटन पूर्वोक्त मार्ग करके शून्योंके लाभके वास्ते करना ॥ १८ ॥

आद्यशून्यं च मूकस्य द्वितीयं कार्यसिद्धये ॥ तस्मात्पञ्चदशा-
त्खण्डाच्छून्ययुग्मं च चालयेत् ॥ १९ ॥ पूर्वोक्तेनैव मार्गेण
यत्र ते च स्थिरे गते ॥ ते खण्डे च पृथक् स्थाप्ये ताभ्यामेकं
च कारयेत् ॥ २० ॥

अर्थ—तहां पहली शून्य तो मूकप्रश्नकी है और दूसरी कार्यसिद्धिके अर्थ जाननी; इसलिये पंदरहवें घरसे दो शून्योंको चलावे ॥ १९ ॥ पूर्वोक्त मार्गकरके अर्थात् पहले जो शून्य चालन प्रकार पांचवें रत्नमें कहा है तिसके अनुसार शून्य चलावे; पीछे जहां वे शून्य ठहरें उन शकलोंको अलग स्थापित करै. फिर उनसे एक शकल बनावे ॥ २० ॥

तत्खण्डं यत्र प्रस्तारे प्रश्नं तत्र वदेद्बुधः ॥ नोचेत्प्रस्तारके तत्तु तदा
च शकुनक्रमे ॥२१॥ यत्र गेहे स्थितं तच्चेत् प्रश्नं तत्रैव तत्स्थितम्॥
मूकप्रश्ने प्रकारोऽयं पञ्चमः परिकीर्तितः ॥ २२ ॥

अर्थ—फिर वह शकल प्रस्तारमें जिस घर पड़े उसी घरका प्रश्न कहै. जो यदि वह प्रस्तारमें न होय तो शकुनपंक्तिके घरका प्रश्न कहना. ऐसे यह पांचवां प्रकार कहा है ॥ २१ ॥ २२ ॥

पूर्वं च कथितं षष्ठं प्रश्नभेदसमन्वितम् ॥ एवं प्रश्नो मूकसंज्ञः
षट्प्रकारैर्निरूपितः ॥ २३ ॥ इति श्रीसनाढ्यकुलावतंस-

परमसुखोपाध्यायकृते रम्लनवरत्ने मूकप्रश्नकथनं नाम सप्तमं रत्नम् ॥ ७ ॥

अर्थ—और भेदसे युक्त कारण आदि बताना ऐसा छठा मूकप्रश्न पहले चौथे रत्नमें कहदिया है. ऐसे छहप्रकारोंकरके मूकप्रश्न कहा ॥ २३ ॥

इति श्रीवेरीग्रामनिवासिगौडवंशोद्भवद्विजशालग्रामात्मजबुध-
वसतिरामविरचितरम्लनवरत्नचन्द्रिकानामभाषाटीकायां
मूकप्रश्नकथनं नाम सप्तमं रत्नम् ॥ ७ ॥

अथाष्टमं रत्नम् । तत्र चौरादीनां नामकथनप्रकारः ।

पूर्वं तु निश्चयं कृत्वा कति नामाक्षराणि च ॥ चौरादीनां ततः पश्चादक्षराणि च साधयेत् ॥१॥ रमलं पातयेत्तत्र शकलं रच-येत्सुधीः ॥ फरहा कुत्र गेहे स्यादादौ तां च विलोकयेत् ॥२॥

अर्थ—अब आठवें रत्नको कहते हैं–तहां चोर आदिकोंके नामकथनका प्रकार कहते हैं–पहले तो निश्चय करै कि, नामके कितने अक्षर हैं? पीछे चोर आदिकोंके अक्षरोंको साधै, अर्थात् कौन २ अक्षर है यह विचारै ॥ १ ॥ पंडित जन तहां रमल डालके शकल बनावे–पहले यह विचारै कि, फरहा शकल कौनसे घर है ॥ २ ॥

प्रथमे फरहा चेत्स्यात्तदा सप्ताक्षराणि च ॥ द्विवर्णं द्वितये ज्ञेयं त्रिवर्णं च तृतीयके ॥ ३ ॥ चतुर्थे च चतुर्वर्णं पञ्चमे पञ्चवर्ण-कम् ॥ षष्ठे च फरहा चेत्स्यात्तदा षड्वर्णकं भवेत् ॥ ४ ॥

अर्थ—जो यदि पहले घरमें फरहा शकल हो तो सात अक्षर कहै. दूसरे घर फरहा हो तो दो अक्षर समझने; तीसरे हो तो तीन अक्षर कहै ॥ ३ ॥ चौथे हो तो चार अक्षर, पांचवें हो तो पांच अक्षर. छठे फरहा हों तो छह अक्षर कहै ॥ ४ ॥

सप्तमे सप्तसंख्याकमष्टमे च षडेव हि ॥ नवमे च तदा पञ्च दशमे चतुरक्षरम् ॥५॥ एकादशे त्रिवर्णं स्याद्द्वादशे सप्तसं-ख्यकम् ॥ त्रयोदशे च फरहा भवेद्यदि द्वितीयके ॥ ६ ॥

अर्थ—सातवें फरहा हो तो सात अक्षर कहने; आठवें हो तो छह अक्षर; नवमें हो तो पांच और दशवें हो तो चार अक्षर कहने ॥ ५ ॥ ग्यारहवें हो तो तीन अक्षर, बारहवें हो तो सात अक्षर कहने–जो यदि तेरहवें घर फरहा हो तो दूसरे घरमें–॥ ६ ॥

गृहे वै शकलं यत्स्यात्तस्याङ्कमब्दहेन च ॥ तदङ्कतुल्यवर्णं स्यान्नाम्नि तत्र वदेत्सुधीः ॥७॥ चतुर्दशे चतुर्वर्णं षोडशेऽपि तथैव च ॥ द्वित्र्यादिके गृहे चेत्स्याद्बलवच्छकलाद्वदेत् ॥८॥

अर्थ—(दूसरे घर) जो शकल हो उस शकलका अब्दह पंक्तिकरके जो अंक हो उतनेही अक्षर चोरके नाममें पंडित जन कहै ॥ ७ ॥ चौदहवें घर चार अक्षर, सोलहवें घरभी चार अक्षर कहने, जो यदि दो तीन घरोंमें हो तो बलवान् शकलसे कहै ॥८॥

यदि प्रस्तारके न स्यात्तदा च प्रथमे गृहे ॥ शकलं तस्य संख्याङ्कमब्जदस्य मतेन च ॥ ९ ॥ तदङ्कतुल्यवर्णाश्च तस्य नाम्नि भवन्ति हि ॥ नाम्न्येवं वर्णसंख्या सा विद्वद्भिः परिकीर्तिता ॥ १० ॥

अर्थ—जो यदि प्रस्तारमें नहीं हो तो जो शकल पहले घरमें हो उसके अंकको अब्जद पंक्तिके क्रमकरके ग्रहण करै ॥ ९ ॥ जो अंक लब्ध होय उतनेही अक्षर चोरके नाममें होते हैं, ऐसे पंडित जनोंने नाममें अक्षरोंकी संख्या कही है ॥ १० ॥

कानि तान्यक्षराणीत्यपेक्षायामाह ।

सर्वेषामक्षराणामानयने च विधिं ब्रुवे ॥ आद्य १ त्रयोदशा १३ भ्यां च शकलं कारयेत्सुधीः ॥११॥ प्रस्तारे यद्गृहे खण्डं तत्तुल्यं चोर्ध्वपङ्क्तिके ॥ अङ्कं चैव ततस्योत्पन्नस्य शकलस्य च ॥१२॥

अर्थ—अब अरोंके निकालनेकी विधिको कहते हैं–पंडितजन पहली और तेरहवीं शकलोंसे एक शकल बनावे ॥ ११ ॥ फिर वह शकल प्रस्तारमें जिस घर

---

१ चतुर्दश इत्युक्त्वा षोडश इत्युक्तं ननु पंचदशे कथं नोक्तमिति माशङ्कनीयं न्यूनशून्यं भवेन्नैवेति वचनात्पञ्चदशे फरहा न भवितुं योग्येति यावत् ।

होय उसीके तुल्य ऊर्ध्व, चक्रकी ऊपरकी पंक्तिमें अंक ग्रहण करै. उतनीही संख्यातकके कोष्टमें गिनै. पीछे उत्पन्न हुई उसी शकलके ॥ १२ ॥

बिज्दहस्य मतेनाङ्कगेहस्य च तदंककम् ॥ तिर्यक्क्रमेण देयानि चक्रे वर्णाङ्कके द्वयोः ॥ १३ ॥ अङ्कयोश्च तले यच्च वर्णं तत्प्रथमाक्षरम् ॥ द्वितीयवर्णानयने विधिं वक्ष्येऽतिशोभनम् ॥ १४ ॥

अर्थ--विज्दहके मतकरके अंक ग्रहण कर तिसी अंकको चक्रके तिरछे कोठेमें देके फिर चक्रमें उन दोनोंकें अंकोंको गिनै ॥ १३ ॥ उन दोनोंके नीच क्रमसे गिनके जो अक्षर प्राप्त होवे वही पहिला अक्षर है, अर्थात् ऊपरसे गिननेसे और तिरछे क्रमसे एकही अक्षर प्राप्त होगा; यह सब चक्रमें स्पष्ट करना. अब दूसरे अक्षर निकालनेकी श्रेष्ठ विधि कहते हैं ॥ १४ ॥

चतुर्थं शकलं यत्स्यात्तथा चैव चतुर्दशे ॥ अनयोर्योगतः कार्यं खण्डं तस्य च पूर्ववत् ॥ १५ ॥ कर्तव्यं तेन यज्जातं वर्णं ज्ञेयं द्वितीयकम् ॥ उत्पन्नशकलं नास्ति प्रस्तारे चेत्तदा कथम् ॥ १६ ॥

अर्थ—चौथी और चोदहवीं शकलकी एक शकल निकालै तिससे पूर्ववत्, पहले अक्षर निकालनेकी तरह ॥ १५ ॥ विधि करै तिससे जो अक्षर निकले वह दूसरा जानना जो यदि उत्पन्न हुई शकल प्रस्तारमें न होय तो कैसे ? ॥ १६ ॥

ऊर्ध्वपंक्त्यां गृहांकं च केन मार्गेण लभ्यते ॥ तदोत्पन्नस्य खण्डस्य वर्णं विजदहे गृहे ॥ १७ ॥ शकलं स्याच्च प्रस्तारे विज्दहस्य क्रमेण च ॥ अंका ग्राह्यास्तदंकं च न्यसेच्चक्रे च तिर्यके ॥ १८ ॥

अर्थ—और ऊर्ध्वपंक्तिविषे गृहांक किस मार्गकरके लब्ध होता है ? यह सब कहते हैं कि—तहां उत्पन्न हुई शकलका अक्षर (अंक) विज्दहपंक्तिके घरमें जौनसे

हो ॥ १७ ॥ अर्थात् वर्णविज्दहका जौनसा घर हो, उसी प्रस्तारके घरमें जो शकल हो उसको ग्रहण कर फिर उसके अंक बिज़्दहके क्रमसे ग्रहण करने फिर वह अंक तिरछे क्रमसे चक्रमें देना ॥ १८ ॥

उत्पन्नशकलस्याङ्कमूर्ध्वे चक्रे च विन्यसेत् ॥ द्वयोरधस्थयोर्वर्णं ज्ञेयं तत्र सदा बुधैः ॥१९॥ एवं सर्वत्र विज्ञेयं खण्डं प्रस्तारके न चेत् ॥ सप्तमात्तिथिसंख्याश्च खण्डमन्यच्च कारयेत् ॥२०॥

अर्थ—और उत्पन्न हुई शकलका वह पहिला अंक ऊर्ध्वचक्रमें देना. पीछे उन दोनोंके नीचे जो अक्षर हों वह पंडित जनोंने सदा जानना ॥१९ ॥ जो यदि प्रस्तारमें शकल न होय तो सब जगह ऐसे ही जानलेना, और सातवीं तथा पंदरहवीं शकलकी एक शकल बनावे ॥२० ॥

पूर्वरीत्या तृतीयं तु वर्णं ज्ञेयं विचक्षणैः ॥ दशमात्षोडशाच्चैकं कार्यं शकलमुत्तमम् ॥ २१ ॥ पूर्वोक्तेनैव मार्गेण वर्णं ज्ञेयं चतुर्थकम् ॥ पञ्चमस्यापि वर्णस्याऽऽनयने च विधिं ब्रुवे ॥२२॥

अर्थ—फिर उससे इस पहली रीतिसेही पंडित जनोंने तीसरा अक्षर जानना. फिर दशवें और सोलहवें घरसे एक शकल बनावे ॥ २१ ॥ पूर्वोक्तमार्गकरके चौथा वर्ण जानना; अब पांचवें अक्षरकी विधि कहते हैं ॥२२ ॥

प्रस्तारे विषमाणां च १।३।५।७।९।११।१३।१५ खण्डानां गणितं कुरु ॥ शून्यानि षोडशे नैव भागं दत्त्वाऽवशेषकम् ॥२३॥ प्रथमादिगृहे देयं यत्र स्यादवसानकम् ॥ खण्डं तस्य पुरा रीत्या ज्ञेयं वर्णश्च पञ्चमम् ॥ २४ ॥

अर्थ—प्रस्तारमें विषम स्थान अर्थात् १-३-५-७-९-११-१३-१५ इन घरोंकी शकलोंकी शून्योंको गिनैं. पीछे सोलहका भाग देवे जो बाकी रहे ॥२३॥ उनकी संख्या पहले आदि घरमें देता रहै; जिस घरमें संख्याकी समाप्ति हो प्रस्तारकी वही शकल जानै. फिर तिससे पहली रीतिकरके पांचवें अक्षरको जानै ॥ २४ ॥

केन्द्रस्थ १।४।७।१० शकलानां च शून्यानि गणयेत्क्रमात ॥ रेखाश्च गणयेत्तत्र रेखायां च द्विसंख्यकम् ॥ २५ ॥ शून्यरेखाङ्कयोर्योगः कार्यस्तस्य च पूर्ववत् ॥ पञ्चमाक्षरवज्ज्ञेयं षष्ठवर्णं मनीषिभिः ॥ २६ ॥

यह वर्णविज्दहचक्र है.																
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	गृहांकाः
÷	≐	⫟	☰	⋮	⌶	≘	≡	⩦	÷	⌶	⫧	⊥	÷	÷	≣	वर्णविज्दहे शकलक्रमः

अर्थ—केंद्रस्थानकी अर्थात् १–४–७–१० इन शकलोंकी शून्योंको क्रमसे गिनैं, और रेखाओंकोभी गिनके तिनकी दूनी संख्या करै ॥ २५ ॥ फिर शून्योंके अंक और रेखाओंके अंकोंको जोडले; पीछे पहलेकी तरह सोलहका भाग देके अंक संख्यातुल्य प्रस्तार घरकी शकलको ग्रहणकर, पांचवें अक्षरकी तरह छठे अक्षरकोभी निकालै ऐसे पंडितजनोंने जानना ॥२६॥

ब्रुवेऽहं सप्तमस्यापि वर्णस्य च विधिं किल ॥ विश्वादीनां १३। १४।१५।१६ च खण्डानां चतुर्णां गणयेत्तु खम् ॥२७ ॥ तस्य पूर्वोक्तमार्गेण वर्णं लब्धं च सप्तमम् ॥ एवं क्रमेण नाम्नश्च वर्णसंख्यां धिया वदेत् ॥२८ ॥

अर्थ—अब सातवें अक्षर निकालनेकी विधिको कहते हैं–तेरहवें आदिक चार घरोंकी १३–१४–१५–१६ शकलोंकी शून्योंको गिनै ॥ २७ ॥ फिर पूर्वोक्त मा-

गें करके अर्थात् पांचवें छठे अक्षरकी विधिसे सातवां अक्षर लब्ध करना. इस क्रमसे नामके अक्षरोंकी संख्या बुद्धिसे कहै ॥ २८ ॥

स्वबुद्ध्या कल्पयेत्तत्र वर्णान्मात्राश्च बुद्धिमान् ॥ एवं सर्वाणि वर्णानि देशज्ञातिवशेन च ॥ २९ ॥ नामानि कल्पयेद्विद्वान् यस्य कस्यापि बुद्धितः ॥ मुष्ट्यादिष्वपि वक्तव्यं तस्करस्योपलक्षणम् ॥ ३० ॥

अर्थ—तहां बुद्धिमान् पुरुष मात्राओंको अपनी बुद्धिसे कल्पित करै. ऐसे संपूर्ण अक्षर देश और जातिके वशसे निकालै ॥ २९ ॥ विद्वान् पुरुष बुद्धिसे जिसकिसीके नामोंकोभी कल्पित करै; मुष्टिआदिकोंकी वस्तुमेंभी यही विधि करनी; चोरका तो एक उपलक्षणमात्र दिखाया है ॥ ३० ॥

अथ नामाक्षरनिष्कासने उदाहरणम् ।

रमलं पातितं यथा तस्य प्रथमशकलं त्रयोदशगृहस्थशकलेन गुणितं जातं उक्ला ⩧ संज्ञकम् । अयं च वर्णबिज्दहक्रमे दशमगृहे स्थितः प्रश्नस्य प्रस्तारे षष्ठगृहे समागतः तस्माद्बिज्दहस्य गृहस्य संख्याङ्कं १० तिर्यक् पंक्त्यां दत्तं प्रस्तारगृहस्य ६ संख्याङ्कमूर्ध्वपंक्त्यां दत्तं द्वयोरधःस्थयोः कोष्ठे सकाराक्षरं प्राप्तं तस्मान्नाम्नि प्रथमाक्षरं सकारः ।

अर्थ—अब नामके अक्षर निकालनेका उदाहरण कहते हैं कि—हमने रमल डाला तहां पहली शकल तेरहवें घरकी शकलसे गुणी तब उकला ⩧ नामक शकल उत्पन्न भई; यह वर्ण बिज्दहपंक्तिमें दशवें घर स्थित है, और प्रश्नके प्रस्तारमें छठे घर स्थित है; इसलिये बिज्दहके घरकी संख्याका दशवां अंक तिरछी पंक्तिविषे दिया और प्रस्तार घरका छठा अंक ऊपरकी पंक्तिमें दिया, तब इन दोनोंके नीचेके कोष्ठमें सकार अक्षर प्राप्त भया, इसलिये नाममें पहला अक्षर सकार है. यह सब प्रकार इस अगले चक्रमें देखनेसे स्पष्ट होगा.

१५

ऊर्ध्व-

यह चक्र नामाक्षर निकालनेका है; इसमें पूर्वोक्त

अलिफ	बे	जीम	दाल	हे छोटी	वाव	जे	हे बढ़ी	तो	ये
÷	⩸	⁝	☰	⁞	÷	☰	☰	÷	÷
अ १	व २	ज ३	द ४	ह ५	व ६	ज़ु ७	ह ८	त्व ९	य १०
व	ज	द	ह	व	ज	ह	त्व	य	क
ज	द	ह	व	ज	ह	त्व	य	क	ल
द	ह	व	ज	ह	त्व	य	क	ल	म
ह	व	ज	ह	त्व	य	क	ल	म	न
व	ज	ह	त्व	य	क	ल	म	न	स
ज	·ह	त्व	य	क	ल	म	न	स	अ
ह	त्व	य	क	ल	म	न	स	अ	फ
त्व	य	क	ल	म	न	स	अ	फ	स
य	क	ल	म	न	स	अ	फ	स	क
क	ल	म	न	स	अ	फ	स	क	र
ल	म	न	स	अ	फ	स	क	र	श
म	न	स	अ	फ	स	क	र	श	त
न	स	अ	फ	स	क	र	श	त	स
स	अ	फ	स	क	र	श	त	स	ष
अ	फ	स	क	र	श	त	स	ष	य

क्रमः ।

उदाहरण मिलाके स्पष्ट देखो. यह उपरका क्रम है.

का फ मकर जंबाल	लाम	मीम	नून	सीन्	पवनाक्षर	संज्ञेयम्
⁝	⩧	⋮	÷	∓	≣	शकल
क २०	ल ३०	म ४०	न ५०	स ६०	अ ७०	१
ल	म	न	स	अ	फ ८०	२
म	न	स	अ	फ	स ९०	३
न	स	अ	फ	स	क १००	४
स	अ	फ	स	क	र २००	५
अ	फ	स	क	र	श ३००	६
फ	स	क	र	श	त ४००	७
स	क	र	श	त	स ५००	८
क	र	श	त	स	ष ६००	९
र	श	त	स	ष	य ७००	१०
श	त	स	ष	य	ज ७००	११
त	स	ष	य	ज	ज्व८००	१२
स	ष	य	ज	ज्व	ग ९००	१३
ष	य	ज	ज्व	ग	अ	१४
य	ज	ज्व	ग	अ	व १००	१५
ज	ज्व	ग	अ	व	ज	१६

अथ द्वितीयाक्षरस्योदाहरणम्।

तस्यैव रमलस्य चतुर्थ ४ चतुर्दशा १४ भ्यां शकलाभ्यां जातमङ्कीशं ☰ अयं वर्णबिज्दहक्रमेऽष्टमगृहे स्थितः परन्तु प्रस्तारेऽङ्कीशं कुत्रापि नास्ति प्रस्तारेऽष्टमगृहे नुस्रुतुल्खारिजं स्थितम्। अयं वर्णबिज्दहे नवमगृहे स्थितः। तस्मान्नवसंख्याङ्कं तिर्यक्पंक्त्यां दत्तं पूर्ववर्णविज्दहस्याङ्कमूर्ध्वपंक्त्यां दत्तं द्वयोरधःस्थकोष्ठे अकाराक्षरं प्राप्तं तस्मान्नाम्नि द्वितीयाक्षरं अकारः।

अर्थ—अब दूसरे अक्षरका उदाहरण कहते हैं-तिसी रमलके प्रस्तारके चौथे और चौदहवें घरकी एक शकल करी सो अंकीश ☰ हुई, यह वर्णविज्दहपंक्तिक्रममें आठवें घर स्थित है परंतु प्रस्तारमें अंकीश कहींभी नहीं है, प्रस्तारमें आठवें घर नुस्रुतुल्खारीज शकल स्थित है, सो यह वर्णविज्दहमें नवमें घर स्थित है, इसलिये नवका अंक तो तिरछी पंक्तिविषे दिया और पहिला वर्णविज्दहका वह आठवां, ऊपरकी पंक्तिमें दिया, फिर इन दोनोंके नीचेके कोष्ठमें अकार अक्षर प्राप्त भया, इसलिये नाममें दूसरा अक्षर अकार है।

अथ तृतीयाक्षरस्योदाहरणम्।

सप्तमपञ्चदशगृहस्थशकलाभ्यां जातं लह्यानं ☰ अयं वर्णबिज्दहक्रमे द्वितीयगृहे स्थितः प्रस्तारे तृतीयगृहे स्थितः तस्माद्वर्णबिज्दहगृहाङ्कं २ तिर्यक् पङ्क्त्यां दत्तं प्रस्तारगृहाङ्कमूर्ध्वपङ्क्त्यां दत्तं द्वयोरधःस्थकोष्ठे दकाराक्षरं प्राप्तं तस्मान्नाम्नि तृतीयाक्षरो दकारः एवमन्येषामपि वर्णानामुदाहरणम्।

अर्थ—अब तीसरे अक्षरके निकालनेका उदाहरण कहते हैं—सातवें और पंदरहवें घरकी शकलोंकरके लह्यान ☰ शकल उत्पन्न भई. यह वर्ण बिज्दहक्रममें दूसरे घरमें स्थित है और प्रस्तारमें तीसरे घर स्थित है; इसलिये वर्णविज्दहके घरका दूसरा अंक तिरछी पंक्तिमें दिया, और प्रस्तारके घरका तीसरा अंक ऊपरकी पंक्तिमें दिया। फिर दोनोंके नीचेके कोष्ठमें दकार अक्षर प्राप्त भया, इसलिये नाममें तीसरा अक्षर दकार है। ऐसेही अन्यवर्णोंकाभी उदाहरण जान लेना।

अन्यन्मतान्तरं वक्ष्ये प्रत्यक्षेषु जनेषु च ॥ ज्ञानार्थं तस्करस्यापि रमलं कारयेत्सुधीः ॥ ३१ ॥ पूर्वोक्तेनैव मार्गेण इन्किलावं च कारयेत् ॥ प्रस्तारद्वितयं कृत्वा तत्र प्रश्नं विलोकयेत् ॥ ३२ ॥

अर्थ—अन्यमतको कहते हैं–प्रत्यक्ष जनोंमें चोरके ज्ञानके वास्ते पंडितजन रमल डालै ॥ ३१ ॥ पूर्वोक्त मार्गकरके इन्किलाव करै तिससे दूसरा प्रस्तार करके तहां प्रश्न देखै ॥ ३२ ॥

जमातं यत्र गेहे स्यात्प्रस्तारे च द्वितीयके ॥ तद्गृहे पूर्वप्रस्तारे दाखिलं साबितं भवेत् ॥ ३३ ॥ तदा जनसमूहेषु प्रत्यक्षेषु च विद्यते ॥ तस्करः खारिजे नास्ति मुन्कलीवे तथा वदेत् ॥३४॥

अर्थ—तिस दूसरे प्रस्तारमें जिस घरमें जमात शकल होवे उसी घरमें पहिले प्रस्तारमें जो दाखिल साबित शकल होय तो ॥ ३३ ॥ प्रत्यक्ष बैठेहुए जनसमूहमेंहि चौर है, खारिज अथवा मुन्कलीव हो तो इनमें चोर नहीं है यह कहै ॥ ३४ ॥

एवं जनसमूहस्य द्विधा भागं च कारयेत् ॥ तदुद्देशं पृथक् रम्लं कृत्वाऽप्येवं विलोकयेत् ॥ ३५ ॥ एवं पुनः पुनः कुर्याद्यावत् स्यादेकसंख्यकः ॥ द्वितीयरमले चैव जमातं षष्ठगं भवेत् ॥३६॥

अर्थ—ऐसेही प्रत्यक्ष वैठा २ के जनसमूहके दो भाग कर लेवे, तिस प्रत्यक्षवालेके उद्देशसे रमल डालके इसीप्रकारसे देखै ॥ ३५ ॥ ऐसे वारंवार करता रहे जबतक एक संख्या रहे जबतक करे; जो यदि दूसरेके रमलमें अर्थात् हम दो जनोंमें कौन चोर है? इस प्रश्नमें छठें घर जमात होवे तो ॥ ३६ ॥

अंकीशं च द्वितीये स्यादथवा नवमे गृहे ॥ नक्यष्टमे च प्रथमे प्रस्तारे यदि जायते ॥ ३७ ॥ तदा चौरः स विज्ञेयो येन प्रश्नः कृतः किल ॥ एवं प्रत्यक्षरूपेषू जनेषु चौरनिर्णयः॥ ३८ ॥

अर्थ—अंकीश शकल दूसरे हो अथवा नवमें घर हो, नकी आठवें हों अथवा प्रस्तारमें पहलेही घर हो ॥ ३७ ॥ तो वह चोर जानना कि–जिसने प्रश्न किया है; ऐसे प्रत्यक्ष आगे बैठेहुए जनोंमें चौरका निर्णय करना कहा है ॥ ३८ ॥

अन्यन्मतान्तरं वक्ष्ये प्रत्यक्षजनसञ्चये ॥ रमलं कारयेत्तत्र पूर्वोक्तेनैव वर्त्मना ॥ ३९ ॥ नकीहुम्रे यदि स्यातां खण्डे प्रस्तारके खलु ॥ तदा जनसमूहेषु तस्करो वर्तते ध्रुवम् ॥४०॥

अर्थ—अब प्रत्यक्ष बैठेहुए जनसमूहका अन्यमत कहते हैं कि-रमल डालके देखै, पूर्वोक्त मार्गकरकें ॥ ३९ ॥ जो नकी और हुमरा शकल प्रस्तारमें होवे तो प्रत्यक्षके जनोंमें निश्चय चोर है ॥ ४० ॥

नो चेत्तदा नास्ति चौरो द्वयोर्मध्ये यदाऽस्ति चेत् ॥ एको बलयुतश्चेत्स्यात्तदा चौरोऽपि वर्तते ॥ ४१ ॥ निर्बले न च चौरः स्यात्तस्मिन् जनसमूहके ॥ एवं भागद्वयं कृत्वा जनानां च पृथक् पृथक् ॥ ४२ ॥

अर्थ—यदि वे दोनों नहीं हों तो चोर नहीं है. जो यदि इन दोनोंमेंसे एकभी कोईसी शकल बलयुक्त होके पड़ी हो तो चोर है ॥ ४१ ॥ जो निर्बल होके एकही पड़े तो तिन जनोंमें चोर नहीं है. इसप्रकारसे सब जनोंके दो भाग करके अलग २ बिठाके ॥ ४२ ॥

पूर्वोक्तेन मार्गेण पृथक् रम्लं च कारयेत् ॥ हुमरा च नकी खण्डे स्यातां यत्रैव तस्करः ॥ ४३ ॥ एवं पुनः पुनः कुर्याद्यावदेको भवेन्नरः ॥ अन्यं प्रकारं वक्ष्यामि येन चौरः स्फुटो भवेत् ॥ ४४ ॥

अर्थ—पूर्वोक्त मार्गकरके पृथक् २ एक २ समूहके नामका रमल डालै. जिस समूहके रमलमें हुमरा और नकी शकल प्रस्तारमें आजावे, उनही जनोंमें चोर है ॥ ४३ ॥ ऐसे वारंवार करता रहे. जबतक एक मनुष्य रहजावे तबतक करना. जिससे स्पष्ट (प्रत्यक्ष) चोर मालूम होवे ऐसा अन्य प्रकार कहते हैं ॥ ४४ ॥

सर्वेषां च जनानां तु स्वाग्रे पङ्क्तिं निवेशयेत् ॥ रमलं हि ततः कृत्वा प्रश्नं तत्र विलोकयेत् ॥ ४५ ॥ पञ्चमे च तथा षष्ठे सप्तमे शकलं भवेत् ॥ अब्जदस्य मतेनैव तेषां सङ्ख्यां विचारयेत् ॥ ४६ ॥

अर्थ—संपूर्ण जनोंकी पंक्ति अपने आगे विठावे फिर रमल डालके प्रश्न देखै ॥ ४५ ॥ पांचवें छठे सातवें घर जो शकल हो तिसके अंकोंकी संख्या अब्जदपंक्तिके मतकरके विचारै ॥ ४६ ॥

त्रयाणां च तदैक्यं च पङ्क्त्यां चौरजनोपरि ॥ तदङ्कं दापयेत्तत्र दक्षहस्तात्क्रमेण च ॥ ४७ ॥ यस्योंपर्यवसानं स्याच्चौरं तं निश्चितं वदेत् ॥ पुनस्सङ्ख्याऽधिकाङ्के तु प्रथमादिषु संक्षिपेत् ॥ ४८ ॥ एवं बहुप्रकारेण तस्करस्य विनिर्णयः ॥ कथितश्च मया सम्यक् दैवज्ञानां हिताय च ॥ ४९ ॥

इति श्रीसनाढ्यकुलावतंसपरमसुखोपाध्यायकृते रम्लनवरत्ने चौरादीनां कथनं नामाष्टमं रत्नं समाप्तम् ॥ ८ ॥

अर्थ—इन तीनों शकलोंकी संख्याका जोड करले. पीछे पंक्तिमें चोरजनोंके ऊपर तिस अंकको अपने दहिने हाथके क्रमसे देवै ॥ ४७ ॥ जिसके ऊपर अंक पूरा होवे उसीको निश्चय चोर कहै. जो यदि पंक्तिविषे अधिक मनुष्य नहीं हों किंतु संख्याका अंकही अधिक हो, तो फिर पहले आदि मनुष्यसे गिनने लगे ॥ ४८ ॥ ऐसे मैंने बहुत प्रकारोंसे चोरका निर्णय अच्छे विधानसें दैवज्ञ (ज्योतिषियों) के हितके वास्ते कहा है ॥ ४९ ॥

इति श्रीवेरीपुरनिवासिगौडवंशोद्भवद्विजशालग्रामात्मजबुधवसतिरामविरचितरम्ल-नवरत्नचन्द्रिकानामभाषाटीकायामष्टमं रत्नं समाप्तम् ॥ ८ ॥

अथ नवमरत्नम् । तत्र वर्षफलविचारः ।

सुस्नातो हर्षसंयुक्तः सुवेषः स्थिरमानसः ॥ स्वेष्टदेवं हृदि ध्यात्वा स्वगुरून्मनसा स्मरन् ॥ १ ॥ मन्त्रं पठेत्सप्तवारं मेषसायनगे रवौ ॥ दिनस्य पूर्वभागे द्वौ पाशकौ क्षेपयेत्सुधीः ॥ २ ॥

अर्थ—अब नवमा रत्न प्रारंभ होता है. तहां वर्षफलका विचार है. अच्छीतरहसे मंगल स्नान कर, हर्षसे युक्त हो, अच्छा वेष (वस्त्रादि धारण कर), स्थिरचित्तवाला होके अपने इष्टदेवको हृदयमें ध्याय, गुरुको मनसे स्मरण करता हुआ ॥ १ ॥ सात वार मंत्र पढै. सायनमेषकी संक्रांतिविषे दिनके पूर्वभागमें पंडितजन दोनों पाशोंको डालै ॥ २ ॥

समस्तजगदर्थं च पृथ्व्यां ये यत्र मानवाः ॥ तेषां च सुखदुःखेभ्यस्तथा देशसुखाय वै ॥ ३ ॥ अन्येषां मनुजानां च तद्दिने वाऽब्दवेशने ॥ दिने चान्यदिने शुभे वर्षस्य फलसिद्धये ॥ ४ ॥

अर्थ—समस्त जगत्‌के वास्ते और पृथ्वीपर जो मनुष्य जहां है तिनके सुखदुःखोंके वास्ते तथा देशमें सुखके अर्थ पाशे डालै ॥ ३ ॥ तथा अन्य मनुष्योंके वर्षप्रवेशके दिनमें अथवा अन्य शुभ दिनविषे वर्षफलकी सिद्धिके अर्थ ॥ ४ ॥

पाशकं पातयेत्तत्र प्रस्तारं कारयेद्बुधः ॥ द्विविधं फलमप्यत्र चिन्तयेद्दैववित्तमः ॥ ५ ॥ तत्रादौ मानवानां च वर्षजन्यं फलं ब्रुवे ॥ प्रस्तारे प्रथमात्खण्डाद्धयान्तं च फलं वदेत् ॥ ६ ॥

अर्थ—पाशे डालै और तहां पंडितजन प्रस्तार बनावे. यहां इस प्रकरणमें उत्तम दैवज्ञ दो प्रकारके फलको चिंतवन करै ॥ ५ ॥ तहां पहले मनुष्योंके वर्षका फल कहते हैं–प्रस्तारमें पहली शकलसे लेके बारहवींतक फल कहै ॥ ६ ॥

तनुधनादिभावानां शकलानां च योगतः ॥ शुभाशुभानां वशतः पुष्टिं हानिं च निर्दिशेत् ॥ ७ ॥ अशुभेऽपि स्वगेहे च शकुनस्य क्रमेण वै ॥ तदापि वृद्धिदं ज्ञेयं सबले च विशेषतः ॥ ८ ॥

अर्थ—तनु १ धन २ आदि बारह भावोंका फल तिन प्रथमादि बारह शकलोंके योगसे शुभाशुभके वशसे पुष्टि और हानिको कहै ॥ ७ ॥ जो यदि अशुभ भी हो और शकुनपंक्तिके क्रमकरके अपने घरकी हो तो वृद्धि देनेवाली है, बलवान् हो तो विशेष वृद्धिदायक है ॥ ८ ॥

तत्रापि खारिजादीनां खण्डानां च विचारतः ॥ खारिजे निर्गमेनैव दाखिले चागमेन च ॥ ९ ॥ खारिजेन समं ज्ञेयं मुन्कलीवे फलं बुधैः ॥ साबिते दाखिले तुल्यं फलं ज्ञेयं विचक्षणैः ॥ १० ॥

अर्थ—तहांभी खारिजआदि शकलोंके विचारसे कहै. खारिज हो तो निर्गम (दूर होना) फल, दाखिल हो उस घरका आगम (प्राप्तिका) फल कहना ॥९॥ मुन्कलीव शकलका फल खारिजके समान जानना और पंडित जनोंने साबित तथा दाखिल शकलमें समान फल जानना, अर्थात् जो दाखिलका फल है वही साबितकाभी है॥ १०॥

पुनरुक्तिः शुभे स्थाने तदा तस्य शुभं भवेत् ॥ अशुभे त्वशुभं ज्ञेयं मध्यमे चैव मध्यमम् ॥ ११ ॥ प्रथमादिगृहेभ्यश्च मासानपि विचिन्तयेत् ॥ प्रथमे प्रथमं मासं द्वितीये च द्वितीयकम् ॥ १२ ॥

अर्थ–जो शकल शुभघरमें पुनरुक्त (फिर पड़ी) हो तो उस घरका शुभ फल जानना. अशुभ घरमें पुनरुक्त हुई हो तो अशुभ, मध्यममें मध्यम फल कहना ॥ ११ ॥ पहिलेआदि बारहवेंतकके घरोंसे महिनोंकोभी विचारै. प्रथम घरमें पहिला महीना, दूसरे घरमें दूसरा महीना ॥ १२ ॥

एवं द्वादशगेहेभ्यो द्वादशानां फलं वदेत् ॥ शुभखण्डे शुभं ज्ञेयं पापखण्डे त्वनिष्टकम् ॥ १३ ॥ मासखण्डं शुभे गेहे पुनरुक्तं शुभं भवेत् ॥ अशुभे त्वशुभं प्रोक्तं मध्यमे मध्यमं तथा ॥ १४ ॥

अर्थ–ऐसे बारहघरोंसे बारह महीनोंके फलको कहै; जहां शुभ शकल हो तो उस घरका शुभ फल जानना; पाप (अशुभ) शकल हो तो अशुभ फल होय ॥ १३ ॥ महीनाकी शकल जो शुभ घरमें पुनरुक्त हुई हो तो शुभफल कहना, अशुभमें अशुभ और मध्यममें मध्यम फल कहना ॥ १४ ॥

खण्डाभ्यां शुभरूपाभ्यामुत्पन्नं च यदा भवेत् ॥ तदा शुभफलं ज्ञेयमन्यथा चाशुभं वदेत् ॥ १५ ॥ शुभाशुभाभ्यां मध्यं च फलं ज्ञेयं विचक्षणैः ॥ मासखण्डस्य तत्त्वस्य पुनरुक्तेः स्थलस्य च ॥१६॥

अर्थ—जो वही शकल शुभशकलोंसे उत्पन्न हुई हो तो शुभ फल कहना, अशुभोंसे हुई हो तो अशुभ फल कहै ॥१५॥ शुभअशुभसे भई हो तो मध्यम फल जानना. महीनाकी शकलके तत्वकी और वह जहां पुनरुक्त भई हो उस घरके ॥ १६ ॥

तत्त्वस्य च भवेन्मैत्री तदा सर्वं शुभं भवेत् ॥ खण्डस्य स्थानखण्डस्य मैत्री स्याच्चेत्तदा शुभम् ॥ १७ ॥ मासस्य

शकलं यत्र गेहे स्यात्पुनरुक्तकम् ॥ मासार्द्धगेहखण्डाभ्यां शुभं चेत्स्यात्तदा शुभम् ॥ १८ ॥

अर्थ—तत्वकी जो मित्रता होय तो संपूर्ण शुभ फल कहना, और मासशकलकी तथा स्थानखंड (जिस स्थानमें पड़ी हो उसी स्थानकी) शकुनपंक्तिकी मित्रता हो तो शुभ फल कहना ॥ १७ ॥ महीनाकी शकल जिस घरमें पुनरुक्त हुई हो उस घरकी शकल अर्थात् उस घरमें शकुनपंक्तिमें जो शकल हो तो उसकी और मासार्द्ध (महीनाकी शकलकी) एक शकल करै, फिर जो शुभ शकल हो तो शुभ फल कहना ॥ १८ ॥

अशुभे त्वशुभं ज्ञेयं प्रस्तारे यद्गृहे भवेत् ॥ तद्वशाच्च फलं ज्ञेयमुत्पन्नशकलस्य च ॥ १९ ॥ यस्य मासस्य साक्ष्यर्द्धं बलिष्ठं तत्सुखावहम् ॥ निर्बले त्वशुभं जातं शुभाभ्यां चेत्तदा शुभम् ॥ २० ॥

अर्थ—अशुभ हो तो अशुभ फल कहना और वही शकल प्रस्तारमें जिस घर पड़ी हो तो उसीके वशसे (संबंधसे) फल जानना. ऐसे उत्पन्न शकलका फल कहै ॥ १९॥ जिस महीनाकी शकलका साक्षी खंड बलवान् हो वही मास शुभदायक है. निर्बल साक्षी हो तो अशुभ फल कहना; जो यदि वह साक्षी शकल शुभ शकलोंसे भई हो तो शुभ फल कहना ॥ २० ॥

माससाक्ष्यर्द्धयोर्मैत्री तदा सर्वं शुभं वदेत् ॥ शत्रुत्वे त्वशुभं ज्ञेयमुदासीने च मध्यमम् ॥ २१ ॥ साक्षिखण्डं शुभे गेहे पुनरुक्तं यदा भवेत् ॥ तदा शुभफलं वाच्यमशुभे त्वशुभं वदेत् ॥ २२ ॥

अर्थ—मासशकल और साक्षीशकलकी मित्रता हो तो संपूर्ण शुभ फल कहना. जो शत्रुभाव हो तो अशुभ फल कहै. उदासीन (मध्यमपना) हो तो मध्यम फल कहै ॥ २१ ॥ जो यदि मासशकलकी साक्षीशकल शुभ घरमें पुनरुक्त भई हो तो शुभ फल कहना; अशुभ घरमें पुनरुक्त हो तो अशुभ कहना; जैसे मास ३ इसका साक्षी ५।६ हैं इन घरोंकी शकल शुभघर कहिये १।११।७।९।२ इन घरोंमें हो तो शुभ. ऐसे सब जगह बुद्धिसे विचारो ॥ २२ ॥

पुनरुक्तिस्थतत्वस्य साक्षिखण्डस्य चेद्द्वयोः॥ मैत्री चेच्छुभमादेश्यं शत्रुत्वे त्वशुभं वदेत्॥ २३॥ विचारो यस्य खण्डस्य तदीशस्य द्वितीयकम्॥ खण्डं तस्य शरीकं च साक्षिरीत्याफलं वदेत्॥ २४॥

अर्थ—जहां मासखंड पुनरुक्त भया हो उस घरके तत्वकी अर्थात् शकुन पंक्तिमें उस घरकी शकलके तत्वकी और साक्षीशकलकी दोनोंकी मित्रता हो तो शुभ फल होय, शत्रुता हो तो अशुभ फल कहै ॥ २३॥ जिस शकलका विचार हो तिसके स्वामीकी जो दूसरी शकल है वह उसकी शरीक (हकदार हिस्सेदार) है, उससेभी साक्षीकी रीतिसे सब फल कहना ॥ २४॥

खण्डस्य विपरीतं यत् खण्डं त्वस्याकशं भवेत्॥ तच्चेच्छुभं शुभस्थाने तदा सर्वं शुभं वदेत्॥२५॥ एवं मासफलं प्रोक्तमधुना प्रोच्यते फलम्॥ दशायाः सूक्ष्मरूपेण तदर्थं साबितं ब्रुवे॥ २६॥

अर्थ—और शकलका जो विपरीत खंड है जैसे लह्यान ≡ का अंकीश ≡ ऐसी शकल अकश (उसीका आभास) है; जो यदि वह शुभस्थानमें हो तो संपूर्ण शुभ फल कहना॥ २५॥ ऐसे मासफल कहदिया है. अब सूक्ष्मरूपकरके दशाका फल कहते हैं, तिसके वास्ते साबित प्रस्तार बनानेका क्रम कहते हैं॥ २६॥

पाशकोत्थस्य प्रस्ताराद्विश्वकर्मायशक्र १३।१०।११।१४। के॥ खण्डकेऽथ चतुर्भिश्च प्रस्तारं रचयेत्सुधीः॥ २७॥ आद्यं १ विश्वेन १३ तुल्यं स्याद्द्वितीयं २ दशमेन १० च॥ तृतीयं ३ लाभ ११ खण्डेन चतुर्थेन ४ चतुर्दशम् १४॥ २८॥

अर्थ—पाशोंसे बनायेहुए प्रस्तारके तेरह १३ दश १० ग्यारह ११ और चौदह १४ इन चार घरोंकी शकलोंसे पंडितजन प्रस्तार बनावे अर्थात् इनको १-२-३-४- की जगह रखके प्रस्तार बनावे॥ २७॥ फिर उस प्रस्तारमें पहली शकल तेरहवींकी तुल्य हो और दूसरी दशवींके तुल्य हो, तीसरी ग्यारहवींके तुल्य हो, चौथीके समान चौदहवीं हो तो॥ २८॥

तस्य साबितसंज्ञा स्यात् प्रस्तारस्येदृशस्य च॥ नोचेत्तदा पुनस्तस्माद्विश्वादिकचतुष्टयम्॥२९॥ स्थापयेत्प्रथमस्थाने तेभ्यः प्रस्तारमाचरेत्॥ एवं पुनः पुनः कुर्याद्यावन्न स्याच्च साबितम्॥३०॥

अर्थ—इस प्रकारवाले उस प्रस्तारकी सावित संज्ञा होती है. जो यदि यह शकल ऐसे न मिलती हो तो फिर उस प्रस्तारमेंसे तेरहवीं आदि चार शकलोंको ॥ २९ ॥ प्रथम आदि ४ चार स्थानोंमें स्थापित करै; फिर तिनसे प्रस्तार बनावे. ऐसेही वारंवार बनावे जबतक साबित नहीं हो तबतक ऐसेही तेरहवीं आदि चार शकलोंसे प्रस्तार बनाता रहे ॥ ३० ॥

प्रस्तारषट्काल्दूर्ध्वं तत्साबितं नैव गच्छति ॥ प्रथमे साबितं चेत्स्यात्तदा लाभसुखप्रदम् ॥ ३१ ॥ सुखं ज्ञेयं द्वितीयेऽपि धनं चैव तृतीयके ॥ मध्यमं स्याच्चतुर्थे च पञ्चमे कष्टदं भवेत् ॥ ३२ ॥ अतिकष्टकरं षष्ठे प्रस्तारे च यदा भवेत् ॥

अर्थ—यह साबित छह प्रस्तारोंसे अधिक नहीं चलता है, अर्थात् छहोंके मध्यमेंही होलेता है. जो यदि प्रथम प्रस्तारमें साबित हो जावे तो लाभ और सुखदायक है ॥ ३१ ॥ दूसरेमेंभी सुखही जानना, तीसरेमें धनकी प्राप्ति, चौथेमें मध्यम फल, पांचवेमें कष्ट करनेवाला कहै ॥ ३२ ॥ जो यदि छठे प्रस्तारमें साबित हो तो अत्यंत कष्टकारक है ॥

अथ दशान्तर्दशासाधनप्रकारमाह ।

स्थिरप्रस्तारकस्याङ्कसंख्याभिर्वर्षसम्मितिः ॥ ३३ ॥ भाजिता लब्धसंख्या स्यादशा साबितसंज्ञका ॥ सा दशा रविभि १२ भोज्या लब्धा सूक्ष्मदशा स्मृता ॥ ३४ ॥

अर्थ—फिर स्थिर प्रस्तार अर्थात् जिससे साबित बना हो उसकी संख्या करके वर्षमानके ३६० दिनोंसे भाग देवे. फिर लब्ध हुए अंकको साबित ॥ ३३ ॥ प्रस्तारोंकी दशा मानै, उस दशामें बारहका भाग देवै तब लब्ध हुए अंकप्रमाण सूक्ष्मदशा कहलाती है ॥ ३४ ॥

फलं त्वेकैकशकले दशा सूक्ष्मानुसारतः ॥ पूर्वोक्तेनैव मार्गेण मासखण्डस्य वर्त्मना ॥ ३५ ॥ आद्य प्रस्तारके ज्ञेयमाद्यस्यैव दशाफलम् ॥ द्वितीयस्य द्वितीये तु तृतीयस्य तृतीयके ॥ ३६ ॥

अर्थ—फिर एक २ शकलविषे सूक्ष्मदशाके अनुसार फल कहै. पूर्वोक्तही मार्गकरके, महीनाकी शकलके मार्गकरके ॥ ३५ ॥ पहले प्रस्तारमें तो पहली दशाका फल कहै; दूसरे प्रस्तारमें दूसरीका, तीसरेमें तीसरी दशाके फलको कहै; ऐसे क्रमसे दशा-

का फल कहै. यहां उदाहरण कहते हैं—जैसे चार संख्यामें साबित प्रस्तार बना हो तो ४ चारसे वर्षसंमिति ३६० में भाग दिया. लब्ध ९० हुये तो एक २ प्रस्तारमें नब्बे ९० दिनोंका फल कहना; ऐसे करनेसे चार प्रस्तारोंमें वर्षदिनका फल कहना. अथान्तर्दशाया उदाहरणं ॥ सा दशा इति--वह दशा कहिये ९० तिनकी दशा तिसमें १२ का भाग दिया तब ७।३० साढ़ेसात लब्ध भये; इसलिये एक २ शकलमें साढ़े ७॥ सात दिनका फल कहना, ऐसे करनेसे एक प्रस्तारकी बाहर शकलोंकरके नब्बे ९० दिनोंका फल कहना: ऐसे जो साबित बनाने समय प्रथम प्रस्तार कियाथा उस प्रस्तारसे पहली ९० दिनोंकी दशाका फल कहना, और दूसरे प्रस्तारसे दूसरी दशाका फल, ऐसेही जितनी संख्यापर साबित भया हो और वर्ष संमिति ३६० में भाग दिया हो उतनीही दशाओंका फल कहना. यहां छह दशासे अधिक दशा नहीं बन सकती हैं क्योंकि पहले कहा कि छह प्रस्तारोंके अंदर साबित प्रस्तार होजाता है. इस रमलके मतमें प्रथममास दशा मेषसंक्रांतिके दिनसे प्रवृत्त होती है. वर्षभी मेषकीही संक्रांतिसे सबोंको बताना. इति ॥ ३६ ॥

एवं दशाफलं वाच्यं प्रस्तारे साबितक्रमे ॥ साम्प्रतं फलसिद्ध्यर्थं द्वितीयो विधिरुच्यते ॥ ३७ ॥ मासखण्डदशार्द्धाभ्यां खण्डं जातं फलाह्वयम् ॥ तत्खण्डवशतो वाच्यं फलं सूक्ष्मं दशाख्यके ॥३८॥

अर्थ—ऐसे साबितक्रमसे बनाये हुए प्रस्तारमें दशाका फल कहना. अब फलकी सिद्धिकेवास्ते दूसरी विधि कहते हैं ॥ ३७ ॥ मासखंड और दशाके खंडकरके जो खंड उत्पन्न होवे उसको फलाव्हय (फल कहनेवाली) समझै. तिस खंडके वशसे सूक्ष्म दशामें फल कहै. " उदाहरण " जैसे पहले प्रथममासके पाशकोत्थ प्रस्तारमें कोई शकल हो, फिर तहां प्रथम अतंर्दशा देखनी हो तो प्रथम साबितकी शकल देखे, वहां जो शकल हों इनको एक करै उससे शुभाशुभ हाल कहै; यहां अनेक प्रस्तार बनते हैं उनके चक्र ग्रंथविस्तार होनेसे नहीं लिखे हैं. पीछे लिखेहुए अर्थसे ठीक २ समझो. यह उदाहरण प्रश्नस्कंदमें विशेषकरके लिखा है ॥ ३८ ॥

तच्चेच्छुभं शुभे गेहे पतितं बलसंयुतम् ॥ तदा शुभफलं वाच्यमन्यथा त्वशुभं वदेत् ॥ ३९ ॥ फलं गेहानुसारेण देहवित्ताद्यनुक्रमात् ॥ खारिजादिकमार्गेण सूक्ष्मदृष्ट्या विचारयेत् ॥ ४० ॥

अर्थ—वह शकल शुभ हो और शुभ घरमें पड़े तथा बलसे युक्त हो तो शुभ फल कहना और अशुभ हो तो अशुभ फल कहना ॥ ३९ ॥ पहले आदि घरोंके

अनुसार तनु १ धन २ आदि बारह भवनोंका अनुक्रमसे फल कहै. खारिज आदि मार्गकरके सूक्ष्मदृष्टिसे विचारै अर्थात् खारिज शकल हो तो घटना, दाखिल हो तो बढ़ना, यह सब पूर्वोक्त विचार करै ॥ ४० ॥

अथान्यत्सम्प्रवक्ष्यामि सामान्यं सर्वगोचरे ॥ तथा सर्वजनानां च फलं मासेऽह्नि वत्सरे ॥ ४१ ॥ समाश्रितो यदुद्देशः फलं तस्य च संवदेत् ॥ रमलं पातयेत्तत्र प्रस्तारं कारयेत्सुधीः ॥४२॥

अर्थ—अब संवत्का हाल तथा महीने २ का और वर्षके दिनोंका हाल देखनेकी विधि कहते हैं और अब सबको साधारण संवत्सरका, महीनोंका, दिनोंका हाल सब जनोंके फलको कहते हैं ॥ ४१ ॥ और इसही विधिसे जो कोई पूछे उसीके उद्देशसे उसकाभी वर्षभरका हाल कहै. पंडित जन रमल डालकर, प्रस्तार बतावे ॥ ४२ ॥

साबितं च पुनस्तस्य कुर्यात्पूर्वोदितक्रमात् ॥ साबिताच्चैव प्रस्तारात्प्रथमेन त्रयोदशम् ॥४३॥ गुणयेद्यत्समुत्पन्नं स्थापयेत्तत्पृथक्स्थले ॥ चतुर्थस्थेन खण्डेन गुणयेच्च चतुर्दशम् ॥४४॥

अर्थ—फिर उस प्रकारका पूर्वोक्त क्रमकरकें साबित करै. फिर साबितहुए प्रस्तारसे पहली शकलकरके तेरहवीं शकलको गुणै ॥ ४३ ॥ जो शकल उत्पन्न हो उसको अलग स्थापित करै और चौथे घरकी शकल करके चौदहवीं शकलको जर्ब करै ॥ ४४ ॥

तत्पृथक्स्थं पुनः स्थाप्य तिथिखण्डे नगेन च ॥ पृथक्स्थं दशमस्थेन षोडशं गुणयेत्तदा ॥ ४५ ॥ एवं चत्वारिखण्डानि तेभ्यः खण्डद्वयं कुरु ॥ द्वाभ्यामेकं समुत्पाद्य तस्माद्वर्षफलं वदेत् ॥ ४६ ॥

अर्थ—फिर उसकोभी अलग रक्खे; पंदरहवींको सातवींसे गुणै, अलग रक्खे; दशवीं शकलसे सोलहवीं शकलको गुणै ॥ ४५ ॥ ऐसे चार शकल बनावे फिर तिनसे दो शकल बनावे उन दोनोंसे एक बनाके तिससे वर्षका हाल कहै ॥ ४६ ॥

अथ मासफलम् ।

यदि मासफलानां च ज्ञातुमिच्छास्ति चेत्तदा ॥ प्रस्तारात्साबिताद्यानि चत्वारि शकलानि वै ॥ ४७ ॥

तेभ्यः प्रस्तारकं कुर्य्यात्तस्मात्पूर्वोक्तवर्त्मना ॥ कुर्य्याच्चत्वारि खण्डानि तेभ्यः खण्डद्वयं तथा ॥ ४८ ॥

अर्थ--अब महीनोंका फल कहते हैं जो यदि महीनोंके फलके जानेनेकी इच्छा हो तो सावित प्रस्तारसे जो चार शकलें की हैं ॥ ४७ ॥ तिन चारोंसे प्रस्तार बनावे. पीछे पूर्वोक्त मार्गकरके १ से १३ । ४ से १४ । ७ से १५ । और १० से १६ को गुनै, चार शकल करै. इस क्रमकरके चार शकल बनावे. तिनसे दो शकल बनावे ॥ ४८ ॥

द्वाभ्यामेकं च तत्खण्डं ज्ञेयं प्रथममासकम् ॥ आद्यमासस्य प्रस्तारात्खण्डं मासद्वितीयकम् ॥ ४९ ॥ द्वितीयाच्च तृतीयं तु तृतीयाच्च चतुर्थकम् ॥ एवं द्वादशमासानां खण्डानि रचयेत्सुधीः ॥ ५० ॥

अर्थ--तिन दोनोंकी एक बनावे, उसको प्रथम मासकी शकल जानके, शुभाशुभ फल कहै; फिर मासप्रस्तारकी पहली शकलको उस खंडसे गुन ले जो शकल हो उसीसे दूसरे महीनेका फल कहै ॥ ४९ ॥ दूसरी शकलसे गुनके तीसरे महीनेका, तीसरीसे गुनके चौथेका फल कहै, ऐसे बारह महीनोंकी शकलोंको पंडितजन रचै ॥ ५० ॥

तेभ्यः फलं च मासानां वक्ष्यमाणं वदेद्बुधः ॥ यदि प्रतिदिने ज्ञातुं फलेच्छा चेत्तदा शृणु ॥ ५१ ॥ आद्यमासस्य प्रस्ताराज्जातं खण्डचतुष्टयम् ॥ पूर्वोक्तेनैव मार्गेण तेभ्यः प्रस्तारकं कुरु ॥ ५२ ॥

अर्थ--तिनसे महीनोंका वक्ष्यमाण (जो आगे कहा जावेगा) सो फल कहै. जो यदि-दिन जाननेकी इच्छा हो तो सुनो ॥ ५१ ॥ पहले महीनेके प्रस्तारसे पूर्वोक्तमार्गकरके चार शकल बनालेवे फिर तिनसे प्रस्तार करै ॥ ५२ ॥

आद्यमासदिनस्यैष प्रकारः कथितो बुधैः ॥ तस्मात्पूर्वोक्तमार्गेण खण्डमेकं च साधयेत् ॥५३॥ तत्खंडं तद्दिनस्यैव ज्ञेयं

तस्मात्फलं वदेत् ॥ प्रथमाच्च द्वितीयस्य तृतीयस्य द्वितीयकात् ॥ ५४ ॥

अर्थ--पंडित जनोंनें पहले महीनेके दिनका यह प्रकार कहा है, कि-तिस प्रस्तार-मेंसे पूर्वोक्त मासकी शकल निकालनेकी तरह एक शकल बनावे ॥ ५३ ॥ वह शकल उसी दिनकी (पहिले महीनेके प्रथम दिनकी) है तिससे फल कहै. उसके योगसे (प्रस्तारकी प्रथम शकलसे) गुनके दूसरें दिनका फल कहै; दूसरीसे तीसरे दिनका ॥ ५४ ॥

तृतीयाच्च चतुर्थस्याप्येवं कुर्य्यान्निरन्तरम् ॥ त्रिंशत्संख्यं प्रतिदिने मासे च प्रथमे फलम् ॥ ५५ ॥ एवं द्वितीयमासाच्च दिनानि च द्वितीयके॥ तृतीयाच्च तृतीयस्य दिनानां फलमीरयेत् ॥५६॥

अर्थ—तीसरीसे चौथे दिनका; ऐसे निरंतर करै. प्रथम महीनेमें तीस ३० दिनोंका फल कहै; ऐसे दो आवृत्ति करनेसे तीस दिन होंगे ॥ ५५ ॥ ऐसेही दूसरे महीनेके दिन दूसरी शकलके क्रमसे कहने लगै. तीसरी शकलसे प्रथम आदि दिनोंका फल कहने लगै ॥ ५६ ॥

एवं द्वादशमासेषु दिनानां शकलानि च ॥ कार्याणि च फ-लान्येभ्यो वक्ष्ये खण्डानुसारतः ॥ ५७ ॥ लह्यानं यदि खण्डं स्यात् फलं तस्य वदाम्यहम् ॥ पूर्वशास्त्रानुसारेण स्वबुद्धेः कौशलेन च ॥ ५८ ॥

अर्थ—ऐसे इस प्रकारके बारह महीनोंविषे दिनोंकी शकल करलेनी चाहिये. फिर जैसी शकल आवे उसही शकलके अनुसार फल कहैंगे, अर्थात् अब लह्यान आदि १६ शकलोंका फल कहते हैं-वर्ष, मास, दिन इन सबोंमें जानों ॥ ५७ ॥ जो यदि लह्यान शकल हो तो उसका फल पूर्वशास्त्रोंके अनुसार और अपनी बुद्धिकी चतुराईसे कहते हैं ॥ ५८ ॥

जनाः कुशलिनः सर्वे शुभकर्मरताः सदा ॥ कृष्यान्नस्य समृद्धिः स्यादीतेः स्वल्पभयं भवेत् ॥ ५९ ॥ चतुष्पदां च दासानां किंचित्कष्टं भवेद्ध्रुवम् ॥ फलमीशानदिक्स्थानां देशानां कूर्मरूपतः ॥ ६० ॥

अर्थ––सब जन सुखी रहैं, शुभकर्ममें रत रहैं; खेतीमें अन्न पढ़ैं; कछुक टीड़ी-आदिकोंका भय हो ॥ ५९ ॥ चौपाये पशुओंको तथा दासोंको कछु कष्ट होवे; कूर्मरूप चक्र बनाके दिक्साधन करके ईशान देशमें यह सब फल जानना ॥ ६० ॥

कब्जुद्दाखिलखण्डं तत्तदा तस्य फलं वदेत् ॥ व्यापारे बहुलाभः स्यात्पुण्ये चैव मतिर्भवेत् ॥ ६१ ॥ फलान्यमृततुल्यानि वृक्षे सन्ति बहूनि च ॥ भक्षणं च भवेत्तेषां लोकानां च सुखं भवेत् ॥ ६२ ॥

अर्थ—जो वहां कब्जुलदाखिल शकल हो तो उसका फल कहै कि—व्यापारमें बहुत लाभ होवें, पुण्यमें बुद्धि रहै ॥ ६१ ॥ वृक्षोंमें अमृतके समान बहुतसे उत्तम उत्तम फल लगैं, उनका खाना हो, लोगोंको सुख होवे ॥ ६२ ॥

पदार्थस्योत्तमस्यैव वृद्धिर्भवति भूयसी ॥ राजानः सुखरूपा स्युर्नीतिमार्गे रतास्तथा ॥ ६३ ॥ प्रजानां पालने प्रीतिः संसारस्य स्थितिर्भवेत् ॥ स्वास्थ्यं च निर्भयं पूर्वदिशि स्यात् कूर्मसाधनात् ॥ ६४ ॥

अर्थ—उत्तम पदार्थकी बहुतसी वृद्धि होवे; राजा लोग सुखी रहैं तथा नीतिमार्गमें रत रहैं ॥ ६३ ॥ प्रजाओंकी पालना करनेमें प्रीति रहै; संसारकी स्थिति रहै, सब लोग स्वस्थचित्त निर्भय रहैं; यह फल पूर्वोक्त कूर्मसाधनसे पूर्वदिशामें जानना ॥ ६४ ॥

कब्जुलखारिजखण्डं तत्तदा तस्य फलं ब्रुवे ॥ तदोद्विग्नमनाः सर्वजनो वृष्टिश्च भूरिशः ॥ ६५ ॥ चोष्णत्वमति ग्रीष्मर्तौ नृपास्त्वन्यायवर्तिनः ॥ गृहे गृहे च कलहो युद्धं चैव परस्परम् ॥ ६६ ॥

अर्थ—तहां कब्जुलखारिज हो तो उसका फल कहते हैं—तब सब जन उद्विग्न मनवाले रहें; वर्षा बहुतसी होवे ॥ ६५ ॥ ग्रीष्मऋतुमें अत्यंत गरमी पड़े; राजालोग अन्यायवर्ती होवें; घरघरमें कलह (टंटा) हो; आपसमें युद्ध होवे ॥ ६६ ॥

नीचानां प्रबलत्वं च चौरादीनां तथैव च ॥ जलाग्निभ्यो हि द्रव्यस्य नाशो भवति भूरिशः ॥ ६७ ॥ दंशकानां च वृद्धिः स्यादनायासान्मृतिर्भवेत् ॥ देशेषु नैर्ऋतस्थेषु फलं तत्र तथैव च ॥ ६८ ॥

अर्थ—नीचजन प्रबल होवें; चौरआदिक प्रबल होवें; जल, अग्नि, सर्प आदिकों-करके बहुतसे द्रव्योंका नुकसान (नाश) होवे ॥ ६७ ॥ दंशक (जहरी मक्खी मच्छर) सर्प कीटक आदिकोंकी वृद्धि होवे; अचानक मृत्यु होवे; तैसेही नैर्ऋतकोणमें यह सब फल जानना ॥ ६८ ॥

यदि तच्च जमातं स्यात्तदा तस्य फलं वदेत् ॥ सर्वेषां च पदार्थानां वृद्धिर्भवति भूयसी ॥ ६९ ॥ नीतिमार्गरताः सर्वे जनाश्च सुखसंयुताः ॥ किञ्चिच्छ्लेष्मविकारस्य भयं भवति देहिनाम् ॥ ७० ॥

अर्थ—जो यदि जमात हो तो उसका फल कहते हैं-संपूर्ण पदार्थोंकी बहुतसी वृद्धि होवे ॥ ६९ ॥ सब जन नीतिमार्गमें लगे रहैं; सुखसे युक्त रहैं कछुक कफके विकारका भय देहधारियोंको होवे ॥ ७० ॥

उत्तरस्थेषु देशेषु वरुणस्थे च गोचरे ॥ फलं तथैव विज्ञेयं जमातस्य स्मृतं बुधैः ॥ ७१ ॥ यदि तत्फरहा चेत्स्यात्फलं तस्य वदाम्यहम् ॥ धनानां च भवेद्वृद्धिर्मङ्गलं च गृहे गृहे ॥ ७२ ॥

अर्थ—पंडितजनोंने यह जमात शकलका फल कहा है तिसीप्रकारसें उत्तरके देशोंमें अथवा पश्चिम दिशामें जानना ॥ ७१ ॥ जो यदि वहां फरहा शकल हो तो उसका फल कहते हैं कि-धनोंकी वृद्धि होवे; घरघरमें मंगल होवे ॥ ७२ ॥

प्रजानां सुखवृद्धिः स्यान्महती सन्ततिर्भवेत् ॥ अन्नादीनां समर्घः स्यान्मध्ये मध्ये महर्घकम् ॥ ७३ ॥ नृपाणां बहुकार्यं च काले वृष्टिर्भवेत्किल ॥ रत्नपरीक्षकाणां च वृद्धिर्जारस्य वृद्धिता ॥ ७४ ॥

अर्थ—प्रजाकी सुखपूर्वक वृद्धि होवे; बहुतसे बालक पैदा होवे; अन्न आदिक सस्ते होवें; बीचबीचमें महिंगेभी होते रहै ॥ ७३ ॥ राजाओंके बहुतसे कार्य सिद्ध होवें, समयपर वर्षा होवें, रत्नकी परीक्षा करनेवाले जौंहरी लोगोंकी वृद्धि होवे, जार पुरुषोंकी वृद्धि होवें ॥ ७४ ॥

काबुले रूमदेशे च मिश्रदेशादिषु ध्रुवम् ॥ फलं तथैव विज्ञेयं तदुक्तं फरहाभिधे ॥ ७५ ॥ उक्ला स्याद्यदि तत्खण्डं तदा स्याच्च महर्घता ॥ जनानां बहवो रोगास्तथोद्विग्नमना नरः ॥ ७६ ॥

अर्थ—काबुल, रूम, मिश्र, इत्यादिक देशोंमें विशेष करके यह फरहा शकलका फल जानना ॥ ७५ ॥ जो उकला शकल हो तो अन्नादिक महिंगे होवें, मनुष्योंके बहुतसे रोग होवे और उद्विग्नमनवाले नर रहैं ॥ ७६ ॥

स्वल्पवृष्टिर्भवेत्तत्र बहुवातश्च जायते ॥ नृपाश्चान्यायनिरता दासादीनामुपद्रवः ॥७७॥ मध्यदेशस्य राजानो भवंति बलशालिनः ॥ मध्यदेशे फलं ज्ञेयं तथा पश्चिमदेशके ॥ ७८ ॥

अर्थ—थोड़ी वर्षा होवे, वायु बहुत चलै, राजालोग अन्यायमार्गमें रत होवें, दासआदिकोंके उपद्रव होवें ॥ ७७ ॥ मध्यदेशके राजे बलवंत होवें. यह सब फल मध्यदेशमें तथा पश्चिम देशमें जानना ॥ ७८ ॥

अङ्कीशं यदि तत्खण्डं फलं तस्य वदाम्यहम् ॥ वृष्टिः स्वल्पा तदा ज्ञेया चान्नस्यैव महर्घता ॥ ७९ ॥ जनानां बहुरोगाश्च काठिन्यं कार्यसिद्धये ॥ मेघाश्च बहवस्तत्र फलं तेषां न जायते ॥ ८० ॥

अर्थ—जो अंकीश शकल हो तो उसका फल कहते हैं-तहां स्वल्प वर्षा होवें, अन्न महिंगा होवें ॥ ७९ ॥ मनुष्योंको बहुतसे रोग होवें, लोगोंके कार्य सिद्ध होने दुर्लभ होजावे, मेघ बहुत होवें परंतु उनका फल (वर्षा) न हो ॥ ८० ॥

शत्रूणां कारणेनैवोद्वेगः स्याद्भूमिपालकान् ॥ श्रेष्ठानां च जनानां च बहुकष्टं प्रजायते ॥ ८१ ॥ कूर्मस्य पश्चिमे भागे

फलं सर्वं भवेत्किल ॥ अन्यदेशे समं ज्ञेयमङ्कीशस्य फलं बुधैः ॥ ८२ ॥

अर्थ—शत्रुओंके कारणसे राजा लोगोंको उद्वेग होवे, श्रेष्ठजनोंको बहुत कष्ट होवे ॥ ८१ ॥ कूर्मसाधनसे अर्थात् प्रश्नस्थानके दिक्साधनसे पश्चिमभागमें यह संपूर्ण फल जानना. अन्य देशमें सामान्य फल होवे; पंडित जनोंने ऐसा फल अंकीश शकलका जानना ॥ ८२ ॥

हुमरा यदि तत्खण्डं भवेत्तस्य फलं ब्रुवे ॥ स्वल्पवृष्टिर्भवेत्तत्र वाताधिक्यं तथा किल ॥ ८३ ॥ प्रवर्तन्ते तदा चौराः प्रबला निर्भयास्तथा ॥ अन्यायमार्गगन्तारो भूपा लोकेष्ववीर्यता ॥ ८४ ॥

अर्थ—जो हुमरा शकल हो तो उसका फल कहते हैं—तहां स्वल्प वर्षा होवे, वायु बहुत चले, चोर प्रबल तथा निर्भय होके चोरीमे प्रवृत्त होवें, राजे अन्यायमार्गमें चलने लगें, संसारमें पराक्रम (वीर्य) न रहै ॥ ८३ ॥ ८४ ॥

चौरैर्धनं क्षयं याति जनानां च क्षयो भवेत् ॥ सर्वकार्येषु काठिन्यं जनानां च भवेद्ध्रुवम् ॥ ८५ ॥ लतावृक्षफलानां च वृद्धिर्भवति भूयसी ॥ जनानां बहुद्रव्याणां लाभश्चैव प्रजायते ॥ ८६ ॥

अर्थ—चोरोंकरके धन हरा जावे, मनुष्योंका क्षय होवे, मनुष्योंके सब कामोंमें काठिन्य (कठिनाई) होजावे ॥ ८५ ॥ लता वृक्ष व फल इनकी बहुतसी वृद्धि होवे, मनुष्योंको बहुतसे द्रव्योंका लाभ होवे ॥ ८६ ॥

हर्षवृद्धिर्भवेत्तत्र कारूकाश्च सुखान्विताः ॥ अग्निकोणस्थदेशानां फलं ज्ञेयं विचक्षणैः ॥ ८७ ॥ बयाजाख्यं भवेद्यत्र फलं तत्र वदाम्यहम् ॥ सिद्ध्यन्ति शुभकार्याणि पुरुषाणां प्रवासिनाम् ॥८८॥

अर्थ—हर्षकी वृद्धि होवे, कारूक (चटाई बनानेवाले) आदि किसबी लोग सुखसे युक्त होवे. यह फल पंडितजनोंने अग्निकोणके देशोंका जानना ॥ ८७ ॥ बयाज शकल हो तो उसका फल कहते हैं— परदेशमें रहनेवाले पुरुषोंके अच्छे अच्छे कार्य सिद्ध होवें ॥ ८८ ॥

प्रवासकरणे सिद्धिर्बहुवृष्टिश्च जायते ॥ मिष्टान्नभोजनं
चैव द्रव्याणां बहुवृद्धिता ॥ ८९ ॥ अन्नस्य बहुवृद्धिः
स्याद्राजानः सुखिनः सदा ॥ नीतिमार्गरता नित्यं
विद्याशास्त्रानुसारिणः ॥ ९० ॥

अर्थ—परदेशमें वास करनेमें सिद्ध होवे, बहुतसी वर्षा होवे, सब मीठा पदार्थ भोजन करैं, द्रव्योंकी बहुतसी वृद्धि होवें ॥ ८९ ॥ अन्नकी बहुतसी वृद्धि होवे, राजालोग सुखी होवें, सदा नीतिमार्गमें रत रहैं, नित्यप्रति सब लोग विद्या और शास्त्रके अनुसार रहैं ॥ ९० ॥

जलोपजीविनां वृद्धिर्लाभश्चैव भवेत्किल ॥ वायव्यदेश-
संस्थानां फलं कूर्मानुसारतः ॥९१॥ नुस्नुत्खारिजखंडस्य
फलं सम्यग्वदाम्यहम् ॥ वृष्टिः स्वल्पतरा ज्ञेया व्यापारे
हानिरेव च ॥ ९२ ॥

अर्थ—जलसे आजीविका करनेवाले पनहारे आदिकोंकी वृद्धि होवे, उनको लाभ होवे. यह सब फल कूर्मके साधनसे, वायव्यदेशमें रहनेवालोंको होगा ऐसे जानो ॥ ९१ ॥ नुस्नुत्खारिज शकलका फल कहते हैं कि–स्वल्प वर्षा होवे; व्यापारमें हानि होवे ॥ ९२ ॥

नृपदण्डभयं चैव तस्कराणां सुखं भवेत् ॥ अन्नादिकस्य मध्यत्वं
वायोश्चैव कठोरता ॥ ९३ ॥ जले मज्जन्ति नौकाश्च
जनानां च भयं भवेत् ॥ पूर्वदिक्स्थाश्च राजानो भवन्ति
बलशालिनः ॥ ९४ ॥

अर्थ—लोगोंको राजाके दंडका भय होवे, चोरोंको सुख होवे, अन्न आदिकोंका मध्यम समानभाव रहै, कठोर पवन चले ॥ ९३ ॥ जलमें नौका (नाव) आदि डूबै, मनुष्योंको भय होवे, पूर्वदिशाके राजे बलवाले होवे ॥ ९४ ॥

प्रजानां रोगवृद्धिः स्यान्नैशापुरनिवासिनाम् ॥ तथा
बोखारदेशानां सनस्कन्दनिवासिनाम् ॥९५॥ फलं हि

प्रबलं ज्ञेयमन्यदेशे तथाल्पकम् ॥ नुस्नुत्खारिजखण्डस्य फलं ज्ञेयं विचक्षणैः ॥ ९६ ॥

अर्थ—प्रजामें रोग बढ़ै, नैशापुरदेशवासी, तथा बोखारदेशनिवासी और सनस्कंद देशनिवासी जनोंका ॥ ९५ ॥ यह फल प्रबल (पूरा २) होगा; अन्यदेशमें स्वल्प फल होवेगा. पंडित जनोंनें यह नुस्नुत्खारिज शकलका फल जानना ॥ ९६ ॥

नुस्नुदाखिलखण्डं तत्फलं तस्य वदाम्यहम् ॥ जनानां सुखवृद्धिः स्यात्तथा हर्षाधिको भवेत् ॥ ९७ ॥ अन्नादीनां समर्घत्वं निर्भयत्वं जनेषु च ॥ राजानो नीतियुक्ताः स्युर्जनानां च धनं बहु ॥ ९८ ॥

अर्थ—जो नुस्नुदाखिल हो तो उसका फल कहते हैं कि--मनुष्योंको सुखकी वृद्धि होवे. हर्ष (आनंद) अधिक बढ़ै ॥ ९७ ॥ अन्न आदिक सस्ते होवें, जनोंमें निर्भयता रहै, राजालोग नीतिमें युक्त रहैं. मनुष्योंके बहुतसा धन होवे ॥ ९८ ॥

वृष्टिश्च सुखरूपा स्यात् काले काले प्रवर्षति ॥ तरवो मिष्टफलदा छायासौगन्धिकान्विताः ॥ ९९ ॥ कारूकाणां सुखं ज्ञेयं सर्वे धर्मरता जनाः ॥ राष्ट्रं च निर्भयं ज्ञेयं सस्यं वृद्धिसुखान्वितम् ॥ १०० ॥

अर्थ—सुख देनेवाली वर्षा होवे, समय २ पर मेघ वर्षैं, वृक्षोंके मीठे २ फल लगैं, अच्छी छाया और सुगंधिसे युक्त होवें ॥ ९९ ॥ कारूक (चटाई बनानेवाले) आदि किसबी लोगोंको सुख होवे, सब जन धर्ममें संयुक्त रहैं, राज्यमें निर्भयता रहे, खेतियां बढ़ैं, और सुखकी वृद्धि होवे ॥ १०० ॥

तुरुष्कस्थानदेशेषु तथा नैशापुरेषु च ॥ सनस्कन्दे भवेत्पूर्णं स्वल्पं स्यादन्यदेशके ॥ १०१ ॥ अतवेखारिजं खण्डं यदि स्यात्तत्फलं ब्रुवे ॥ सेवायां स्वल्पलाभः स्वदल्पवृष्टिर्भवेत्तदा ॥ १०२ ॥

अर्थ—तुरुष्कदेश, नैशापुरदेश, सनस्कंददेश इनमें यह फल पूर्ण होगा और

अन्य देशोंमें स्वल्प फल होगा ॥ १०१ ॥ जो यदि अतवेखारिज शकल हो तो उसका फल कहते हैं—सेवा करनेमें थोड़ा लाभ होवे, अल्प वर्षा होवे ॥ १०२ ॥

कूपे नद्यां स्वल्पजलं शीताधिक्यं तथोष्णता ॥ बहु वायुः प्रवहति जले नौका च मज्जति ॥ १०३ ॥ उष्णेनैव भवेद्रोगः कठिनश्चातिगर्हितः ॥ प्रजानामुपरि क्रोधो नृपस्य बहुलो भवेत् ॥ १०४ ॥

अर्थ—कूवाँ और नदी आदिकोंमें थोड़ा जल रह जावें, जाड़ेकी शीत ज्यादे परै, गरमीमें गरमी ज्यादे होवे, बहुत वायु चलै, जलमें नौका डूब जावे ॥ १०३ ॥ गरमीसे कठोर और अत्यंत निंदित (हैजा आदि) रोग होवे, राजाका कोप प्रजापर बहुतसा होवे ॥ १०४ ॥

बहून्युपद्रवाणि स्युर्देशे ग्रामे परेषु च ॥ मध्यदेशे विशेषेण व्याघ्रादीनां भयं भवेत् ॥ १०५ ॥ नकीखण्डं भवेत्तच्च फलं तस्य वदाम्यहम् ॥ स्वल्पवृष्टिर्भवेत्तत्र परन्तु बहुशब्दकृत् ॥ १०६ ॥

अर्थ—देश ग्राम पुरोंमें बहुतसे उपद्रव होवें, मध्यदेशमें विशेषकरके व्याघ्रआदिकोंका भय होवे ॥ १०५ ॥ जो नकीशकल हो तो उसका फल कहते हैं—तहां स्वल्प वर्षा होवे, परंतु शब्द बहुत करै, अर्थात् गर्जनेका शब्द बहुत होवे ॥ १०६ ॥

विद्युत्पाताशनीनां च भयं तत्र प्रजायते ॥ चौरादयो वधकराः प्रजायन्ते त्वनल्पकाः ॥ १०७ ॥ स्वास्थ्याभावो नराणां च नैराश्यस्याभिवृद्धिता ॥ अन्नादीनां महर्घं स्यादनीतिज्ञा नृपाः खलु ॥ १०८ ॥

अर्थ—बिजली वज्र पडनेका भय हो, बहुतसे (चोर आदि) जन मारनेवाले बढ़जावे ॥ १०७ ॥ मनुष्योंका चित्त स्वस्थ नहीं रहे, बहुतसे मनोरथ निराश (निष्फल) होवें. अन्न आदिक महींगे होवें, राजे नीतिके अनुसार नहीं चलैं ॥ १०८ ॥

नृपाणां शत्रुवृद्धिः स्यात्तेनोद्विग्नमना भवेत् ॥ तुरुष्कस्थानदेशेषु जङ्गवाले फलं त्विदम् ॥ १०९ ॥ अतवेदाखिलं

खण्डं यदि तत्र फलं वदेत् ॥ जनानामतिहर्षः स्याद्गेहे गेहे च मङ्गलम् ॥ ११० ॥

अर्थ—राजाओंके शत्रु बढ़ैं इस वास्ते राजालोग उद्विग्न मनवाले रहैं. यह फल तुरुष्क और जंगवाल (२) देशमें जानना ॥ १०९ ॥ तहां अतवेदाखिल शकल हो तो उसका फल कहते हैं—मनुष्योंके अत्यंत आनंद हो, घर २ में मंगल होवे ॥११०॥

बहुवृष्टिर्भवेत्तत्र मही चैकार्णवा भवेत् ॥ नृपा नीतियुतास्तत्र समर्घं च भवेत्किल ॥ १११ ॥ फलान्यमृततुल्यानि तरवः सुफलंति च ॥ धनानां बहुवृद्धिः स्याद्विवाहश्च गृहे गृहे ॥ ११२ ॥

अर्थ—बहुतसी वर्षा होवे, पृथ्वीपर जलही फैल जावे, राजालोग नीतिसे युक्त रहैं, निश्चय सुभिक्ष एक संवत्तक होवे ॥ १११ ॥ अमृतके समान मीठे २ फल लगें; वृक्ष अच्छीतरह फलैं, धनोंकी बहुत वृद्धि होवे, घर २ में विवाह होवें ॥ ११२ ॥

रूमदेशे तथा मासे फलं तत्र विशेषतः ॥ खण्डमिज्जतमाख्यं चेद्यदि तत्र फलं शृणु ॥ ११३ ॥ जनानां चातिहर्षः स्याच्छुभकर्मरुचिस्तथा ॥ लेख्यकर्मरतानां चाऽमात्यानामतिवृद्धिकृत् ॥ ११४ ॥

अर्थ—यह फल विशेषकरके रूमदेशमें और सामदेशमें होवे, जो तहां इज्जतमा शकल होवे तो उसका फल सुनो ॥ ११३ ॥ मनुष्योंके अत्यंत हर्ष होवे; अच्छे काममें रुचि होवे; लिखाईका काम करनेवालेकी तथा दीवान (मंत्री) आदिकोंकी वृद्धि होवे ॥ ११४ ॥

भूपतीनां च साम्यं स्यात्स्वधीनानां च कष्टकृत् ॥
सुगन्धिद्रव्यस्य तथा रत्नानामतिवृद्धिता ॥ ११५ ॥
अन्नादीनां समर्घं स्याज्जनानां द्रव्यलाभकृत् ॥
उत्तरदिक्स्थदेशेषु विशेषेण फलं वदेत् ॥ ११६ ॥

अर्थ—राजाओंको समान फल रहै. (स्वाधीन) मुनि, तपस्वी लोगोंको कष्ट होवे. सुगंधित द्रव्य तथा रत्नआदिकोंकी अत्यंत वृद्धि होवे ॥ ११५ ॥ अन्न आदिक सस्ते होवें. मनुष्योंको द्रव्यका लाभ होवे, यह विशेषकरके उत्तरदिशाके देशोंमें कहना ॥ ११६ ॥

तरिखा यदि तत्खण्डं फलं तस्य वदाम्यहम् ॥ पूर्वदेशे महावृष्टिर्वायुरपि च तादृशः ॥ ११७ ॥ जनाः सर्वत्र दुष्टाः स्युः पिशुनानां च लाभकृत् ॥ दूतानामनृतयुजां वृद्धिर्भवति निश्चितम् ॥ ११८ ॥

अर्थ—जो तरिखा शकल हो तो उसका फल कहते हैं— पूर्व देशमें बहुत वर्षा होवे, वायुभी बहुत चलै ॥ ११७ ॥ सब जगह दुष्टजन फैलजावें, पिशुन [चुगलखोर] लोगोंको लाभ होवे, दूतोंकी तथा झूठ बोलनेवालोंकी निश्चय वृद्धि होवे ॥ ११८ ॥

भूमिकम्पो भवेच्चापि गणकानां च वृद्धिकृत् ॥ फलं वायव्यादिग्भागे विशेषेण प्रजायते ॥ ११९ ॥ मया संवत्सरस्येदं फलं सम्यक् प्रकीर्तितम् ॥ पूर्वाचार्यानुसारेण स्वबुद्धेः कौशलादपि ॥१२०॥

अर्थ—भूकंप (भौंचाल) होवे, गणक (ज्योतिषी) लोगोंकी वृद्धि होवे, यह फल विशेष करके वायव्यदिशामें होता है ॥११९॥ मैंने यह संवत्का फल अच्छे प्रकार करके पूर्व आचार्योंके अनुसार और अपनी बुद्धिकी निपुणतासे कहा है ॥ १२० ॥

एवं प्रोक्तं रम्लशास्त्रस्य सारं सर्वेषां वै ब्राह्मणानां हितार्थम् ॥ स्वल्पं सौम्यं शीघ्रबोधं त्वलभ्यं तस्माद्विज्ञै रक्षणीयं प्रयत्नात् ॥ १२१ ॥ रम्लाम्भोधेर्हि यत्सारं सारात्सारतरं मया ॥ नवरत्न-स्वरूपेण घनीकृत्य प्रकीर्तितम् ॥ १२२ ॥

अर्थ—ऐसे संपूर्ण ब्राह्मणोंके हितके वास्ते रम्लशास्त्रका साररूप यह कहा है. यह स्वल्प है, शुभ है, शीघ्र बोध करनेवाला है और दुर्लभ है, इसलिये विद्वानोंने यत्नसे इसकी रक्षा करनी चाहिये ॥ १२१ ॥ रम्लार्णव (रम्लरूपी समुद्रका) जो सार है वह मैंने नवरत्नरूपसे संचित करके सारसेभी सार कहा है ॥ १२२ ॥

नवरत्नस्य रक्षार्थे परमाद्यसुखाभिधः ॥ प्रार्थये सर्वविदुषां क्षमध्वं मेऽपराधकम् ॥१२३॥ यद्यत्र कुकृतं वा स्यादधिकं यत्र कुत्रचित् ॥ रागमुत्सृज्य तत्सर्वं निर्मलं कुरुतादरात् ॥ १२४ ॥

अर्थ—नवरत्नकी रक्षाके वास्ते परमसुख नामक (ग्रंथकर्त्ता) मैं संपूर्ण विद्वानोंकी

प्रार्थना करता हूं कि—मेरे अपराधको क्षमा करो ॥ १२३ ॥ जो इस ग्रंथमें कहीं भूलचूक रहगई हो अथवा कछु ज्यादै हो उसको ईर्षा त्यागके आदरसे शुद्ध करो ॥ १२४ ॥

नगरसवसुचन्द्रे १८६७ वत्सरे वैक्रमीये त्रितयतिथिसचन्द्रे फाल्गुने शुक्लपक्षे ॥ कृतमिह परिपूर्णं क्ष्माधराणां[1] बुधानां हितमपि गिरिलक्षेर्वाटिकायां शिवाढयम् ॥ १२५ ॥ सीतारामस्य पुत्रेणानूपादेव्याः सुतेन च ॥ परमसुखेन शिष्यार्थं ग्रथितं नवरत्नकम् ॥ १२६ ॥

अर्थ—नग कहिये ७ रस ६ वसु ८ चंद्र १ [ऐसे प्रमित] अर्थात् १८६७ के विक्रमसंवत्में फाल्गुन महीनेमें शुक्लपक्षमें सोमवारी तृतीया तिथिके दिन यह शिवाढय (कल्याणयुक्त) ग्रंथ " गिरिलक्षि " नामक साधुआदिके बगीचामें समाप्त किया है; यह ग्रंथ राजोंआको तथा पंडितोंको हित (सुख) देनेवाला है ॥ १२५ ॥ सीतारामके और अनूपादेवीके पुत्र परमसुखने यह नवरत्नग्रंथ शिष्योंके वास्ते वनाया है ॥ १२६ ॥

इति श्रीसनाढयकुलावतंसपरमसुखोपाध्यायकृत रमलनवरत्ने वर्षफलकथनं नाम नवमं रत्नं समाप्तम् ॥ शुभम् ॥

इति श्रीवेरीपुरनिवासिगौडवंशोद्भवद्विजशालग्रामात्मजपंडितवसतिरामशास्त्रीविरचितनवरत्नचंद्रिकानामभाषाटीकायां नवमं रत्नं समाप्तम् ॥ समाप्तोऽयं ग्रन्थः ॥

नवयुगनवचन्द्रे वत्सरे वैक्रमीये शुचिसितवसुतिथ्यां वासरे सूर्यपुत्रे ॥ बदरिपुरनिवासिब्रह्मवंशोद्भवेन वसतियुतरमेशाख्येन टीका कृतेयम् ॥ १ ॥ ॥ शुभम् ॥ ॥

संवत् १९४९ आषाढ शुक्लअष्टम्यां ८ शनिदिने समाप्तिमगात् ॥ १ ॥

नभोवाणाङ्कचन्द्रेऽब्दे ज्येष्ठे मासि सिते दले ॥
शोधितं रामभद्रेण नवम्यां सौम्यवासरे ॥ १ ॥
संवत् १९५० ज्येष्ठशुक्ल ९ बुधवार.

---

१ " राजा राट् पार्थिवः क्ष्माभृत् इत्यमरः " क्ष्माधरशब्दः क्ष्माभृच्छब्दस्य पर्यायः ।

श्रीः

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ

रमलदानियाल भाषावार्तिक

अथ कार्यावधिप्रश्न १—

कोई पूछे कि—मेरा काम कितने दिनोंमें और किस वारमें होगा ? तब सोलह १६ शकल निकाले. पहिली और पांचवींको जर्ब करे; दूजी २ और छठी ६ को जर्ब करै. ३—७ को जर्ब करै. ४—८ को जर्ब करै. ऐसे इन्किलाव करै. ऐसे ४ शकल निकालके इनसे सोलह शकल बनावे. फिर इनपर अमल करै. १४ घरकी शकलको देखै. उसके नीचे जितने अंक हों उतनेही दिनमें और उसही शकलके स्वामीके वारको कार्य होगा. जैसे १४ वें घर लह्यान ≐ हो तो ९ नव दिनमें और बृहस्पतिवारको कार्य होवे, ऐसे सब कहना इति० १—

धनका प्रश्न २—। कोई पूछे मेरे धन होगा ? कि नहीं ? तों इस प्रश्नको दूसरे घरमें विचारै. तहां प्रस्तारमें १—२—११—ये शकलैं शुभ हों तो धन होगा, अशुभ हो तों नहीं होगा. तहां ⁝ ≐ ≡ ⩦ ⩧ ⁝ ⩧ ये शुभ और ⩦ ⩦ ⩧ ⩦ ÷ ये अशुभ शकल हैं. बाकी अन्य सब शकलोंको शकुनपंक्तिचक्रमें देखना और आगे इनके शुभाशुभभी लिखैंगे. इति० २—

प्रश्न—और पूछे कि—निकट (नज्दीक) जाताहूं सो शुभ है ? या अशुभ है ? इस प्रश्नको ३ घरसे विचारै. ३ घरमें शुभ शकल हो तो शुभ फल कहै, अशुभ हो तो अशुभ फल कहै, साबित शकल हो तो वहांसे उलटा चला आवेगा यह कहो. इति० ३—

प्रश्न—कोई पूछै कि—मेरी अवस्था अबसे आगे कैसी बीतेगी ? तहां १—२—९ इन घरोंसे विचारै. तहां शुभ दाखिल ⩧ ⩧ ⁝ ये शकल आवें तो अच्छी गुजरेगी और खारिज ⩦ ⩦ ≐ ⁝ ये हों तो अच्छी नहीं गुजरेगी. शुभ साबित आवे तो जैसी पीछे गुजरी वैसीही गुजरेगी. जो यदि मुन्कलीव आवे तो खुशवखतसे गुजरेगी. दूसरा प्रकार यह है कि—१२ वें घरको विचारै. शुभ हो तो अभी अच्छी बीतती है, आगेभी भली बीतेगी; अशुभ हों तो आगे बुरी बीतेगी. कोई पूछे कि-मेरी गुजरान कैसी भई ? और आगे कैसी होगी ? तहां १—४ शकलको जर्ब करै, ७—१० को जर्ब

करै, इनसे शुभ शकल बने तो शुभ, अच्छी गुजरी हो तो बुरी नाकिस गुजरी है; जो यदि ये दोनों विपरीत हों अर्थात् एक शुभ और एक अशुभ हो तो मध्यम गुजरी कहै. फिर १-४-से उपजी और ७-१० शकलसे उत्पन्न हुई शकलसे शकलको जर्ब करके एक बना लेवें, अशुभ हो तो बुरी गुजरेगी. और शुभ हो तो अच्छी गुजरेगी; मध्यम हो तो मध्यमही गुजरेगी. इति० ४-

प्रश्न—कोई पूछे मेरा भाई मुझपर खुशी है या नहीं? तहां तीसरे घरको विचारै. जो यदि दाखिल शकल ⩦ ⫧ ⩶ ⩦ ये हों तो भाईका प्यार बहुत है. और यदि खारिज अर्थात् ÷ ≑ ⩮ ये खारिज शकल हों तो प्यार नहीं. दुसमनाई है; जो सावित शकल हो तो कछु ऊपरसे प्यार रखता है; लोगोंको दिखानेके वास्ते हल्ला भल्ला करता है. जो मुन्कलीव हो तो लोगोंके भयसे प्यार किया चाहता है. दिलमें प्यार नहीं है ऐसे कहो. और इन सबोंको शुभाशुभ देखकेभी विशेष वा कम हाल कहना. इति० ५-

प्रश्न—कोई कहैं कि, मैं जिस औरत (स्त्री) से विवाह कराया चाहता हूं वह कैसी है तहां सातवें घरको विचारै. जो ⁝ ⩦ ⫧ ÷ ये शकल हों तो पतिव्रता है. यदि ÷ ≑ ⩦ ÷ इनमेंसे हो तो वह औरत कलहकारिणी और व्यभिचारिणी है, दुःखदायिनी है, जो इनसे बची हुई अन्य कोई शकल हो तो स्त्रीजार (छिनाल) है; वतानमें मीठी है. इति० ६—

प्रश्न—कोई पूछे कि, मेरी वस्तु खो गई है. सो मिलेगी या नहीं? तहां रमल डालै प्रस्तार बनाके, सोलह शकल निकालै फिर सातवीं शकलको देखै तहां दाखिल शकलोंमेंसे कोई शकल हो तो शीघ्रही पावे; और खारिज हो तो नहीं पावें. मुन्किलीव हो तो कछुक पता लगे; पावे नहीं. शुभ सावित हो तो विलंबसे पावे. अशुभ हो तो नहीं पावे. इति० ७—

प्रश्न—कोई पूछे वर्षा वर्षेगी या नहीं? तहां प्रस्तार बनाके, पांचवीं और सोलहवीं शकलकी एक शकल निकालै. जो यदि दाखिल हों तो वर्षा बहुत होवें. ≣ जमात हो तो नदी बहुत चढ़े ÷ यह शकल हो तो बादल अवर बहुत रहै. ⩦ यह हो तो मेह अँधेरी घटा बहुत हो वर्षा थोड़ी हो; ⩶ यह हो तो वायुही चले वर्षा न हो, ⩶ यह शकल हो तो गरम लाली कसीरी वायु आवे, जो ⫧ बयाज हो तो मेह थोड़ा और वायु बहुत चलै. ⁝ यह तरिखा शकल हो तो मेह बहुत टल टल जाय और खारिजसंज्ञक शकल होय तो वर्षा बहुत टल टल जाय, यहां जलतत्वकी शुभशकलका होना अच्छा है. इति० ८-

प्रश्न—जो कोई पूछे, अन्न [अनाज] महंगा होगा ? या सस्ता होगा ? तहां प्रस्तार बनाके, सोलह शकल निकालै. फिर, पहली और १० वीं शकलको जर्ब करै, दूसरी और ११ ग्यारहवीं शकलको जर्ब करै, पाचवीं और ९ को जर्ब करै, सातवीं और १२ को जर्ब करै, ऐसे चार शकल निकालै. पीछे इन चारोंसे सोलह शकल बनावे. पीछे इस प्रकारका इन्किलाव बनाके तीसरे चार शकल निकालै फिर तिनकी एक शकल बनावे, जो यदि वह शकल आतसी अर्थात् अग्नितत्वकी हो तो अन्न महंगा होवे, पृथ्वी तत्वकी हो तो थोडा महंगा, वादी अर्थात् बायुकी हो तो मध्यम भाव. जल तत्वकी हो तो बहुत सस्ता होवे. इति० ९—

प्रश्न—मेरा वाप तुझे कैसा चाहता है ? तहां प्रस्तार करके चौथे घरको विचारै. यदि ४ चौथे घरमें शुभ दाखिल शकल हो तो बहुत प्यार रखता है, सावित हो तो मध्यम प्यार है; खारिज हो तो प्यार नहीं है; मुन्कलीव हो तो ऊपरसे प्यार दिखाता है. मनमें प्यार नहीं रखता है. इति० १०—

प्रश्न—मेरा रोजगार होगा कि नहीं ? तहां प्रस्तार बनाके, दूसरे घरको विचारै. जो दाखिल शकल आवे तो शीघ्रही रोजगार हाथ आवे; जो खारिज शकल आवे तो रोजगार नहीं होवे, सावित हो तो ढीलमें रोजगार होगा, मुन्कलीव हो तो ढीलमें थोडासा रोजगार होगा, अशुभ हो तो नहीं होगा, इन सभी शकलोंमें शुभाशुभ देखना. इति० ११—

प्रश्न—कोई पूछे कि-परदेशीकी खर्ची आवेगी कि नहीं ? तहां प्रस्तार बनाकै पांचवें घरको देखै. यदि ५ घरमें दाखिल ÷ ⩧ ⋮ ये शकल हों तो खरची आवेगी. परदेशी मनुष्य खुशी है. जो खारिज ∸ ≐ ⋮ ये शकल आवे तो खरच खबर कछु नहीं आवे. जो शुभ सावित आवे तो विलंबसे खरची आवे. मुन्कलीव आवे तो खर्ची नहीं आवे. खबरही आवेगी. इति० १२—

प्रश्न—मैं फलानेके पाससे कोई वस्तु मांगा चाहता हूं वह देगा या नहीं ? तहां प्रस्तार बनाके, छठी और दशवीं शकलको जर्ब करके, एक बनालेवे. फिर शुभ दाखिल आवे तो देवेगा, जो शुभ मुन्कलीव हो तो शीघ्रही देवेगा, जो अशुभ मुन्कलीव आवे तो देके फिर उलटी ले लेवेगा. अशुभ खारिज हो तो नहीं देवेगा. जो शुभ सावित हो तो ढीलसे देवेगा; जो शुभ खारिज हो तो दिलासा करेगा देवेगा नहीं. इति० १३—

१-५ से २-६ से ३-७ से ४-८ से जर्ब करके ४ शकल निकालै. इसे इन्किलाव कहते हैं.

प्रश्न—कोई पूछे—माशूक (प्रियजन) हाथ आवे ? या न आवे ? और परदेशीकी खबर सच्ची है, या झूंठी है ? और परदेशी आप आवेगा, या नहीं ? इन प्रश्नोंके पांचवें घरको विचारै. तहां ≡ ≐ ⋮ इनमेंसे कोई शकल होवे तो माशूक हाथ आवे और परदेशीकी खबर आवे जो कि पीछे खबर आईथी, सो सच्ची है. जो यदि ≡ ⋮ ≡ इनमेंसे कोई शकल आवे तो जहां था वहांही है. आवे नहीं, और माशूक कोई दिन हाथ नहीं आवे. जो यदि ÷ ≡ ÷ इनमें कोई शकल आवे तो परदेशी जीवता नहीं. और माशूक हाथ न आवे. खबर झूंठी है इनसे बाकी अन्यफलका आवे मिश्रित (मध्यम) फल बताना. इति० १४—

प्रश्न—गर्भवती बेटा जनेगी ? या बेटी जनेगी ? तहां रमल डाले सोलह शकल निकाले. पहिली और दशमीको जर्ब करै फिर छठी शकलसे जर्ब करै जो यदि ≐ ÷ ≐ ÷ ⋮ ≡ ÷ इनमेंसे आवे तो रूपवाले पुत्रको जनै. जो ≡ ÷ ÷ ⋮ ≡ ÷ ⋮ ≡ ÷ इनमेंसे आवे तो बेटी जनै. दूसरा प्रकार यह है कि—पहली और पांचवीं शकलको जर्ब करै. ६—७ को जर्ब करै. फिर इन दोनोंसे एक बनाके, उसे देखै. जो अग्नितत्व अथवा वायुतत्वकी हो तो बेटा जनेगी, जो पृथ्वी वा जलतत्व हो तो बेटी जनेगी. इति० १५—

प्रश्न—कोई पूछे कि—स्त्रीके गर्भ है, या नहीं ? तहां छठे घरको विचारै. जो दाखिल साबित हो तो गर्भ है. जो खारिज हो तो गर्भ नहीं. मुन्कलीव हो तो गर्भ है. परंतु ठहरना मुसकिल है. तहां ठहरनेका निश्चय ऐसे करे कि—तेरहवीं और सातवीं शकलको विचारै, दाखिल साबित हो तो रहै, खारिज मुन्कलीव हो तो न रहेगा. इति० १६—

प्रश्न—कोई पूछे कि—स्त्री सुखसे बालक जनेगी ? या दुःखसे ? तहां प्रस्तार बनाके छठे घरको देखै. जो यदि शुभ दाखिल हो अथवा शुभ खारिज हो तो सुखसे जनेगी. शुभ साबित आवे तो अजारसे, अशुभ खारिज आवे तो खतरा है. शुभ मुन्कलीव आवे तो सुखसे, अशुभ मुन्कलीव आवे तो दुःखसे जनेगी. इति० १७—

प्रश्न—कोई पूछे—स्त्रीके कितने महीनोंका गर्भ है ? तहां, बनाके पहली और ग्यारहवीं शकलको जर्ब करै. ५—६ को जर्ब करै. फिर इनसे उत्पन्न हुई दोनों शकलोंकी एक शकल बनाके उसके स्वामी गृहको विचारै. जो ÷ ≐ ये सूर्यकी शकल हो तो एक महीनेका गर्भ है. जो ÷ ⋮ ये शुक्रकी शकल हो तो तीन म-

हीनोंका है. जो मंगलकी ≡ ÷ हो तो ५ महीनोंका, जो बृहस्पतिकी हो तो ≡ ≡ छह महीनेका है, जो शनिकी ≡ ÷ हो तो ७ महीनेका है. राहुकी ÷ हो तो दश महीनेका है. बुधकी वा चंद्रमाकी शकल आवे तो ३-४ महीनोंका है. इति० १८—

प्रश्न—इस औरतके किस वारमें किस वखत बालक होगा ? इसे प्रस्तारके ग्यारहवें घरमें विचारै. जो सूर्यकी शकल आवे तो रविवारमें होगा. इसही प्रकार ११ घरमें जीस गृहकी शकल परै उसीका वार बतलाना. किस वखत जनेगी ? इस प्रश्नमें पहले घरको विचारै. जो तहां पहले घर ≡ ÷ ≡ ÷ ≡ ये शकल हों तो संध्यासमय अथवा अर्धरात्रिसमय जनेगी. ÷ ≡ ≡ ये आवे तो चढ़ते दिन अथवा दुपहरीपीछे जनेगी. ⁝ ≡ ये आवें तो सूर्योदय पर, जो ÷ ≡ यह आवें तो आधि रातके पीछे जनेगी; और शकुनपंक्तिचक्रमें जो रातदिनकी शकल कहीं हैं उनसे विचारके भी कहै. इति० १९—

प्रश्न—इस बालकको कौनसा दिन ? और कौनसा महीना वर्ष करड़ा (बुरा) है. तहां प्रस्तार वनाके ८ आठवीं शकलके (घरको) विचारै; तहां ≡ यह शकल हो तो ८ महीना वा वर्ष खराब है; ≡ यह आवे तो १४ दिन अथवा वर्ष माफिक है. जो ≡ यह आवे तो ३० दिन अथवा तीसवां वर्ष माफिक है; ≡ यह आवे तो ४० दिन अथवा ४० यही वर्ष भारी है. जो ≡ यह आवे तो १२ दिन अथवा १२ यही वर्ष भारी है. ≡ यह आवे तो सात ७ दिन अथवा सातवां वर्ष भारी है. ⁝ यह तो दो दिन अथवा दूसरा वर्ष भारी है; ≡ यह आवे तो पहला दिन अथवा पहला वर्ष भारी है. जो ÷ यह आवे तो ५० दिन अथवा पचासवां वर्ष भारी है. ÷ यह आवे तो ६ दिन अथवा छटा वर्ष भारी है. जो ÷ यह आवे तोभी ६ दिन अथवा छठा वर्ष भारी है, जो ≡ यह आवे तो ४० दिन अथवा चालीसवां वर्ष भारी है, जो ÷ यह हो तो २० दिन अथवा वीसवां वर्ष (भारी) माफिक है. ÷ यह हो तो ११ दिन वा ११ वर्ष भारी है. ÷ ⁝ ये होवें तो ४ वर्ष वा दिन भारी है. इति० २०—

प्रश्न—कोई पूछे कि-मेरा पशु अथवा (पक्षी) जानवर खोगया है सो मिलैगा ? कि नहीं ? तहां प्रस्तार बनाके २ दूसरे घरको विचारै. शुभ दाखिल आवे तो जल्दी पावे. अशुभ दाखिल आवे तो बहुत दिनोंमें पावे, खारिज हो तो न पावे. शुभ मुन्कलीब आवे तो खर्च लगके विलंब (देरी) में पावे. शुभ साबित आवे तो कछु थोड़ासा खर्च लगे, थोडेही दिनोंमे पावे. इति० २१—

प्रश्न—चोरकी सूरत कैसी है ? तहां प्रस्तार बनाके सातवें घरको देखै. जो यदि ⫶ यह आवे तो चार जरद रंग, गौर वर्ण है. मंद आदमी है. अच्छा दाढ़ी और बड़ी कद लंबा है. जो ⫶ कब्जुलदाखिल आवे तो गेहुंके रंग मध्यम कद और मध्यम वलवाला है. लंबी गरदन, गिरदा बड़े रोम इनसे युक्त है. जो ⫶ यह आवे तो सुरख रंग है; लंबा है, मुखपर स्याही है, हाथपर मस्सा या तिलका चिन्ह है, हाथमें छडी रखता है; शौक रखता है, टेढ़ा रहता है. जो ⫶ जमात आवे तो सांवला, छोटी गर्दनवाला, काली भ्रुकुटियोंवाला है. जो ⫶ फरहा आवे तो सुपेद रंग, खूबसूरत, लंबी या सम गर्दन, स्याह भौंह, और कलाँवत (गानेवाला) है, जो उकला ⫶ आवे तो छोटी गर्दनवाला आकीचोर (बहुत चोरी करनेवाला) कमीन जाति है; सुनार, लुहार, मनियार आदि है. जो ⫶ यह अंकीश आवे तो लंबा, मोठा, काला, लंबी गर्दनवाला है; नेत्रोंमें कछु निसानी है, दहिनी तर्फ पांवमें फोड़ा या चोट अथवा शस्त्रकी निसानी है, अधम (नीचजाति) हैं. जो ⫶ हुमरा आवे तो सुरख रंग या भूरा रंग है, बाल और नेत्र लाल है. मुखपर शीतलाके दाग हैं; फोड़ा, फुनसी, जखम, आदि निसानी है; कमीन जात है. जो ⫶ यह बयाज आवे तो सुफेद रंग है, तिल्लीवाला है, कानोंमें छिद्र है, मीठी तबियत (प्रसन्नचित्त) रहता है, बातें बहुत करता है, मुखपर कछु निसानी, बूचा कान, मिली हुई भौंह है, मीठी बोली, गर्दन, मोटी भली नियत है; जो ⫶ यह नुस्रतुल्खारिज आवे तो लाल रंग, कछु स्याह रंग है, लंबी गर्दन, लंबा पेट, आंखपर, मुखपर, बायींतर्फ तिल अथवा मस्साकी निसानी है; शरीरमें गुलझुठ है. जो ⫶ यह नुस्रतुदाखिल आवे तो गौरवर्ण, ब्राह्मण, ठिंगणा (छोटा), बडे नेत्रवाला है. ⫶ यह अतबेखारजि शकल आवे तो म्लेच्छजाति है. फोड़ाफुनसी माताके चिन्हवाला है, जो ⫶ नकी यह शकल आवे तो लाल रंगवाला है; वैरी है, यह चोर पतला है, चालाक जवान जोरावर है. जो ⫶ यह नुस्रतदाखिल शकल आवे तो सुपेद और जरदाईसे मिला रंग है, दाढी लंबी है, भौंह मोटी और मीठा बोलनेवाला है, गाने बजानेवाला और मुख्य जन है; जो इज्जतमा ⫶ यह शकल आवे तो सुपेद रंग है, कपोल लाल हैं, लंबी कद नारियलसरीखा शिर है, पतले होंठ और छोटी नाक है; जो यदि तरिखा ⫶ यह शकल हो तो आमेज अर्थात् मिलाहुआ रंगवाला है, पतला और लंबा है, स्याह भौंह है. पतली अंगुली, हुनरदार ऐसी कोई औतरही चोर है. इति०२२—

प्रश्न—चोर चांडाल किसतर्फ भाग गया है? तहां रमल डालै ८ आठवीं ९ नवमीं शकलोंको जर्ब करके एक बनावे. जो ≝ ∸ ≐ ⫶ इन ४ मेंसे कोईसी आवे तो पूर्व दिशामें गया. जो ≕ ⋮ ∹ ≡ इन ४ मेंसे कोई आवे तो उत्तरकी तर्फ गया. जो ⋮ ÷ ⋮ ≡ इन ४ मेंसे कोई आवे तो पश्चिम दिशामें गया. जो ÷ ≑ ∹ ≣ इन ४ मेंसे कोई शकल आवे तो दक्षिण दिशामें गया है. इति० २३—

प्रश्न—रोगीके क्या रोग है? तहां रमल डालै प्रस्तार बनाके छठे ६ घरको विचारै जो यदि वहां ≝ लह्यान शकल हो तो इसके कोईक दिन पहले गरमीका विकार था तिस श्रममें यह न्हाया, अथवा कुपथ्य किया है, इससे रोग भया है. ऐसा विचारना इसको बृहस्पति ग्रहके निमित्त दान पुण्य करना चाहिये. जो कब्जुलदाखिल आवे ∹ सुपेद वस्तु खाई है वह शीतल थी तिससे आजार भया है. इसको सूर्यके निमित्त दान करना. जो ∸ कब्जुलखारिज हो तो कहीं गलीजकी जगह स्नान आदि करने गयाथा वहां छाया भई है अर्थात् भूत प्रेतनाशक यंत्र बांधना चाहिये, और बलिदान करना. तथा राहुके निमित्त दान, पुण्य, जप, पाठ करानेसे बिमारी दूर होगी. जो ≣ जमात आवे तो बुध ग्रहके निमित्त दान, पुण्य, करनेसे फायदा होगा. जो ÷ फरहा आवे तो शरदीसे आजार हुआ है रातके बखत पानी पिया है; बडीफजरमें कछु वस्तु खाई है. जीर्णसे बेमारी हुई है. इसने शक्तिके अनुसार दान, पुण्य करना चाहिये. जो ≑ उकला आवे तो (छाया) भूत प्रेतकी बाधा है. पेट भारी है. दरद रहता है, खानेकी इच्छा करता है, परंतु गलेसे नीचें नहीं उतरता. इसने अन्नवस्त्रादिकोंका दान करना और शनैश्चरका दान, पुण्य तथा जप कराना चाहिये. जो ≕ अंकीश आवे तो इसका पेट भारी है. भूंख थोड़ी लगती है; पितर आदि इष्टदेवका दोष है, उस अपने इष्टदेवके निंमित्त दान पुण्य करै तब सुख होवे. जो ⩦ यह हुम्रा शकल हो तो इसके कछु रक्तकी बेमारी है; इसने मंगल ग्रहके निमित्त ब्राह्मणोंको भोजन करना और जप, पाठ करना चाहिये. जो ⩦ यह बयाज शकल आवे तो रोगीके शरदीकी बेमारी अथवा शीतज्वर या शीत आरहा है. अथवा कफकी वृद्धि है. इसने (छायादान) कांसीके बरतनमें घृत घाल, तिसमें सोना डालके, दान करना चाहिये और चंद्रमाको जप करावे. जो ≐ नुस्रुत् खारिज हो तो कछु चिकनी चीज खाई है अथवा क्रोध किया है

इससे वेमारी भई है; इसने पक्का इलाज करना चाहिये और ब्रह्मभोज करावे तथा भूखोंको भोजन बांटे. तब वेमारी दूर होवेगी. जो ⁼ नुस्रुदाखिल आवे तो इसने किसी देव पितर निमित्त वोल कबूल की थी सो याद नहीं रही. यह ५ सेर चावल, पांच गज कपड़ाका दान करै और जिस देवनिमित्त वोल कबूल करीथी उसको पूरी करै तब आराम होगा. जो ≟ अतवेखारिज आवे तो किसी भूत प्रेतकी बाधा है कभी. ज्यादै बीमारी है, कभी कम होती है. इसने गलेमें भूतनाशक यंत्र बांधना और केतु ग्रहके निमित्त दान, पुण्य तथा जप पाठ करना चाहिये, उससे आराम होगा. जो ∹ नकी आवे तो तापमें न्हा लिया है. कछु लाल वस्तु खाई है. तिससे वेमारी हुई है. अब इसका जीव गोता खाता है. इसने मंगल ग्रहको जप कराना और ब्राह्मणोंको भोजन करवाना चाहिये, आराम होगा. जो ⁼ यह अतवेदाखिल आवे तो भूतनी प्रेतनीकी छाया है. हिया कंपता है. कफसे छाती रुक रही है. इसनें शुक्र ग्रहके निमित्त दान, पुण्य करना चाहिये, आराम होगा. जो ≡ इज्जतमा आवे तो पेटमें दर्द है. कभी दुःख कभी सुख होता है. भूंखे गरीब आदमियोंको भोजन खिलावे तब आराम होगा. जो यदि ⋮ यह तरिखा शकल आवे तो पानीके पीनेसे बीमारी बढ़ी है. भूख नहीं लगती है. ब्राह्मणोंको खीर खांड़का भोजन करानेसे आराम होगा ॥ इति ॥ २४–

प्रश्न—इस बीमारको आराम होगा ? कि नहीं ? तहां प्रस्तार बनाके पांचवें छठे घरको जर्ब करके, एक शकल निकालै. जो यदि ≐ लह्यान अथवा कब्जुल्खारिज ≟ आवे तो बीमारी दूर होवे. जो ∹ ÷ ≡ ≟ इनमेंसे कोई आवे तो बीमार मरे. जो ÷ ⁼ ⁼ ⋮ ⁼ इनमेंसे कोई आवे तो आराम हो जावेगा. जो यदि ≡ ÷ ≡ ≡ ≡ इनमेंसे कोई आवे तो बीमारी बहुत दिनोंतक रहेगी. इति० २५–

प्रश्न—अमुक स्त्रीको यह पुरुष छोड़ेगा कि नहीं ? तहां प्रस्तार बनाके, सातवे घरको देखै. ≟ ≟ ≡ ≟ ये खारिज शकल आवें तो छोड़ेगा, जो यदि ≡ ÷ ⁼ ⁼ ≡ ये दाखिल साबित आवें तो नहीं छोड़ेगा. जो मुन्कलीव आवें तो कभी छोडै कभी नहीं यह कहै. इति० २६–

प्रश्न—गया परदेशी मरगया है ? सुखी है ? या दुःखी है ? रोजगार है ? या नहीं ? तहां प्रस्तार बनाके आठवें घरको देखै. जो यदि ८ आठवें घर शुभ दा-

खिल आवे तो सुखी है. अच्छी गुजरान करता है. शुभ मुन्कलीव आवे तो भले हालसे गुजरान है. आया चाहता है. जो अशुभ मुन्कलीव आवे तो जीवता है. परंतु कारवारमें कछु हलचली है. खारिज आवे तो ≐ ⁝ जीवता नहीं. शुभ खारिज ≡̇ ≐ आवे तो जीवता है. मगर हाल अच्छा नहीं है. जो अशुभ साबित ☰ हुमरा आवे तो लड़ाई होके मरगया है. इति० २७–

प्रश्न—अमानत सौंप देवेगा ? या नहीं ? तहां प्रस्तार बनाके दूसरे छठे घरकों जर्व करै; जो शुभ दाखिल और साबित आवे तो अमानत देवेगा, अर्थात् जामिन हो जायगा. और शुभ अवस्था अशुभ मुन्कलीव हो तो देवे नहीं. देकर नटै. जो अशुभ दाखिल अशुभ साबित तथा अशुभ खारिज आवे तो अमानत देगा नहीं; दिलासा करता रहेगा. इति० २८–

प्रश्न—मैं लड़ाई झगड़ाकूं जाताहूं. फते होगी ? कि नहीं ? तहां रमल डालै प्रस्तार बनावे. जो पहली शकल शुभ दाखिल आवे तो फते होगी. जो अशुभ दाखिल आवे तो फते नहीं होगी. जो अशुभ मुन्कलीव तथा अशुभ खारिज आवे तो फते न हो. अशुभ या शुभ साबित होवे तो ढ़ीलमें फते होगी. इति० २९–

प्रश्न—शत्रुसे लड़ने जाता हूं मेरी फते (जीत) ? या उसकी जीत (फते) होगी ? तहां प्रस्तार बनाके, ८ आठवें घरको देखै. जो शुभ दाखिल अथवा मुन्कलीव हो तो तेरी जीत है. जो शुभ खारिज अथवा अशुभ खारिज हो तो दुशमन (शत्रुकी) फते होगी; जो शुभ साबित हो तो तेरी फते होगी; जो अशुभ मुन्कलीव, अशुभ साबित, अशुभ दाखिल होवे तो शत्रुकी जीत होवेगी. और १–२–३–४–११–९–१०–१३–१५–इन घरोंमें शुभ शकल हो तो और बहुत रेखा हों तो पूछनेवाले तेरीही फते होगी और ५–६–७–८–१२–१६ इन घरोंमें शुभ शकल हों और बहुत रेखा हो तो हे पृच्छक ! तुम्हारे शत्रुकी जीत होगी. इति० ३०–

प्रश्न—कोई मूक प्रश्न करै तहां रमल डालै प्रस्तार बनावे. फिर हुमरा ☰ शकलको देखे कि प्रस्तारमें कहां है. जो पहले घर होवे तो कछु काम किया है. लड़ाईकी जबाब देई तुम्हारे जुम्मे हो रही है. शत्रुका बल अधिक है ॥ १ ॥ जो हुमरा दूसरे घर आवे तो रोजगारका प्रश्न है ? रोजगार अच्छा होगा. जो पर-

देशी हो तो फिर आवे, चलनेकी नियत है न चलै और मिलनेकी या व्याहकी नियत है तो न करै. और दावा (झगड़ा) की नियत है तो न करै ॥ २ ॥ और जो तीसरे घर आवे तो भाई मित्रसे लड़ाई आदि हो, जो तुझसे बुरे हालसे रहता है. सो तुझे बुलावे कितनेक दिन पीछे तुझेको तकलीफही दिखावेगा ॥ ३ ॥ जो चौथे घर आवे तो कुछ चीज न मिलै. हाथ न आवेः लडाई होवे. दुशमन तुझपर कोप रहा है. किसीके पास जाके, फिरयाद करेगा तो तेरी फिरयाद न लगे. जो परदेशकी बात पूछता है तो ढीलसेती आवे, सफरकी नियत हैं तो न चलै. जो काम किया जाता है सो ठीक करो ॥ ४ ॥ जो पांचवें घर आवे तो दिलगीरी है. कछु जानवर या अन्य कछु शोककी चीज खरीदा चाहता है सो न करै. जो तेरी वस्तु गई है सो पावे और जो प्यारा चला गया है सोभी आवे ॥ ५ ॥ जो छठे घर आवे तो बेमारका हाल पूछता है सो ढ़ीलसे अच्छा होगा. जो गर्भवतीको पूछता है तो कष्टसे बालक जनेगी. और कछु खरीदा चाहते हो सो न मिलै. ॥ ६ ॥ जो सातवें घर आवे तो परदेशीको पूछता है. जो स्त्री किया चाहता है तो नहीं करना; खतरा है. सीर (साझा) किया चाहता है तो न करै. जानवर (पक्षी) खरीदा चाहता है तो न रहैगा ॥ ७ ॥ आठवें घर आवे तो शत्रुका जोर है और कर्जा लिया चाहता है तो हमेश दुःख रहेगा. परदेशकी खबर आवे और आप नहीं आवेगा. जानवर (पक्षी) खरीदा चाहता है तो खरीदै, फायदा होगा. बेमारकी पूछता है तो पुण्यधर्म करो आराम होगा ॥ ८ ॥ नवमें घर आवे तो कहीं गमन करना अच्छा नहीं, परदेशीकी खबर आवेगी ॥ ९ ॥ जो दशवें घर आवें तो बडे वृद्ध आदमीसे कछु हाथ आवे, रोजगार होवे, परदेशीकी पत्री आवे, किसीसे मिला चाहता है तो न मिलै; बीमारको देरीमें आराम होगा ॥ १० ॥ ग्यारहवें घर आवे तो जो तेरी उम्मेद है सो ढीलसें होगी, दोस्त (मित्र) न मिलै, रोजगार तो मिले, किसीसे कर्जा नहीं लेना; किसी बडेसे कछु पूछा चाहता है ? सो नहीं सुनेगा ॥ ११ ॥ जो बारहवें घर आवे तो दुशमन जोर कर रहा है, हुशियार हो जाना. और कोई जानवर खरीदा चाहते हो, सो किसी दोषसे मिलेगा. और किसीपर दावा किया चाहता है तो न करै. बीमारकी पूछता है तो पुण्य दान करो, आराम होगा ॥ १२ ॥ जों तेरहवें घर आवे तों तेरे दुशमन लोग बहुत है और किसीके पाससे रोजगार चाहता है तो वहां रोजगार न होवेगा. बीमारीकी पूछता है तो आराम होगा, परदेशी ढ़ीलसे आवे ॥ १३ ॥ जो चौदहवें घर आवे तो इल्मका बात पूछते हो सो ढ़ीलसें होवेगी;

कछु धन लिया चाहता है ? सो हाथ न आवे और तेरे ऊपर किसीने तोहमत लगाई है सो सावधान होके रखना. और बीमारीको औषधी दिवावो तब आराम होगा ॥ १४ ॥ पंदरहवें घर आवे तो शीघ्रही रोजगार होगा. तेरा दोस्त नादान (बे समझ) है कुछ मत करै काम तेरा आपही होगा. परदेशी आदमी ढीलसे आवेगा. गर्भवतीकी पूछता है तो कष्टसे बालक जनेगी ॥ १५ ॥ जो सोलहवें घर आवे तो तुझको जो काम विचार रक्खा है उसमें कोई झगडा (टंटा) उठेगा किसीके पास जावेगा, वह मुखसे नहीं बोलेगा; कोई तुझसे बुरा हुआ है वह कितनेक दिन पीछे आपही बोलेगा और आपही मिलेगा. ॥ १६ ॥ इति० ३१–

प्रश्न—कोई पूछे कि मुझको किस वस्तुमें फायदा होगा ? तब रमल डालके प्रस्तार बनावे. जो दूसरे घर ⠿ यह लह्यान शकल आवे तो सराफासे सोना रूपाके लेने देनेसे या लोगोंके झगरे चुकानेसे फायदा होगा; जो यदि दूसरे घर ⠿ कब्जुलदाखिल शकल आवे तो बयाजीसे अथवा खेतीके कामसे फायदा होगा. जो ⠿ यह कब्जुलखारिज हो तो चोरीसे अथवा दगाबाजी अथवा जारीसे रोजगार हो. जो ⠿ यह जमात आवे तो चीजें पालनेसें हकीमीसें फायदा है. जो फरहा ⠿ आवे तो कलाहेपनेसे, पसारीपनेसे, अतारपनेसे अथवा लोगोंके हंसावनेसे फायदा है. जो ⠿ यह उकला आवे तो चोरी, दगाबाजीसे, दुपाया चौपाया जीव बेचनेसे फायदा है; जो ⠿ अंकीश आवे तो शत्रुपनेसे अथवा कूटने पीसनेसे फायदा है; जो ⠿ हुम्रा आवे तो कांसदपनेसे, इल्म पढ़ावनेसे, संदेशा पहुचावनेसे भिक्षा मांगनेसे फायदा है. न्याव चुकावनेसे फायदा होगा. जो ⠿ बयाज आवे तो गमन करनेसे देवताके पूजनसे फायदा होगा. जो ⠿ नुस्रुत खारिज आवे तो राजद्वारसे राज्यके कामसे फायदा होगा. जो ⠿ नुस्रुदाखिल आवे तो विद्या आदि पढ़नेसे फायदा होगा; जो ⠿ यह अतबेखारिज शकल आवे तो किसानपनेसे, दलालीसे, अथवा दुकानसे फायदा होगा: जो ⠿ यह नकी आवे तो कपड़ा बेचनेसे अथवा ज्योतिष पढ़नेसे अथवा सौदागरीसे फायदा होगा. जो ⠿ यह अतबेदाखिल आवे तो बागबगीच्या लानेसे वा खेती करनेसे फायदा होगा. जो ⠿ यह इज्जतमा शकल आवे तो गाने बजानेसे अथवा इल्म पढ़ानेसे फायदा है; जो ⠿ यह तरीखा आवे तो धोबीपनेसे या मेवा बेचनेसे अथवा जासूसपनेसे फायदा होगा. इति०३२–

प्रश्न—मैंने किसी जगह आदमी भेजा है सो वहां पहुंचा है कि नहीं ? तहां

प्रस्तार बनाके पहला घर देखै. जो शुभ दाखिल आवे तो नहीं पहुंचता है अभी मिला नहीं, जो शुभ सावित हो तो राहबीच मुकाम किया है; बहुत दिनोंमें पहुंचेगा; जो शुभ खारिज आवे तो सुखसे पहुँचगया. अशुभ खारिज आवे तो तकलीफसे पहुंचा है; जो अशुभ सावित तथा अशुभ मुन्कलीव आवे तो आदमी भेजा था सो मरगया है. इति० ३३—

प्रश्न—स्त्री लड़के (रूसके) चली गई है, कौन दिशामें गई ? तहां प्रस्तार बनाके ७ सातवें घरको देखै. तहां कब्जुलखारिज, लह्यान, नुस्रुतखारिज वा अतवेखारिज ये शकल आवें तो पूर्व दिशामें गई है; जो फरहा, इज्जतमा, अतवेदाखिल, हुमरा, ये आवें तो पश्चिमदिशामें गई. जो ⩧ ⁝ ⩸ ⩧ ये आवें तो उत्तर दिशामें गई; जो जमात कब्जुदाखिल, नकी, उकला, ये आवे तो दक्षिण दिशामें गई है. इति० ३४—

प्रश्न—मेरी वस्तु खो गई है ? अथवा मैं घरको भूल गया हूं, सो मिलेगी ? कि नहीं. तहां प्रस्तार बनाके १२ बारहवें घरको देखे. जो शुभ दाखिल, नुस्रुदाखिल और अतवेदाखिल तथा अंकीश शकल हो तो घरमेंही खो गई है; जो नकी अतवेखारिज तथा नुस्रुत्खारिज, लह्यान ये आवे तो कहीं रास्तेमें खो गई है; जमात, हुमरा, बयाज, इज्जतमा, आवे तो गढ़बीच गई; गर्दनपर मट्टी पड़ी है; फरहा, कब्जुल्खारिज, तरीख, उकला ये हों तो राहबीच तुमने निगाह नहीं रक्खी तहां खोई है, सावित होवे तो मित्रआदिके मकानमें खोई है. मुन्कलीव हो तो रास्तामें खोई है. इति० ३५—

प्रश्न—चोरने वह वस्तु कहां धरी है ? तो रमल डाले प्रस्तार बनाके ७ सातवें घरको देखै. जो ≐ ⋮ ≡ ÷ ये आवें तो आले आदिमें धरी है; जो ⩸ ÷ ⩧ ⩸ ये आवें तो छतमें अथवा घरतीमें गाड़ी है; जो ≡ ⩧ ⁝ ⩸ ये आवें तो पानीपार धरी है. अन्य शकल होवे तो शकुनपंक्तिमें स्वभाव देखकर बताना. इति० ३६—

प्रश्न—परदेशमें जाना चाहता हूं फायदा है कि नहीं ? तहां प्रस्तार बनाके नवमें घरको देखै. जो ÷ ⩧ ⩧ आवे तो गमन करना अच्छा, राजी खुशीसे उलटा चला आवेगा. जो नुस्रुत्खारिज तरिखा फरहा ये आवें तो मेल मिलाप करके आवे. रास्तेमें कोई दोस्त मिले उससे कछु प्राप्ति होवेगी. जो ≐ यह आवे तो गमन मत करै जानको खतरा है. जमात तथा इज्जतमा आवे तो मत जावो

फायदा नहीं होगा, तुह्मारा काम यहांहीं होगा. जो हुमरा आवे तो मार्ग बीच खड़रा है. चोरके हाथ शरीरको क्लेश होगा. अन्य शकल हो तो उसके स्वभावादिक देखकर फल कहै. इति ०३७–

प्रश्न—मेरा कौन दिशामें जाना अच्छा है? तहां प्रस्तार वनाके नवमें घरको देखै. जो ÷ ≑ ≡ ≒ इनमेंसे आवे तो दक्षिण दिशासे फायदा है; जो ∸ ≡ ⋮ ≐ ये आवें तो पूर्व दिशामें जाना अच्छा है. जो ⁝ ⁝ ÷ ≡ ये आवे तो पश्चिम दिशासे फायदा है. जो ⁝ ÷ ≡ ≑ ये आवे तो उत्तर दिशासे लाभ है. इति० ३८–

प्रश्न—मेरा मिलना किन लोगोंसे होयगा? तहां प्रस्तारके नवमें घरको देखै. जो ≐ आवे तो वड़े आदमीसे मिलाप होयगा. जो ≑ आवे तो मित्र लोगोंसे फायदा होगा. मिलाप होयगा. कछु फायदा होगा. जो ≡ यह आवे तो बड़े लोगोंसे मिलाप होयगा. जो ∹ यह हो तो धनवंतसे मिलाप होगा. जो ≡ ⁝ यह हो तोभी किसी इल्मदारसे मिलाप होगा. ≡ ⋮ ये शकल आवे तो बजाजोंसे मेल होगा. जो ≑ ⋮ ∵ ये आवें तो चोरोंसे मेल मुलाकात होके फायदा होगा. जो ≐ हुमरा आवे तो किसी हिंसक दुष्टजनसे मिलाप होगा, अन्य शकल हो तो उसीके स्वभावसे फल कहना. इति० ३९–

प्रश्न—वह पुरुष मुझपर प्यार करता है कि नहीं? तहां प्रस्तार बनाके पहले घरको देखै. शुभ दाखिल शकल आवे तो बहुत प्यार करता है, कछु देवेभीगा. जो शुभ मुन्कलीव शकल आवे तो कभी प्यार करता है. कभी नहीं करता है. और जो साबित, जमात, इज्जतमा, वा हुमरा, आवे तो मुद्दत बहुत दिनों पीछे मेहेरबान होवेगा. जो शुभ खारिज लह्यान नुस्रुत्खारिज आवे तो थोड़ा मेहरवान् होगा. जो अशुभ खारिज हो तो प्यार प्रीति नहीं करेगा. इति ॥ ० ४०–

प्रश्न—मेरे हाथमें क्या वस्तु है? और कैसा रंग है? तहां प्रस्तार बनाके पहले घरको देखै. जो ÷ यह आवें तो श्वेत रंग कहिये. ल ० ≡ आवे तो जर्द रंग है. जो ∸ यह आवे तो सादा नेक रंग है. जो ⁝ आवे तो श्वेत रंग है. जो ÷ ⁝ ये हों तो जर्द रंग है. जो ≐ यह हो तो लाल रंग है. जो ≑ ≑ यह हो तो इस वस्तुका स्याह रंग है. पहले घरको देखै. जो वहां लह्यान, हुमरा आवे तो जरद सुपेद रंग है और मीठी तथा कीमतकी वस्तु है, जो ∸ यह आवे तो खाखी रंग है, स्वाद मीठा है. जो ⁝ यह आवे तो सफ़ेद स्याह है, स्वाद खट्टा है; जो ≡ यह आवे तो मुमुकसे, यानी मिला रंग है बुस्क है. ≑ आवे तो श्याम

रंग और कडुवा स्वाद है. जो ≡ यह आवे तो स्याह रंग कीमत खसबोई है, जो कब्जुलखारिज आवे तो सुपेद तथा हरा वर्ण है. जो बयाज शकल आवे तो सुपेद तथा सुगंधिवाली वस्तु है, जो ≡ यह आवे तो लाल रंग है. ÷ यह आवे तो लाल सुपेद खानेकी वस्तु है. ≡ यह शकल आवे तो जर्द सुपेद मीठी कीमतकी चीज है. जो तरिखा आवे ⋮ तो लीली वस्तु है. इति० ४१–

प्रश्न—खोई हुई वस्तु कहां है? तहां प्रस्तार बनाके चौथे घरको देखै. जो दाखिल वा साबित शकल आवे तो पृथ्वीके बीच वस्तु है, और खारिज तथा मुन्कलीब हो तो घरमें नहीं है. इति० ४२–

प्रश्न—परदेशीनें स्त्री की है या नहीं? तहां प्रस्तार बनाके सातवें ७ घरको देखै. जो शुभ दाखिल आवे तो स्त्री की है. जो शुभ मुन्कलीब आवे तो की है अथवा किया चाहता है, जो शुभ साबित आवे तो बहुत दिन हुए, जो अशुभ खारिज अथवा शुभ खारिज आवे तो नहीं की है, बुरे हालसे है, जो अशुभ मुन्कलीब आवे तो करी नहीं, किया चाहता है, हाथ नहीं आवती है, जो अशुभ साबित तथा अशुभ दाखिल आवे तो वहां परदेशी बुरे हालसे है. इति० ४३–

प्रश्न—राजा पातसाह मुझको इनाम कोई ओहदा देवेगा, कि नहीं? तहां प्रस्तार बनाके दशवें घरको देखै, जो शुभ दाखिल आवे तो इनाम आदि देवेगा, शुभ मुन्कलीब आवे तो दिया चाहता है परंतु तुझको अजमायके देगा, जो अशुभ दाखिल अशुभ मुन्कलीब अशुभ साबित आवे तो किसी मुरखने तेरी चुगली करी है, जो खारिज आवे तो तेरा मुरातबा या तेरी पहलेकीभी इनाम आदि खो जावेगी. इति० ४४–

प्रश्न—चोर शहरमें है अथवा बाहिर निकलगया? तहां प्रस्ताव बनाके ७ सातवें घरको देखै. जो वहां शुभ दाखिल आवे तो शहरमें है; बयाज, इज्जतमा, वा हुमरा आवे तो चोर शहरमें नहीं है, जो जामात आवे तो वह चोर शहरमें है. ≡ यह शकल आवे तो चोर बुरे हालसे है; राह ऊपर बैठा है, जो ÷ ÷ ये आवे तो कहीं कथा होनेकी जगह बैठा है. इति० ४५–

प्रश्न—गत वस्तु मिलेगी कि नहीं? तहां प्रस्तार बनाके १४ चौदहवें घरको देखै. जो कब्जुलदाखिल, वा अतबेदाखिल आवे तो कितनेक दिन पीछे पावेगा; शीघ्रही तलास करेगा तो नहीं पावेगा. जो कब्जुलखारिज अतबेखारिज, या लह्यान आवे तो नहीं पावे, जो फरहा तरीखा आवे तथा शुभ दाखिल आवे तो पावे. जो मुन्कलीब आवे तोभी न पावे. इति० ४६–

प्रश्न—चोर कितने हैं और किस दिशामें गये हैं? तहां प्रस्तार बनाके सातवें घरकी शकलको देखै; वह शकल प्रस्तारमें जितने घरोंमें है उतनेही चोर हैं और प्रस्तारके सोलहों १६ घरोंको देखै. तिन सब शकलोंकी शून्योंको इकट्ठी कर चारका भाग देवैं. एक बचे तो चोर पूर्वमें गया है, दो २ बचें तो पश्चिममें गया है, ३ बचें तो उत्तरमें गया, चार बचें तो दक्षिणमें गया. इति० ४७—

प्रश्न—कोई पूछे कि–मुझे अमुक जनसे (फलानेके पाससे) कछू कर्जा मिलेगा कि नहीं? तहां पूछनेवालेका १–२ घर है और जिसके पाससे कर्जा लिया चाहता है उसका ७–८ घर जानना. इनको शुभाशुभ विचारै और प्रस्तारके छठे घरको देखै तहां शुभ खारिज होवे तो कर्जा देवेगा. लाभ होगा. जो अशुभ खारिज आवे तो विलंब (देरीसे) देवेगा. जो दाखिल साबित होय तो कर्जा न मिलै, बहुत कष्ट पावे; मुन्कलीब आवे तोभी कर्जा नहीं मिलै. इति० ४८—

अथ मुष्टिप्रश्नकथन ॥

रमल डालके प्रस्तार बनाके सातवें घरको देखै तहां जो अग्नितत्वकी शकल अथवा पूर्व दिशाकी शकल हो तो धातुकी वस्तु है, जो वायुकी तथा पश्चिम दिशाकी शकल हो तो जीवप्रश्न बताना, जो सातवें घर उत्तम दिशाकी शकल हो तो तृण, काष्ठ, फल आदि कहना. जो सातवें घर कोई दक्षिण दिशाकी वा पृथ्वी तत्वकी शकल हो तो मुष्टिमें पत्थर, मणि, मोती, मूंगा आदि बताना. इति मुष्टिप्रश्न. ४९—

॥ अथ मूकप्रश्न ॥

अब मूक प्रश्न देखनेका विचार कहते हैं—प्रस्तार बनाके पहले घरको देखै तहां जो पहले घरमें दाखिल अथवा साबित शकल आवे तो उसका प्रश्न लाभका कहना, माल अथवा किसी जगहकी प्राप्तिका प्रश्न कहना और किसीसे मिलनेका है अथवा उसके पाससे कोई चीज जाती रही है उसकी प्राप्ति होनेका प्रश्न कहना. जो प्रथम घर शुभ दाखिल हो तो चिंतायुक्त, पराधीन, दुःख संकट है. किसीसे कछु कह सक्ता नहीं, या किसी जगह जाना चाहता है मगर जाना नहीं होता; जो प्रस्तारमें पहले घर शुभ खारिज परे तो कोई पदार्थ दूर है उसकी प्राप्ति होनेका प्रश्न है, नित्य विचार करता है, भली वस्तु तेरे पाससे दूर है, अथवा

कोई चीज है उसका छूटना चाहता है. अशुभ खारिज हो तो द्रव्यकी चिंता दूर होनेका प्रश्न है ? मैं कुछ कार्य करता हूं भला अथवा बुरा कैसा होयगा ? यह प्रश्न है. अशुभ साबित हो तो शत्रुके भयका प्रश्न है वा चिंताके भयका तथा बंधनका प्रश्न कहना. जो मुन्कलीब हो तो उसका प्रश्न किसी शुभकार्यके बीच रहनेका है अथवा जानेका प्रश्न है अथवा कोई भला काम है ऐसा जानना. जो अशुभ मुन्कलीब हो तो शुभ चिंतायुक्त है, गढ (किला) बीच अथवा अपने घरमें सलाह करता है, कोई बनी नहीं आवती हैं, ऐसे जानों. इति० ५०–

अब मूकप्रश्न कहनेका दूसरा प्रकार कहते हैं कि–प्रस्तार बनाके १ पहले घरकी शकलको देखै, जो वह १ घरकी शकल अग्नितत्वकी हो और अग्नितत्वकी खुला हुआ हो तो उसका प्रश्न द्रव्यसंबंधी कहना, और वह शकल पुनरुक्त होके प्रस्तारमें जिस घर पडी हो उसी घरका हाल कहना और जो वायुकी शकल हो, वायुकी बिंदु खुली हो तो जीवसंबंधी प्रश्न कहना; स्त्रीशकल हो तो स्त्रीका प्रश्न कहना. पुरुष हो तो पुरुषका कहना; जलकी हो और जल तत्वका बिंदु खुला हुआ हो तो खेतीका काम अथवा बागबगीचा लगाना इत्यादि प्रश्न कहना; पृथ्वीकी शकल हो और पृथ्वीका बिंदु खुला हुआ हो तो घरका, मूलकका, ग्रामका व पृथ्वी प्राप्त होनेका प्रश्न कहना और जितने बिंदु खुले हुए हों उन सब तत्वोंके प्रश्न मिलायके कहना. इति मूकप्रश्नप्रकारः ५१–

अब यथाक्रमसे सोलह शकलोंके नाम, स्वरूप, खारिजादिक, वा द्विस्वभावादिकसंज्ञा, स्त्रीपुरुषविचार, दिनरात्रीबलवान, शुभाशुभ, दिशा, तत्व, राशि, स्वामी, चरस्थिर संज्ञा इन सबोंको कहते हैं. लह्यान शकल यह ⚍ है. खारिज है, द्विस्वभाव, पुरुष, दिनम बली है, शुभ है, पूर्व दिशाकी है, अग्नितत्वकी है, धनराशी है, बृहस्पती स्वामी है, चरसंज्ञक है, ॥१॥ कब्जुलदाखिल शकल यह ⚎ है, दाखिल है, द्विस्वभाव है, स्त्री है, रात्रिमें बली है, शुभ है, दक्षिण दिशाकी है. पृथ्वीतत्व, सिंहराशी, सूर्य स्वामी है, स्थिरसंज्ञक है ॥ २ ॥

कब्जुलखारिज शकल ⚏ है, द्विस्वभाव है, पुरुष है, दिनमें बली है, अशुभ है, पूर्वदिशा, अग्नितत्व, कुंभराशी है, राहुकी है, चरसंज्ञक है ॥ ३ ॥ जमात शकल यह ☰ है, साबित है, स्थिर है, नपुंसक है, संध्यासमयमें बली है, मध्यम है, दक्षिण दिशाकी है, पृथ्वी तत्व, मिथुनराशी, बुध स्वामी है, स्थिरसंज्ञक है ॥ ४ ॥

फरहा शकल ÷ यह है, मुन्कलीव है, चर है, पुरुष है, संध्यासमयमें बली है, शुभ पश्चिमदिशा, वायुतत्व, तुला राशि है, शुक्र स्वामी है, चरसंज्ञक है ॥ ५ ॥ उकला शकल ≑ यह है, मुन्कलीव है, चर है, नपुंसक है, संध्यासमयमें बली है, अशुभ है, दक्षिणादिशाकी है, पृथ्वीतत्व मकरराशि, शनिश्चर स्वामी है, चरसंज्ञक है ॥ ६ ॥

अंकीश शकल ≡ यह है, द्विस्वभाव है, स्त्री है, रात्रिमें बली है, अशुभ है, दक्षिण दिशा पृथ्वीतत्व, शनि स्वामी, कुंभराशी है, स्थिरसंज्ञक है ॥ ७ ॥ हुमरा शकल ≟ यह है, साबित है, स्थिर, पुरुष, तथा संध्यासमयमें बली है, अशुभ है, पश्चिम दिशाकी है, वायुतत्व है, मेषराशि और मंगल स्वामी है, स्थिरसंज्ञक है ॥ ८ ॥

बयाज शकल ∺ यह है, साबित है, स्थिर है, स्त्री है, संध्यासमयमें बली है, शुभ है, उत्तर दिशाकी है, जलतत्व है, कर्कराशि है, चंद्रमा स्वामी है, स्थिरसंज्ञक है ॥ ९ ॥ ≟ यह नुस्रुतखारिज शकल है, द्विस्वभाव है, पुरुष है, दिनमें बली है, शुभ है, पूर्व दिशा है, अग्नितत्व है, सिंहराशि है, सूर्य स्वामी है, चरसंज्ञक है ॥ १० ॥

यह ⩦ नुस्रुदाखिल शकल है, द्विस्वभाव है, स्त्री है, रात्रिमें बली है, शुभ है, उत्तर दिशा है, जलतत्व है, मीनराशि है, बृहस्पति स्वामी है, स्थिरसंज्ञक है ॥ ११ ॥ यह ⫶ अतबेखारिज शकल है, द्विस्वभाव है, पुरुष है, दिनमें बली है, अशुभ है, पूर्वदिशा है, अग्नितत्व है, केतु स्वामी है, चरसंज्ञक है ॥ १२ ॥

÷ यह नकी शकल मुन्कलीव है, चरसंज्ञक है, नपुंसक है, संध्यासमयमें बली है, अशुभ है, उत्तर दिशाकी है, जलतत्व है, वृश्चिक राशि है, मंगल स्वामी है, चरसंज्ञक है ॥ १३ ॥ और अतबेदाखिल ⫶ यह शकल है, द्विस्वभाव है, स्त्री है, रात्रिमें बली है, शभ है, पश्चिम दिशा है, वायुतत्व है, वृषराशि है, शुक्र स्वामी है, स्थिरसंज्ञक है, ॥ १४ ॥

इज्जतमा शकल ⫶ यह है, साबित है, स्थिर है, नपुंसक है, संध्यासमयमें बली है, मध्यम है, पश्चिम दिशाकी है, वायुतत्व है, कन्याराशि है, बुध स्वामी है, स्थिरसंज्ञक है ॥ १५ ॥ तरीखा शकल ⋮ यह है, मुन्कलीव है, चर है,

नपुंसक है, संध्यासमयमें बली है, शुभ है, उत्तर दिशाकी है, जलतत्व है, कर्कराशि है, चंद्रमा इसका स्वामी है, चरसंज्ञक है ॥ १६ ॥

ऐसे ये सोलह शकल जाननी. इनकाही सब जगह काम आता है।

इति श्रीयवनमते रमलदानियाल नामक सरलभाषाग्रंथः समाप्तः।

यह रमलदानियालग्रंथ हिन्दी सरलभाषामें स्पष्ट बनाके तथा अन्य रमलोंके मतान्तर मिलाके बेरीनिवासिद्विजशालग्रामात्मजपण्डितबस्तीरामजीने श्रीयुत हरिप्रसाद भगीरथजीको हकसहित दिया है. इनके विना इसका अधिकारी कोई नहीं है. शुभम्भूयात्।

सं० १९४९ आषाढ कृष्ण ७ भृगुदिने समाप्तोऽयं ग्रन्थः।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—
हरिप्रसाद भगीरथजी
कालकादेवीरोड़ रामवाड़ी
मुंबई.

Printed by Natverlal Itcharam Desai at
The "Gujarati" Printing Press, Sassoon Buildings, Circle, Fort, Bombay.

